JANNAT KI DO CHABIYAN (HINDI)

ज़बान व शर्मगाह की हिफ़ाज़त के फ़ज़ाइल और हिफ़ाज़त के तरीक़े पर मुश्तमिल तहरीर

जन्नत की दो चाबियां

- जन्नत किन चीज़ों से बनी है ? 14
- जन्नत की ने'मतें अहले जन्नत का लिबास कैसा होगा ? 17
- जन्नत की ज़मानत किस के लिये ? 28
- इन्सानी बदन में ज़बान की अहम्मिय्यत और कलाम की अक़्साम 30
- ख़ामोश रहने की आ़दत कैसे बनाएं ? 116
- ज़बान की हिफ़ाज़त के वाक़िआ़त 117
- शर्मगाह की हिफ़ाज़त के फ़ज़ाइल व वाक़िआ़त 143

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जेल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ॣ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

ज़बान व शर्मगाह की हिफ़ाज़त की ज़रूरत और

इस के त़रीक़े पर मुश्तमिल तह़रीर

जन्नत की दो चाबियां

-: पेशकश :-

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना देहली-6

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله   وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

नाम किताब : जन्नत की दो चाबियां

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

तबाअते अव्वल : शा'बानुल मुअज़्ज़म

नाशिर : मक्तबतुल मदीना देहली-6

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❀..... **अजमेर** : **मक्तबतुल मदीना,** 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385

❀..... **बरेली** : **मक्तबतुल मदीना,** दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994

❀..... **गुलबर्गा** : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503

❀..... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना,** अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

❀..... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045

❀..... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना,** 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212

❀..... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना,** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099

❀..... **अनंतनाग** : **मक्तबतुल मदीना,** मदनी तरबियत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438

❀..... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना,** वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861

❀..... **इन्दोर** : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम.पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

❀..... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नं. 13, जामिआ़ हज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783

❀..... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना,** ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *आशिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी त़हरीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज[1]

---

1 .....तादमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम । (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ''**दा'वते इस्लामी**'' की तमाम मजालिस ब शुमूल ''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

उ़न्वानात	सफ़हा नम्बर
पेशे लफ़्ज़	13
जन्नत का बयान	14
जन्नत किन चीज़ों से बनी है ?	14
जन्नत की ने'मतें	15
जन्नत कितनी बड़ी है ?	15
जन्नत के दरवाज़े	16
एक दरवाज़ा कितना बड़ा होगा ?	16
जन्नत के ख़ैमे	16
जन्नत के बाग़ात	16
अहले जन्नत का लिबास	17
जन्नतियों की उ़म्रें	17
जन्नतियों के बैठने का अन्दाज़	17
जन्नतियों की आपस में मुलाक़ात	18
जन्नतियों का खाना	18
खाना कैसे हज़्म होगा ?	19
जन्नतियों का मशरूब	19
जन्नत का मौसिम	20

www.dawateislami.net

जन्नत के दरख़्त	20
क्या जन्नत में बच्चे पैदा होंगे ?	21
जन्नत की हूरें	21
जन्नत की हूर कैसी होगी ?	21
जन्नत की नहरें	24
जन्नत में दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ	25
जन्नतियों के लिये एक ख़ुसूसी इन्आ़म	25
क्या जन्नतियों को मौत आएगी ?	26
जन्नत में नींद	26
क्या येह ने'मतें जन्नतियों के पास हमेशा रहेंगी ?	26
जन्नत की ज़मानत	28
दुख़ूले जन्नत की बिशारत	29
हम ज़मानत के ह़क़दार कैसे बनें ?	30
इन्सानी बदन में ज़बान की अहम्मिय्यत	30
हर हर लफ़्ज़ का ह़िसाब देना होगा	32
ज़बान की ह़िफ़ाज़त के बारे में अकाबिरीन के इरशादात	33
कलाम की अक़्साम	36
इन अक़्साम की तफ़्सील	37

www.dawateislami.net

नुक़्सान देह कलाम और इस की सूरतें	37
कलिमए कुफ़्र कह देना	37
झूट बोलना	40
झूटी गवाही देना	44
झूटे ख़्वाब घड़ कर सुनाना	45
हर सुनी सुनाई बात आगे बढ़ा देना	46
ग़ीबत करना और बोहतान लगाना	46
चुग़ली खाना	49
किसी पर तोहमत बांधना	51
ला'नत भेजना	52
गाली देना	53
फ़ोह़्श कलामी करना	54
त़ा'ना ज़नी करना	55
तक़्दीर में बह़्स करना	56
बिग़ैर इल्म के फ़तवा देना	57
मस्जिद में दुन्या की बातें करना	57
गाने गाना	59

www.dawateislami.net

नौहा करना	60
दूसरों के राज़ फ़ाश करना	61
बिला ह़ाजत सुवाल करना	62
दो रुख़ी इख़्तियार करना	64
नाजाइज़ सिफ़ारिश करना	65
बुराइयों की तरग़ीब देना	66
सख़्त कलामी करना	67
मुअ़ज़्ज़मे दीनी की गुस्ताख़ी करना	67
ख़ुत़बे के दौरान बोलना	68
तिलावते क़ुरआन सुनते वक़्त गुफ़्तगू करना	69
क़ज़ाए ह़ाजत करते वक़्त बातें करना	69
लोगों के बुरे नाम रखना	70
खाने में ऐ़ब निकालना	70
बिला वज्हे शरई मुसलमान को डराना धमकाना	71
एक दूसरे के कान में बात करना (जब कि तीसरा मौजूद हो)	73
अजनबिय्या से लज़्ज़त के साथ बातें करना	73
गुनाह के काम पर राहनुमाई करना	74
गुनाहों की इजाज़त देना	74

www.dawateislami.net

किसी का मज़ाक़ उड़ाना	75
औ़रत का बिला वज्ह त़लाक़ मांगना	76
एक साथ तीन त़लाक़ देना	76
शोहर और बीवी को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काना	77
इज़्हारे इ़बादत	78
झूटा वा'दा करना	79
एह़सान जताना	80
शिक्वा व शिकायत पर मुश्तमिल कलिमात बोलना	81
किसी के उ़यूब उछालना	82
नुजूमी वग़ैरा से फ़ाल पूछना	83
नफ़्अ़ बख़्श कलाम और इस की सूरतें	84
तिलावते क़ुरआन करना	84
ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करना	86
दुरूदे पाक पढ़ना	89
ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ना	93
शुक्रे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करना	94
इ़ल्मे दीन सिखाना	95

www.dawateislami.net

सालिह़ीन का ज़िक्रे ख़ैर करना	95
नेकी की दा'वत देना	96
खाने और पीने से पहले بِسۡمِ اللّٰہِ पढ़ना	97
खाने और पीने के बा'द ह़म्दे इलाही बजा लाना	97
किसी के उ़यूब की पर्दापोशी करना	98
मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ करवाना	98
ग़म ख़्वारी करना	100
किसी की इ़ज़्ज़त बचाना	101
सच बोलना	102
जाइज़ सिफ़ारिश करना	103
अज़ान देना	103
अज़ान व इक़ामत का जवाब देना	104
अज़ान के बा'द दुआ मांगना	106
दुआ मांगना	106
नर्म गुफ़्तगू करना	107
छींक का जवाब देना	108
अपने मुसलमान भाई के लिये दुआ करना	109
एक दूसरे को सलाम करना	109

www.dawateislami.net

बा'ज़ सूरतों में नफ़्अ़ बख़्श और बा'ज़ में नुक़्सान देह कलाम	111
फ़ुज़ूल कलाम	112
फ़ुज़ूल कलाम की मिसालें	113
तक़्लीले कलाम में आ़फ़िय्यत	113
ख़ामोशी के फ़ज़ाइल	114
ख़ामोश रहने की आ़दत कैसे बनाएं ?	116
ज़रूरी गुज़ारिश	117
ज़बान की हिफ़ाज़त के वाक़िआ़त	117
शर्मगाह की हिफ़ाज़त	121
शर्मगाह की हिफ़ाज़त के फ़ज़ाइल	121
क़ज़ाए शहवत के ह़लाल ज़राएअ़	122
निकाह़ का शरई हुक्म	123
शरई हुदूद की पासदारी	124
क़ज़ाए शहवत के ममनूअ़ ज़राएअ़	126
(1) **ज़िना**	126
ज़िना की शरई सज़ा	127
ज़िना की उख़रवी सज़ा	128
(2) **लिवात़त**	130

www.dawateislami.net

इस की मज़म्मत में अहादीसे मुक़द्दसा	131
इस की शरई सज़ा	131
फ़ाइल व मफ़ऊ़ल की उख़रवी सज़ा	133
(3) **जानवर से बद फ़े'ली**	134
इस की सज़ा	134
(4) **मुश्तज़नी**	134
शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي की तह़रीर	136
इन गुनाहों से बचने के लिये ह़िफ़ाज़ती तदाबीर	139
﴾1﴿ निगाह की ह़िफ़ाज़त	139
﴾2﴿ निकाह़ करना	141
﴾3﴿ औ़रतों से मेल जोल न रखे	141
﴾4﴿ अजनबी औ़रत के साथ तन्हाई न होने दे	141
﴾5﴿ अम्रदों के क़ुर्ब से बचे	142
शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त के वाक़िआ़त	143
आख़िरी गुज़ारिश	149
मआख़िज़ो मराजेअ़	151

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की **मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **शो'बए इस्लाही कुतुब** की मुरत्तब कर्दा एक और ख़ूब सूरत किताब **"जन्नत की दो चाबियां"** आप के सामने है। जिस में पहले पहल जन्नत की ने'मतों का बयान है, फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से अ़त़ाकर्दा एक बिशारत ज़िक्र की गई है। इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि हम इस ज़मानत के ह़क़दार किस त़रह़ बन सकते हैं ? ह़स्बे ज़रूरत शरई मसाइल भी ज़िक्र किये गए हैं। ज़बान और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त के बारे में एक मक़ाम पर इतनी तफ़्सील आप को ग़ालिबन किसी दूसरी किताब में न मिलेगी। **ذلک فضل اللّٰہ العظیم**

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब

(अल मदीनतुल इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

प्यारे इस्लामी भाइयो !

जन्नत वोह मक़ामे रह़मत है जिसे रब तआ़ला ने अपने इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों के लिये तख़्लीक़ फ़रमाया है। जन्नत का नाम ज़बान पर आते ही हमारे दिलो दिमाग़ पर सुरूर की एक अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है, जन्नत किस चीज़ से बनाई गई है ? उस का मौसिम कैसा होगा ? और दाख़िले जन्नत होने वाले ख़ुश नसीबों को कैसी कैसी ने'मतों से नवाज़ा जाएगा ? येह जानने के लिये ज़ैल की सुत़ूर का मुत़ालआ़ फ़रमाइये,.....

जन्नत किन चीज़ों से बनी है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें जन्नत और उस की ता'मीर से मुतअ़ल्लिक़ बताइये ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस की एक ईंट सोने की और एक चांदी की है और उस का गारा मुश्क का है और उस की कंकरियां मोती और याक़ूत की हैं और उस की मिट्टी ज़ा'फ़रान की है।"

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم ۲۵۳۴، ج ۴، ص ۲۳۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जन्नत की ज़मीन सफ़ेद है, उस का मैदान काफ़ूर की चट्टानों का है, उस के गिर्द रैत के टीलों की त़रह़ मुश्क की दीवारें हैं और उस में नहरें जारी हैं।"

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، رقم ۳۴، ج ۴، ص ۲۸۳)

www.dawateislami.net

जन्नत की ने'मतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये ऐसी ऐसी ने'मतें तय्यार कर रखी हैं कि जिन को न तो किसी आंख ने देखा, न उस की ख़ूबियों को किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर उन की माहिय्यत का ख़याल गुज़रा।" (مسلم، کتاب الجنۃ، رقم الحدیث ۲۸۲۴، ص ۱۵۱۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर जन्नत की चीज़ों में से नाख़ुन बराबर कोई चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो आस्मान व ज़मीन के अत़राफ़ व जवानिब उस से आरास्ता हो जाएं।"

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، رقم الحدیث ۲۵۴۷، ج ۴، ص ۲۴۱)

जन्नत कित्नी बड़ी है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत में सो मन्ज़िलें हैं और उन में से हर दो मन्ज़िलों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितना ज़मीनो आस्मान के दरमियान है।"

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۳۹، ج ۴، ص ۲۳۸)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत में सो मन्ज़िलें हैं, अगर उस के एक दरजे में तमाम जहानों के लोग भी जम्अ़ हो जाएं तो वोह सब को काफ़ी हो जाएगा।"

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۴۰، ج ۴، ص ۲۳۹)

www.dawateislami.net

जन्नत के दरवाज़े

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत के आठ दरवाज़े हैं।" (بخاری، کتاب بداء الخلق، رقم ۳۲۵۷، ج ۲، ص ۳۹۴)

एक दरवाज़ा कितना बड़ा होगा ?

हज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत (के दरवाज़ों) की चौखटों में से हर दो चौखट के दरमियान चालीस बरस का फ़ासिला है।" (مسلم، رقم الحدیث ۲۹۶۷، ص ۱۵۸۶)

जन्नत के ख़ैमे

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मोमिन के लिये जन्नत में खुक्कली मोती (या'नी वोह मोती जिस के दरमियान में ख़ाली जगह होती है) का एक ख़ैमा होगा जिस की चौड़ाई साठ मील है।"

(بخاری، کتاب بداء الخلق، رقم الحدیث ۳۲۴۳، ج ۲، ص ۳۹۱)

जन्नत के बाग़ात

जन्नती लोगों को ऐसे बाग़ात अ़ता किये जाएंगे जिन के नीचे नदयां बह रही होंगी, जैसा कि सूरतुल कह्फ़ में है :

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये

www.dawateislami.net

हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के नीचे नदयां बहें।" (پ۱۵،الکھف:۳۰،۳۱)

अहले जन्नत का लिबास

जन्नतियों को सोने के कंगन और सब्ज़ कपड़े पहनाए जाएंगे। जैसा कि क़ुरआने ह़कीम में इरशाद होता है :

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और सब्ज़ कपड़े करेब और क़नादीज़ के पहनेंगे। (پ۱۵،الکھف:۳۰،۳۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अगर अहले जन्नत के कपड़ों में से एक कपड़ा आज पहन लिया जाए तो उस की त़रफ़ देखने वाले की नज़र उचक ली जाए और लोगों की बीनाइयां इसे बरदाश्त न कर सकें। (موسوعة ابن ابی الدنيا، کتاب صفة الجنة،الحديث:۱۴۹، ج۶،ص ۳۵۱)

जन्नतियों की उ़म्रें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अहले जन्नत में से जो कोई छोटा या बूढ़ा मर जाएगा तो उसे जन्नत में तीस साल का बना दिया जाएगा।" (ترمذی کتاب صفۃ الجنۃ والنار،رقم ۲۵۷۱،ج۴،ص۲۵۴)

जन्नतियों के बैठने का अन्दाज़

जन्नती लोग तख़्त पर टेक लगा कर बैठा करेंगे, चुनान्चे, इरशाद होता है :

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَاعَلَى الْاَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ 0 وَحَسُنَتْ مُـرْتَـفَـقًـا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वहां तख़्तों पर तक्या लगाए क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत की क्या ही अच्छी आराम की जगह।'' (پ۱۵،الکہف:۳۱)

जन्नतियों की आपस में मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जन्नत में अहले जन्नत जम्अ़ होंगे, उन में आपस के रिश्तेदार भी होंगे और ग़ैर भी, फिर वोह एक दूसरे से तआ़रुफ़ ह़ासिल करेंगे।''

(موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة،الحدیث:۲۸،ج۶،ص۳۲۱)

जन्नतियों का खाना

जन्नतियों को खाने के लिये लज़ीज़ मेवाजात और गोश्त दिया जाएगा नीज़ उन के खाने के हर निवाले का मज़ा जुदागाना होगा, कुरआने मजीद में इरशाद होता है :

وَفَـاكِهَةٍ مِّـمَّـا يَتَخَيَّرُوْنَ 0 وَلَـحْـمِ طَيْـرٍ مِّـمَّايَشْتَهُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें। (پ۲۷،الواقعۃ:۲۰،۲۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि ''जन्नतियों में सब से निचले दरजे का जन्नती वोह शख़्स होगा जिस के साथ दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे और हर ख़ादिम के पास दो प्याले होंगे, जिन में से एक सोने का और दूसरा चांदी का होगा। हर प्याले में खाने की एक

www.dawateislami.net

ऐसी क़िस्म होगी, जो दूसरे में न होगी। वोह उस के आख़िर से भी इसी त़रह़ खाएगा जिस त़रह़ उस के शुरूअ़ से खाएगा और जो लज़्ज़त व ज़ाएक़ा उस के पहले हिस्से में पाएगा, दूसरे में उस के इ़लावा पाएगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة، فصل فی اکل اھل الجنة، رقم ۷۰، ج ۴ ص ۲۹۱)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''आदमी जन्नत में किसी परिन्दे की ख़्वाहिश करेगा तो वोह परिन्दा बुख़्ती ऊंट की त़रह़ उस के दस्तरख़्वान पर आ गिरेगा, न तो उसे धूआं पहुंचा होगा और न ही आग ने छुवा होगा। वोह शिकम सेर होने तक उस परिन्दे से खाएगा फिर वोह परिन्दा उड़ जाएगा।

(موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب صفة الجنة، الحدیث: ۱۲۳، ج ۶، ص ۳۴۶)

खाना कैसे हज़्म होगा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जन्नती, जन्नत में खाएंगे और पियेंगे लेकिन न थूकेंगे, न पेशाब व पाख़ाना करेंगे और न ही रींठ सींकेंगे।'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया : ''खाने का फ़ुज़ला क्या होगा ?'' हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''उन्हें (फ़रह़त बख़्श) डकार आएगी और ऐसा पसीना आएगा जो मुश्क की ख़ुश्बू की मिस्ल होगा और سبحان اللہ والحمد للہ कहना जन्नतियों के दिल में इस त़रह़ डाल दिया जाएगा, जैसे सांस है।'' (مسلم، کتاب الجنة، رقم ۲۸۳۵، ص ۱۵۲۰)

जन्नतियों का मश्रूब

जन्नतियों को पीने के लिये ऐसी पाकीज़ा शराब दी जाएगी जिस में नशा नहीं होगा, क़ुरआने मजीद में इरशाद होता है :

www.dawateislami.net

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ
وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के गिर्द लिये फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के कूज़े और आफ़्ताबे और जाम और आंखों के सामने बहती शराब कि उस से न उन्हें दर्दे सर हो और न होश में फ़र्क़ आए।''

(پ۲۷،سورۃ الواقعہ:۱۷،۱۸،۱۹)

जन्नत का मौसिम

जन्नत में दुन्या की मिस्ल गरमी या सर्दी की शिद्दत का सामना नहीं होगा बल्कि उस में इन्तिहाई ख़ुश गवार और मो'तदिल मौसिम होगा, क़ुरआने ह़कीम में है,

لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''न उस में धूप देखेंगे न ठिटर (सख़्त सर्दी)।'' (پ۲۹،سورۃ الدھر:۱۳)

जन्नत के दरख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जन्नत में हर दरख़्त का तना सोने का है।'' (ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۳۳، ج۴، ص۲۳۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे।''(پ۲۹،الدھر:۱۴) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि ''अहले जन्नत जन्नत के फल बैठे हुए और लेट कर खा सकेंगे।'' (الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، رقم ۶۱، ج۴، ص۱۱)

www.dawateislami.net

क्या जन्नत में बच्चे पैदा होंगे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "मोमिन जब जन्नत में औलाद की ख़्वाहिश करेगा तो उस का ह़म्ल, पैदाइश और बड़ा होना पल भर में हो जाएगा।" (ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۷۲، ج ۴، ص ۲۵۴)

जन्नत की हूरें

जन्नतियों को हूरें दी जाएंगी जैसा कि इरशाद होता है :

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَامَاتُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ هٰذَالَرِزْقُنَامَالَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उन (या'नी जन्नतियों) के पास वोह बीबियां हैं कि अपने शोहर के सिवा और की त़रफ़ आंख नहीं उठातीं एक उ़म्र की येह है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ह़िसाब के दिन बेशक येह हमारा रिज़्क़ है कभी ख़त्म न होगा।" (پ۲۳ سورۃ ص: ۵۲، ۵۳، ۵۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से अदना जन्नती को अस्सी हज़ार ख़ादिम और 72 हूरें दी जाएंगी।"

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۷۱، ج ۴، ص ۲۵۴)

जन्नत की हूर कैसी होगी ?

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर कोई जन्नती हूर ज़मीन की त़रफ़ झांके तो आस्मान से ज़मीन तक रोशनी हो जाए और सारी फ़ज़ा ज़मीन से आस्मान तक ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र हो जाए और उस

www.dawateislami.net

के सर की ओढ़नी (या'नी दूपट्टा) दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۸۴، ج ۴، ص ۲۹۵)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर जन्नतियों में से कोई शख़्स (दुन्या की त़रफ़) झांके और उस के कंगन ज़ाहिर हो जाएं तो उस की रोशनी सूरज की रोशनी को मिटा दे जैसे कि सितारों की रोशनी को सूरज मिटा देता है।"

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۴۷، ج ۴، ص ۲۴۱)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक हूरों में से हर हूर की पिन्डली की सफ़ेदी सत्तर हुल्लों के बाहर से नज़र आती है बल्कि उस की पिन्डली का मग़्ज़ तक नज़र आता है इस की वज्ह येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "गोया वोह ला'ल और याक़ूत और मूंगा हैं। (الرحمٰن: ۵۸)" और याक़ूत एक ऐसा पथ्थर है कि अगर तुम उस में धागा डालो फिर उसे बन्द कर दो फिर भी उस के बाहर से तुम्हें वोह धागा नज़र आएगा।" (ترمذی، باب فی صفۃ نساء اھل الجنۃ، رقم ۲۵۴۱، ج ۴، ص ۲۳۹)

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे बताया : "जब कोई आदमी किसी हूर के पास जाएगा तो वोह उस से मुआ़नक़ा और मुसाफ़ह़ा कर के उस का इस्तिक़्बाल करेगी।" फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "फिर तुम उस की जिन उंगलियों से चाहो पकड़ो, अगर उस की उंगली का एक पोरा दुन्या पर ज़ाहिर हो जाए तो उस के सामने सूरज और चांद की रोशनी मांद

www.dawateislami.net

पड़ जाए और अगर उस के बालों की एक लट ज़ाहिर हो जाए तो मशरिक़ो मग़रिब की हर चीज़ उस की पाकीज़ा ख़ुश्बू से भर जाए। जन्नती शख़्स अपनी मस्हरी पर बैठा होगा अचानक उस के सर पर एक नूर ज़ाहिर होगा वोह गुमान करेगा कि शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ पर निगाहे करम फ़रमा रहा है लेकिन जब वोह उस नूर को देखेगा तो वोह एक हूर होगी जो येह कह रही होगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! क्या तुम्हारे पास हमारे लिये वक़्त नहीं है ?" वोह पूछेगा : "तुम कौन हो ?" तो वोह कहेगी : "मैं उन हूरों में से हूं जिन के बारे में **अल्लाह** तबारक व तआला ने फ़रमाया है وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : "और हमारे पास इस से भी ज़ियादा है। (ق:٣٥)" फिर वोह उस की त़रफ़ रुख़ करेगा तो देखेगा कि उस के पास जो हुस्नो जमाल है वोह पहले वाली हूरों में नहीं।

फिर जब वोह उस हूर के साथ अपनी मस्हरी पर बैठा होगा तो उसे एक और हूर पुकारेगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! क्या तुम्हारे पास हमारे लिये वक़्त नहीं है ?" वोह पूछेगा : "तुम कौन हो ? वोह कहेगी : "मैं उन हूरों में से हूं जिन के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठंडक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का। (پ٢١، سورة السجدہ:١٧)" फिर वोह इसी त़रह अपनी बीवियों में से एक हूर से दूसरी की त़रफ़ मुन्तक़िल होता रहेगा।" (الترغیب الترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، رقم الحدیث ٩٤، ج٤، ص ٢٩٧)

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "अगर हूर अपनी हथेली ज़मीनो आस्मान के दरमियान ज़ाहिर कर दे तो उस के हुस्न की वज्ह से मख़्लूक़ फ़ित्ने में पड़ जाए और अगर वोह

अपनी ओढ़नी ज़ाहिर कर दे तो सूरज उस के हुस्न की वज्ह से धूप में रखे हुए चराग़ की त़रह़ हो जाए जिस की कोई रोशनी नहीं होती और अगर वोह अपना चेहरा ज़ाहिर कर दे तो ज़मीनो आस्मान की हर चीज़ को रोशन कर दे।" (الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، رقم ۹۷، ج ۴، ص ۲۹۸)

(6) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अगर जन्नती औ़रतों में से कोई औ़रत सात समुन्दरों में अपना थूक डाल दे तो वोह सारे समुन्दर शहद से ज़ियादा मीठे हो जाएं।"

(الترغیب والترھیب کتاب صفۃ الجنۃ والنار، رقم ۹۸، ج ۴، ص ۲۹۷)

(7) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बैठे हुए थे कि आप ने फ़रमाया : "अगर आस्मानी ह़ूर के हाथ की सफ़ेदी और उस की अंगूठियां ज़मीनो आस्मान के दरमियान लटका दी जाएं तो उस की वज्ह से ज़मीन इस त़रह़ रोशन हो जाए जिस त़रह़ सूरज दुन्या वालों के लिये रोशन होता है।" फिर फ़रमाया : "येह तो मैं ने उस के हाथ का तज़किरा किया है उस के चेहरे की सफ़ेदी और हुस्नो जमाल और उस के ताज के याक़ूत व ज़बर जद के हुस्न का क्या आ़लम होगा !" (الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ،، رقم ۱۰۰، ج ۴، ص ۲۹۹)

जन्नत की नह्रें

जन्नत में दूध, पानी और शराब की नह्रें होंगी, जैसा कि सूरए मुह़म्मद में इरशाद होता है :

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ فِیْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَیْرِ اٰسِنٍ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ یَتَغَیَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَ لَهُمْ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''अह्वाल उस जन्नत का जिस का वा'दा परहेज़गारों से है उस में ऐसी पानी की नह्रें हैं जो कभी न बिगड़े और ऐसे दूध की नह्रें हैं जिस का मज़ा न बदला और ऐसी शराब की नह्रें हैं जिस के पीने में लज़्ज़त है और ऐसी शहद की नह्रें हैं जो साफ़ किया गया। और उन के लिये उस में हर क़िस्म के फल हैं।'' (پ۲۶،سورۂ محمد:۱۵)

जन्नत में दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक सब से बड़े मर्तबे का जन्नती वोह शख़्स होगा जो सुब्हो शाम दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होगा इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''कुछ मुंह उस दिन तरोताज़ा होंगे अपने रब को देखते।'' (پ۲۹،القیٰمۃ:۲۲،۲۳)

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم الحدیث ۲۵۶۲، ج۴، ص۲۴۹)

जन्नतियों के लिये एक ख़ुसूसी इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अहले जन्नत से फ़रमाएगा : ''ऐ जन्नतियो !'' तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम ह़ाज़िर हैं और भलाई तो तेरे ही दस्ते क़ुदरत में है।'' **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : ''क्या तुम राज़ी हो ?'' तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम क्यूं न राज़ी हों कि तू ने हमें वोह कुछ अ़ता फ़रमाया जो तू ने अपनी मख़्लूक़ में से किसी को अ़ता नहीं फ़रमाया।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''मैं तुम्हें इस से भी

www.dawateislami.net

अफ़्ज़ल ने'मत न अ़ता फ़रमाऊं ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "इस से अफ़्ज़ल शै कौन सी होगी ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मैं तुम्हें अपनी रिज़ा सोंपता हूं लिहाज़ा ! आज के बा'द कभी तुम से नाराज़ न होऊंगा।" (ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم ۲۵۶۴، ج ۴، ص ۲۵۰)

क्या जन्नतियों को मौत आएगी ?

जन्नतियों को कभी मौत न आएगी, जैसा कि सूरए दुख़्ख़ान में है : **لَا یَذُوْقُوْنَ فِیْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى**

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "इस में पहली मौत के सिवा फिर मौत न चखेंगे।" (پ۲۵، سورۃ الدخان: ۵۶)

जन्नत में नींद

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "क्या अहले जन्नत सोया करेंगे ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नींद मौत की जिन्स से है और जन्नतियों को मौत नहीं आएगी।" (مشکوۃ المصابیح، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم ۵۶۵۴، ج ۳، ص ۲۳۰)

क्या येह ने'मतें जन्नतियों के पास हमेशा रहेंगी ?

जन्नतियों को येह ने'मतें हमेशा के लिये दी जाएंगी, जैसा कि सूरए तौबा में है :

یُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِیْهَا نَعِیْمٌ مُّقِیْمٌ ۝ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِیْمٌ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन का रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रह़मत और अपनी रिज़ा की और उन बाग़ों की जिन में उन्हें दाइमी

www.dawateislami.net

ने'मत है हमेशा हमेशा उन में रहेंगे बेशक **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है।" (پ۱۰سورۃالتوبہ:۲۱،۲۲)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि पुकारने वाला पुकार कर कहेगा : "(ऐ जन्नत वालो !) तुम तन्दुरुस्त रहोगे कभी बीमार न होगे। तुम ज़िन्दा रहोगे कभी न मरोगे, तुम जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे, तुम आराम से रहोगे कभी मेह़नत व मशक़्क़त न उठाओगे।"

(مسلم، رقم الحدیث ۲۸۳۷، ص۱۵۲۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

गुज़श्ता सुतूर का मुत़ालआ़ करने के बा'द यक़ीनन हमारा दिल भी येह चाहेगा कि "काश ! हमें भी उस मक़ामे रह़मत में दाख़िला नसीब हो जाए, ऐ काश ! हमें भी उस के नज़्ज़ारे देखने को मिल जाएं।" इस ख़्वाब की अ़मली ता'बीर के लिये हमें चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी के समाजी, माली, घरेलू, तिजारती बल्कि हर हर मुआ़मले में नफ़्सो शैत़ान की पैरवी की बजाए क़ुरआनो सुन्नत को अपना राहनुमा बनाएं और इस ज़िन्दगी को रह़मान عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में बसर करते हुए नेकियों का ख़ज़ाना इकट्ठा करें।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यूं तो हर नेक अ़मल की जज़ा जन्नत को क़रार दिया गया है लेकिन कुछ आ'माल ऐसे हैं जिन के आ़मिलीन को रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुसूसी त़ौर पर दुख़ूले जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई है। इसी नौइ़य्यत की एक बिशारत देते हुए मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

“जो मुझे दोनों जबड़ों और दोनों टांगों के दरमियान वाली चीज़ की ह़िफ़ाज़त की ज़मानत दे, मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।” (بخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، رقم:۶۴۷۴، ج۴، ص۲۴۰)

वज़ाहत

इमाम ह़ाफ़िज़ शिहाबुद्दीन عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़त्हुल बारी शर्हे सह़ीह़ बुख़ारी में इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं :

“दो जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ से मुराद **ज़बान** और टांगों के दरमियान वाली शै से मुराद **शर्मगाह** है। और ह़िफ़ाज़त की ज़मानत देने का मत़लब येह है कि इन्सान इन्हें रब तआ़ला की ना फ़रमानी वाले कामों से बचाने का पुख़्ता अ़हद करे मसलन ज़बान से वोही कलाम करे जो ज़रूरी हो और बेकार बातों से बचे, इसी त़रह़ शर्मगाह को ह़लाल जगह इस्ति'माल करे और इसे ह़राम में मुब्तला होने से बचाए। सय्यिदुना इब्ने बत्ताल عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस इस बात पर दलालत करती है कि इन्सान के लिये दुन्या की सब से बड़ी आज़माइश उस की ज़बान और शर्मगाह है। लिहाज़ा ! जो इन दोनों के शर से बचने में कामयाब हो गया वोह बहुत बड़े शर से बच गया।”

(فتح الباری، کتاب الرقاق، ج۱۲، ص۲۶۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ज़बान और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त के नतीजे में दुख़ूले जन्नत की बिशारत दीगर अह़ादीस में भी दी गई है, चुनान्चे,

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दो जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ या'नी ज़बान और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ या'नी शर्मगाह के शर से बचा ले, वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (ترمذی، کتاب الزھد، باب حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۷، ج ۴، ص ۱۸۴)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने अपने दो जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ या'नी ज़बान और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ या'नी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(طبرانی کبیر، مسند ابو رافع، رقم ۹۱۹، ج ۱، ص ۳۱۱)

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अमल के बारे में सुवाल किया गया जो लोगों को कसरत से जन्नत में दाख़िल करेगा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना और हुस्ने अख़्लाक़।" फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कसरत से जहन्नम में दाख़िल करने वाली चीज़ के बारे में सुवाल किया गया तो आप ने फ़रमाया कि "मुंह और शर्मगाह।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، باب حسن الخلق، رقم ۴۷۶، ج ۱، ص ۳۴۹)

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि कौन सी चीज़ें लोगों को कसरत से जन्नत में दाख़िल करेंगी ? वोह अल्लाह तआ़ला से डरना और ख़ुश अख़्लाक़ी है, और क्या तुम जानते हो कि कौन सी चीज़ें लोगों को कसरत से जहन्नम में दाख़िल करेंगी ? वोह मुंह (या'नी ज़बान) और शर्मगाह हैं।"

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، رقم ۴۲۴۶، ج ۴، ص ۴۸۹)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब से दी गई जन्नत की ज़मानत का हक़दार बनने के लिये हमें अपनी ज़बान और शर्मगाह की हिफ़ाज़त की ज़मानत देना होगी और येह ज़मानत फ़राहम करने के लिये सब से पहले हमें इस पहलू पर ग़ौर करना होगा कि फ़िल वक़्त हमारे इन आ'ज़ा की क्या हालत है ? क्या हमारी ज़बान और शर्मगाह इरतिकाबे गुनाह से महफ़ूज़ हैं या नहीं ? अगर जवाब हां में आए तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में शुक्र बजा लाने के साथ साथ दुआए इस्तिक़ामत भी कीजिये और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता जवाब नफ़ी में आए तो बा'दे तौबा आ'ज़ाए मज़कूरा की हिफ़ाज़त के लिये कमर बस्ता हो जाइये। और येह उसी वक़्त मुमकिन है जब हमें येह इल्म हो कि किस मक़ाम पर ज़बान का इस्ति'माल बाइसे हलाकत है और कब इन्सान शर्मगाह की वज्ह से गिरिफ़्तारे इस्यां होता है ? आने वाली सुतूर में इसी सुवाल का जवाब मुहय्या करने की कोशिश की गई है, जिन में पहले ज़बान के इस्ति'माल से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सील मज़कूर है और इस के बा'द शर्मगाह के गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात फ़राहम की गई हैं।

इन्सानी बदन में ज़बान की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इस में कोई शक नहीं कि ज़बान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ताकर्दा ने'मतों में से एक अ़ज़ीम ने'मत है। इस ज़बान के ज़रीए नेकियां भी कमाई जा सकती हैं और येही ज़बान हमें जहन्नम की गहराइयों में भी पहुंचा सकती है। अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना ज़बान की हिफ़ाज़त का तसव्वुर तक़रीबन मफ़्क़ूद हो चुका है, हमें इस चीज़ का एह़सास ही नहीं है कि गोश्त का येह छोटा सा टुकड़ा जो दो होंटों और दो जबड़ों के पहरे

www.dawateislami.net

में है, किस त़रह़ हमारे पूरे वुजूद को दुन्यवी व उख़रवी मसाइब में मुब्तला करवा सकता है। जैसा कि....

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि "बन्दा ज़बान से भलाई का एक कलिमा निकालता है ह़ालांकि वोह उस की क़द्रो क़ीमत नहीं जानता तो उस के बाइस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक अपनी रिज़ामन्दी लिख देता है, और बेशक एक बन्दा अपनी ज़बान से एक बुरा कलिमा निकालता है और वोह उस की ह़क़ीक़त नहीं जानता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की बिना पर उस के लिये क़ियामत तक की अपनी नाराज़ी लिख देता है।" (ترمذی، کتاب الزھد، باب فی قلۃ الکلام، ج۴، ص۱۴۳)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब आदमी सुब्ह़ करता है तो उस के जिस्म के तमाम आ'ज़ा ज़बान से कहते हैं : "ऐ ज़बान ! तू हमारे मुआ़मले में अल्लाह से डर क्यूंकि हम तेरे साथ और ताबेअ़ हैं अगर तू सीधी रही तो हम सीधे रहेंगे और अगर टेढ़ी हुई तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे।" (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، رقم:۲۴۱۵، ج۴، ص۱۸۳)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इब्ने आदम की अक्सर ख़त़ाएं उस की ज़बान से सरज़द होती हैं।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، رقم:۳۳۰، ج۳، ص۳۴۲)

(4) मन्क़ूल है कि जब ज़बान जिस्म के दीगर आ'ज़ा से पूछती है कि : "तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" तो आ'ज़ा जवाब देते हैं : "हम ख़ैरिय्यत से हैं अगर तू हमें छोड़े रखे।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

www.dawateislami.net

(5) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़मीन पर ज़बान से ज़ियादा क़ैदी बनाने के लाइक़ कोई शै नहीं ।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم:۱۳، ج۳، ص۳۳۷)

(6) अकाबिरीन फ़रमाते हैं कि "ज़बान एक दरिन्दे की मानिन्द है अगर तुम इसे बांध कर नहीं रखोगे तो येह तुम्हारी दुश्मन बन जाएगी और तुम्हें नुक़्सान पहुंचाएगी ।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۶)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

नताइज से बे परवाह हो कर बिला तकान बोलते चले जाना आज हमारी आ़दत बन चुका है मगर याद रखिये कि हमारी ज़बान से निकला हुवा एक एक लफ़्ज़ नोट किया जा रहा है, जैसा कि क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में है :

مَا یَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَیْهِ رَقِیْبٌ عَتِیْدٌ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुह़ाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो ।" (پ۲۶، قٓ: ۱۸)

और मैदाने महशर के वह्शतनाक माह़ोल में हमें इस तह़रीर शुदा नामए आ'माल को पढ़ कर सुनाना पड़ेगा, जैसा कि इरशाद होता है :

وَنُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उस के लिये क़ियामत के दिन एक नविश्ता (या'नी नामए आ'माल) निकालेंगे जिसे खुला हुवा पाएगा, फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना ह़िसाब करने को बहुत है ।" (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۳، ۱۴)

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा तसव्वुर तो कीजिये कि मैदाने महशर की ख़ौफ़नाक फ़ज़ा में कि जब प्यास की शिद्दत से दम निकला जा रहा हो, भूक से कमर टूट रही हो, जहन्नम की हौलनाक सज़ाओं का सोच कर कलेजा मुंह को आ रहा हो फिर वहां हमारे मुतअ़ल्लिक़ीन भी मौजूद हों तो मुग़ल्लज़ात व फ़ुज़ूलियात से भरपूर नामए आ'माल को पढ़ना कितना दुश्वार काम है ?.....

लिहाज़ा ! मैदाने महशर में इस मुमकिना परेशानी से बचने के लिये हमें अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त से ज़र्रा बराबर भी ग़फ़लत नहीं करनी चाहिये। हमारे अकाबिरीन ने भी हमें येही तल्क़ीन फ़रमाई है, चुनान्चे,

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से दरयाफ़्त फ़रमाया : "अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल कौन सा है ?" सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से किसी ने भी जवाब नहीं दिया और ख़ामोश रहे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया : "ज़बान की हिफ़ाज़त।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب وغیرہ، رقم: ۱۰، ج۳، ص۳۳۶)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! सब से अफ़्ज़ल मुसलमान कौन है ?" फ़रमाया : "जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।" (بخاری، کتاب الایمان، باب ای الاسلام افضل، رقم ۱۱، ج۱، ص۱۶)

(3) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है ?" इरशाद फ़रमाया : "वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करना।" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर कौन सा ?" फ़रमाया : "वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।" मैं ने अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

"फिर कौन सा ?" फ़रमाया : "तुम्हारी ज़बान से मुसलमानों का महफ़ूज़ रहना।" (طبرانی کبیر، مسند ابن مسعود، رقم ۹۸۰۲، ج ۱۰، ص ۱۹)

(4) हज़रते सय्यिदुना हारिस बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! मुझे कोई अ़मल बताइये जिसे मैं अपने आप पर लाज़िम कर लूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : "इस पर क़ाबू पा लो।" (طبرانی کبیر، مسند حارث بن ہشام، رقم: ۳۳۴۹، ج ۳، ص ۲۶۰)

(5) हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! मुझे ऐसा काम बताएं जो मेरे लिये ज़रीअ़ए नजात बन जाए ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कहो, मेरा रब **अल्लाह** है और फिर इस पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप सब से ज़ियादा मुझ पर किस चीज़ का ख़ौफ़ करते हैं ?" आप ने अपनी ज़बाने अक़्दस की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : "इस का।" (ترمذی، کتاب الزھد، رقم: ۲۴۱۸، ج ۴، ص ۱۸۴)

(6) हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "अपनी ज़बान अपने क़ाबू में रखो, तुम्हारा घर तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और अपने गुनाह पर रो लिया करो।" (ترمذی، کتاب الزھد، باب حفظ اللسان، رقم: ۲۴۱۴، ج ۴، ص ۱۸۲)

(7) हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** के ज़िक्र के इ़लावा कलाम में कसरत न करो क्यूंकि **अल्लाह** के ज़िक्र के इ़लावा कसरत से कलाम दिल को सख़्त कर देता है और **अल्लाह** से सब से ज़ियादा दूर सख़्त दिलवाला होता है।"

(ترمذی، کتاب الفتن، رقم: ۲۴۱۹، ج ۴، ص ۱۸۴)

www.dawateislami.net

(8) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रहमते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपना गुस्सा पी लेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से अपना अ़ज़ाब दूर करेगा और जो अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के उ़यूब की पर्दापोशी फ़रमाएगा।" (مجمع الزوائد کتاب الادب رقم ۱۲۹۸۳ ج ۸ ص ۱۳۲)

(9) हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "कलाम करना दवा की मिस्ल है, अगर तुम इस का क़लील इस्ति'माल करोगे तो येह तुम्हें फ़ाएदा देगा और अगर इस के इस्ति'माल में ज़ियादती करोगे तो तुम्हें नुक़्सान पहुंचाएगा।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج ۱، ص ۱۴۷)

(10) हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन साइ़दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना अक्सम बिन सैफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आपस में मुलाक़ात हुई तो एक ने दूसरे से पूछा : "आप का क्या ख़याल है कि किसी आदमी में कितने उ़यूब हो सकते हैं ?" दूसरे ने जवाब दिया : "येह उ़यूब तो बे शुमार हैं लेकिन एक ख़ूबी ऐसी है कि इन्सान इस की बिना पर अपने तमाम उ़यूब को छुपा सकता है।" उन्हों ने पूछा : "वोह कौन सी ?" जवाब दिया : "ज़बान की हिफ़ाज़त करना।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج ۱، ص ۱۴۶)

(11) हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने रफ़ीक़ हज़रते रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "ऐ रबीअ़ ! (कभी) फ़ुज़ूल कलाम मत करना क्यूंकि जब तुम बात कह चुकोगे तो वोह तुम पर ह़ाकिम बन बैठेगी और तुम उस के ग़ुलाम हो जाओगे।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج ۱، ص ۱۴۶)

(12) एक ह़कीम का क़ौल है : "जब तुझे अपना बोलना उ़ज्ब में मुब्तला कर दे तो ख़ामोश हो जा, और जब ख़ामोशी बाइ़से उ़ज्ब बने तो बोलना शुरूअ़ कर दे।" (المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج ۱، ص ۱۴۷)

www.dawateislami.net

(13) ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को नसीह़त फ़रमाई : "ऐ बेटे ! जब लोग अपने हुस्ने कलाम पर फ़ख़्र करने लगें तो तुम अपनी ह़सीन ख़ामोशी पर ही फ़ख़्र करना ।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

कलाम की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ज़बान की कामिल ह़िफ़ाज़त उसी वक़्त मुमकिन है जब हमें इस से सादिर होने वाले कलाम की अक़्साम और इन के अह़काम मा'लूम हों । याद रखिये ! हर कलाम की बुन्यादी तौ़र पर चार अक़्साम होती हैं :

(1) वोह कलाम जिस में नुक़्सान ही नुक़्सान है, जैसे किसी को गाली देना, फ़ोह़्श कलामी करना वग़ैरा.....

(2) वोह कलाम जिस में नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ हो मसलन फ़िक़्ही मसाइल की रिआ़यत करते हुए तिलावते क़ुरआन करना, दुरूदे पाक पढ़ना, ना'त पढ़ना, ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करना, किसी को नेकी की दा'वत देना वग़ैरा.....

(3) वोह कलाम जो बा'ज़ सूरतों में नफ़्अ़ बख़्श है और बा'ज़ सूरतों में नुक़्सान देह जैसे किसी मुक़्तदा (मसलन पीर या उस्ताज़) का अपनी नेकियों को इस निय्यत से ज़ाहिर करना कि लोग उस की पैरवी में उन नेकियों को अपनाने की तरफ़ राग़िब होंगे लेकिन अगर अपनी वाह वाह करवाने की निय्यत से नेकियां ज़ाहिर कीं तो येह कलाम उसे नुक़्सान पहुंचाएगा ।

(4) वोह कलाम जिस में न तो कोई नफ़्अ़ हो और न ही नुक़्सान, इसे फ़ुज़ूल गोई भी कहा जाता है मसलन मौसिम वग़ैरा पर तबसेरा करना मसलन आज बड़ी गर्मी है, या ऐसे सुवालात करना जिस से न कोई दुन्यावी फ़ाएदा ह़ासिल हो और न ही उख़्रवी । मसलन आप

www.dawateislami.net

की मोटर साईकल कौन से मॉडल की है? (जब कि इस सुवाल का कोई मक़्सद न हो।)

इन अक़्साम की तफ़्सील

(1) नुक़्सान देह कलाम

इस क़िस्म का कलाम करना सरासर बाइसे हलाकत है लिहाज़ा ! इस से बचना बेहद ज़रूरी है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोग तीन क़िस्म के हैं, एक ग़नीमत हासिल करने वाला, दूसरा महफ़ूज़ रहने वाला और तीसरा हलाक होने वाला, ग़नीमत हासिल करने वाला वोह है जो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करता है, महफ़ूज़ रहने वाला वोह शख़्स है जो ख़ामोश रहता है और हलाक होने वाला वोह शख़्स है जो बातिल में पड़ता है।"

(شعب الایمان، باب فی الاعراض عن اللغو، رقم ۱۰۸۱۵، ج۷، ص۴۱۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नुक़्सान देह कलाम की सूरतें बहुत ज़ियादा हैं, इख़्तिसार के पेशे नज़र यहां मुन्तख़ब अक़्साम की वज़ाहत करने पर इक्तिफ़ा किया गया है।

पहली क़िस्म **कलिमए कुफ़्र कह देना**

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक मुसलमान के लिये सब से क़ीमती मताअ़ उस का ईमान है और ईमान का मत़लब येह है कि सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करे जिन का तअ़ल्लुक़ ज़रूरिय्याते दीन से हो। (البحر الرائق، کتاب السیر، باب احکام المرتدین، ج۵، ص۲۰۲)

और ज़रूरिय्याते दीन से मुराद दीन के वोह मसाइल हैं जिन्हें हर ख़ासो आ़म जानता हो मसलन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक होना, अम्बिया की नुबुव्वत, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, जन्नत व दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, हिसाबो किताब होना वग़ैरहा। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, स. 48)

www.dawateislami.net

येह भी याद रखिये कि किसी एक भी ज़रूरते दीनी का इन्कार करना कुफ़्र होता है अगर्चे बक़िय्या ज़रूरिय्याते दीनिया का इक़रार किया जाए। (البحر الرائق، ج۵، ص۲۰۲)

चुनान्चे, बिला इकराहे शरई[1], होशो हवास में बिग़ैर ख़ता के ज़बान से किसी ज़रूरते दीनी का इन्कार करना या ऐसे अल्फ़ाज़ बोलना जिस से किसी ज़रूरते दीनी का इन्कार निकलता हो कुफ़्र है। मसलन येह कहना कि "अल्लाह होता तो मेरी दुआ ज़रूर सुनता।" या किसी नुक़्सान पर येह कहना "अल्लाह ने येह बड़ा ज़ुल्म किया" कुफ़्र है।

लेकिन याद रहे कि अगर आप के सामने कोई शख़्स (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ) ऐसा कलिमा कह डाले जिसे उ़लमाए किराम ने कुफ़्र क़रार दिया हो तो उस पर फ़ौरी तौ़र पर "कुफ़्र का फ़तवा" लगाने से भी परहेज़ करें कि इसी में आ़फ़िय्यत है क्यूंकि हो सकता है कि आप के समझने में ग़लती हुई हो और वोह कलिमए कुफ़्र न हो या फिर वोह कलिमा तो कुफ़्र हो लेकिन उस के कहने वाले को काफ़िर नहीं कहा जाता, इस लिये राहे सलामत येही है कि ऐसा शख़्स एह़तियात़न तजदीदे ईमान करने के बा'द फ़ौरन किसी मुफ़्ती साहिब से राबित़ा करे।
(इस बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की शाएअ़ कर्दा किताब "ईमान की ह़िफ़ाज़त" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं)

---

1 .....इकराहे शरई से मुराद येह है कि किसी ने कलिमए कुफ़्र कहने पर इस त़रह़ मजबूर किया कि अगर तुम ने येह कलिमा न कहा तो मैं तुम्हें मार डालूंगा या जिस्म का फ़ुलां ह़िस्सा काट डालूंगा और येह शख़्स जानता है कि येह अपनी धमकी पर अ़मल कर गुज़ेरेगा तो ऐसी ह़ालत में इसे रुख़्सत दी गई है जब कि दिल में इत़मीनाने ईमान मौजूद हो, हां अगर तोरिया कर सकता है तो तोरिया ही करे मसलन किसी को مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुरा कहने पर मजबूर किया गया तो वोह अपने दिल में किसी दूसरे मुह़म्मद नामी शख़्स का ख़याल लाए और उसे बुरा कह ले, नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तसव्वुर हरगिज़ न करे, और अगर तोरिया करना जानता था और इस पर क़ादिर भी था लेकिन न किया तो उस पर हुक्मे कुफ़्र है। (माख़ूज़ अज़ शर्हे फ़िक़्हे अक्बर, स. 275, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 15, मस्अला नम्बर 16, स. 466)

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई शख़्स कलिमए कुफ़्र बकने के सबब काफ़िर हो जाए तो उस का एक नुक़्सान तो येह होगा कि उस की पिछली तमाम नेकियां बरबाद हो जाएंगी जो तौबा के बा'द भी वापस नहीं मिलेंगी जैसा कि कुरआने पाक में इरशाद होता है :

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जो मुसलमान से काफ़िर हो उस का किया धरा सब अकारत गया ।" (پ٦،المائدة:٥)

और अगर किसी बद नसीब को तौबा की तौफ़ीक़ न मिली और ह़ालते कुफ़्र में ही उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उसे हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में डाल दिया जाएगा जैसा कि सूरए बक़रह में इरशाद होता है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना । (پ٢،البقرة:٢١٧)

और जहन्नम का हल्के से हल्का अ़ज़ाब भी बरदाश्त करने की सकत इन्सान के नातुवां बदन में यक़ीनन नहीं है क्यूंकि इस का हल्का तरीन अ़ज़ाब जिस शख़्स को होगा उसे आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस से उस का दिमाग़ हांडी की त़रह़ खोलने लग जाएगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "दोज़ख़ियों में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा ।" (صحیح البخاری،باب صفۃ الجنۃ والنار،رقم الحدیث ٦٥٦١،ص١١٦٥)

लिहाज़ा ! हमें चाहिये कि पहली फ़ुरसत में कलिमाते कुफ़्रिय्या के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करें फिर अगर साबिक़ा ज़िन्दगी में हम से कोई कलिमए कुफ़्र सादिर हो गया हो तो फ़ौरन तौबा कर के तजदीदे ईमान करें और आयिन्दा के लिये अपनी ज़बान को ऐसे कलिमात की अदाएगी से बचाएं।

मदीना : इस के लिये अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के रिसाले "अठ्ठाईस कलिमाते कुफ़्र" और मक्तबतुल मदीना की शाएअ् कर्दा किताब "ईमान की हि़फ़ाज़त" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

दूसरी क़िस्म झूट बोलना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! झूट बोलना गुनाहे कबीरा है और इस से मुराद येह है कि कोई बात वाक़ेअ् (ह़क़ीक़त) के बर अ़क्स कही जाए। मसलन किसी ने पूछा : क्या आप दोपहर में सोए थे ? और आप ने न सोने के बा वुजूद जवाब दिया : "जी हां, सोया था।" (حدیقہ ندیہ،ج۲،ص۴۰۰)

झूट से मन्अ् करते हुए **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : وَاجۡتَنِبُوۡا قَوۡلَ الزُّوۡرِ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बचो झूटी बात से एक **अल्लाह** के हो कर।" (پ۱۷،الحج:۳۰،۳۱)

मुमानअ़त के बा वुजूद ज़बान की इस आफ़त से न बचने वालों को अ़ज़ाब की वईद सुनाते हुए इरशाद फ़रमाया : وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌۢ بِمَا كَانُوۡا يَكۡذِبُوۡنَ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है बदला उन के झूट का।" (پ۱،البقرۃ:۱۰)

जब कि सरकारे मदीना सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने देखा कि गोया एक शख़्स मेरे पास आया और मुझ से कहा : "उठिये।" मैं उठ कर उस के साथ चल दिया। अचानक मैं ने देखा कि दो आदमी थे उन में से एक खड़ा हुवा था जब कि दूसरा बैठा हुवा था, जो खड़ा था उस के हाथ में एक लकड़ी थी

www.dawateislami.net

जिस के आगे लोहा लगा हुवा था, वोह उसे बैठे हुए आदमी की एक बाछ में डाल कर खींचता हत्ता कि वोह उस के कन्धे तक आ जाती फिर वोह उसे वापस खींचता और दूसरे बाछ में डाल कर इसी तरह खींचता फिर जब उसे वापस खींचता तो वोह वापस अपनी जगह आ जाती। मैं ने ले जाने वाले से पूछा कि येह कौन है? तो उस ने जवाब दिया कि येह झूट बोलने वाला शख़्स है इसे क़ियामत तक क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।" (صحیح بخاری، کتاب الجنائز، رقم الحدیث ۱۳۸۶، ج۱، ص۴۶۷)

झूट की मज़म्मत करते हुए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

★ "झूट, इन्सान को रुस्वा कर देता है और चुग़ली अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब बनती है।" (الترغیب والترہیب کتاب الادب، رقم الحدیث ۲۸، ج۳، ص۳۶۸)

★ "जब बन्दा झूट बोलता है तो फ़िरिश्ता उस की बदबू से एक मील दूर हो जाता है।" (الترغیب والترہیب کتاب الادب، رقم الحدیث ۳۰، ج۳، ص۳۶۹)

★ "सच बोलना नेकी है और नेकी जन्नत में ले जाती है और झूट बोलना फ़िस्क़ो फ़ुजूर है और फ़िस्क़ो फ़ुजूर दोज़ख़ में ले जाता है।"

(مسلم، کتاب الادب، باب قبح الکذب، رقم ۲۶۰۷، ص۱۴۰۵)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

सद अफ़्सोस कि आज कसरत से झूट बोलने को कमाल और तरक़्क़ी की अ़लामत और सच को बे वुक़ूफ़ी और तरक़्क़ी में रुकावट तसव्वुर किया जाता है। बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो मज़मूम मक़ासिद के लिये झूटी क़सम उठाने से भी दरेग़ नहीं किया जाता। याद रखिये कि येह भी गुनाहे कबीरा है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कबीरा

www.dawateislami.net

गुनाह तीन हैं, शिर्क, वालिदैन की ना फ़रमानी, झूटी क़सम और किसी को क़त्ल करना।" (بخاری، کتاب الایمان والنذور، رقم الحدیث ۶۶۷۵، ج۴، ص۲۹۵)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अपनी क़सम के ज़रीए़ किसी मुसलमान का ह़क़ छीने तो **अल्लाह** उस पर जहन्नम को वाजिब और जन्नत को ह़राम कर देगा।" सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! अगर वोह मा'मूली शै हो तो ?" फ़रमाया : "अगर्चे लूबान ही हो।" (مسلم، کتاب الایمان، رقم الحدیث ۱۳۷، ص۸۲)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! झूट बोलने वाला दुन्या में चाहे कितनी ही कामयाबियां समेट ले, आख़िरत में उसे ख़सारे का सामना करना पड़ेगा और ख़सारए आख़िरत से बढ़ कर इन्सान के लिये कोई मुसीबत नहीं है। लिहाज़ा ! हमें चाहिये कि अपनी ज़बान को झूट बोलने से महफ़ूज़ रखें लेकिन याद रहे कि तीन मक़ामात पर ज़रूरत के सबब झूट बोलने की शरीअ़त की जानिब से रुख़्सत भी दी गई है जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बज़ाहिर ग़लत़ बयानी की इजाज़त देते हुए नहीं सुना सिवाए तीन मक़ामात के, चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "(1) मैं उस शख़्स को झूटा शुमार नहीं करता जो लोगों के दरमियान सुल्ह़ करवाए और ऐसी बात कहे जिस का मक़्सद सिर्फ़ इस्लाह़ हो, (2) और वोह आदमी जो जंग के दौरान कोई बात कहे, (3) और आदमी अपनी बीवी से कुछ कहे या बीवी अपने ख़ावन्द से कुछ कहे।" (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم الحدیث ۴۹۲۱، ج۴، ص۳۶۶)

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ लिखते हैं : "तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है या'नी इस में गुनाह

www.dawateislami.net

नहीं, एक जंग की सूरत में कि यहां अपने मद्दे मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, इसी त़रह़ ज़ालिम जब ज़ुल्म करना चाहता है तो उस के ज़ुल्म से बचने के लिये भी जाइज़ है, दूसरी सूरत येह है कि दो मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ है और येह उन दोनों में सुल्ह़ करवाना चाहता है मसलन एक के सामने येह कहता है कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है और तुम्हारी ता'रीफ़ करता था, उस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए और तीसरी सूरत येह है कि बीवी को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 1, स. 638)

मस्अला :

अगर सच बोलने में फ़साद पैदा होता हो तो इस सूरत में भी झूट बोलना जाइज़ है और अगर झूट बोलने में फ़साद होता हो तो ह़राम है और शक हो कि मा'लूम नहीं कि सच बोलने में फ़साद होगा या झूट बोलने में होगा जब भी झूट बोलना ह़राम है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 6, स. 638)

मस्अला :

बा'ज़ सूरतों में किज़्ब वाजिब है जैसे किसी बे गुनाह को ज़ालिम शख़्स क़त्ल करना चाहता है या ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देना चाहता है, वोह डर से छुपा हुवा है। ज़ालिम ने किसी से दरयाफ़्त किया कि वोह कहां है तो येह कह सकता है कि "मुझे नहीं मा'लूम" अगर्चे जानता हो, या किसी की अमानत उस के पास है, कोई उसे छीनना चाहता है (और उस से) पूछता है कि अमानत कहां है? (तो) येह इन्कार कर सकता है कि मेरे पास उस की अमानत नहीं (है)।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 4, स. 638)

www.dawateislami.net

मस्अला :

जिस क़िस्म के मुबालग़े का आ़दतन रवाज है, लोग उसे मुबालग़े पर ही मह़मूल करते हैं उस के ह़क़ीक़ी मा'ना मुराद नहीं लेते, वोह झूट में दाख़िल नहीं मसलन येह कहा कि "मैं तुम्हारे पास हज़ार मरतबा आया या हज़ार मरतबा मैं ने तुम से कहा।" यहां हज़ार का अ़दद मुराद नहीं बल्कि कई मरतबा आना और कहना मुराद है। (लेकिन) येह लफ़्ज़ ऐसे मौक़अ़ पर नहीं बोला जाएगा कि एक ही मरतबा आया हो या एक ही मरतबा कहा हो, और अगर एक मरतबा आया और येह कह दिया कि मैं हज़ार मरतबा आया तो झूट है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, मस्अला नम्बर 7, स. 638)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तीसरी क़िस्म झूटी गवाही देना

किसी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, इस की मज़म्मत करते हुए सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ने के बा'द तीन मरतबा फ़रमाया : "झूटी गवाही, शिर्क के बराबर है, फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो दूर हो बुतों की गन्दगी से और बचो झूटी बात से। (پ۱۷، الحج:۳۰)

एक मक़ाम पर तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया : "सुन लो ! तुम्हें सब से बड़े गुनाहों के बारे में बताता हूं। (1) शिर्क (2) वालिदैन की ना फ़रमानी (3) झूटी गवाही।" (صحیح البخاری، کتاب الادب، رقم:۵۹۷۶، ج۴، ص۹۵)

www.dawateislami.net

लिहाज़ा ! जब भी किसी मुआ़मले में गवाही देने की ज़रूरत पेश आए तो सच्ची गवाही ही देनी चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चौथी क़िस्म झूटे ख़्वाब घड़ कर सुनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि वोह हर दिल अ़ज़ीज़ बनने के चक्कर में या किसी और ग़रज़े फ़ासिद के लिये झूटे ख़्वाब घड़ कर सुनाते हैं जो कि नाजाइज़ है, जैसा कि मक्की मदनी सुल्त़ान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन शख़्स जन्नत की ख़ुश्बू से मह़रूम होंगे (1) अपने बाप के इ़लावा दूसरे से नसब का दा'वा करने वाला (2) मुझ पर झूट बांधने वाला (3) झूटा ख़्वाब सुनाने वाला।"

(فیض القدیر شرح الجامع الصغیر، رقم الحدیث ۳۵۳۲، ج ۳، ص ۴۳۱)

★ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो झूटा ख़्वाब सुनाए उसे जव के दो दानों में गांठ लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी जो येह नहीं कर सकेगा।" (صحیح البخاری، کتاب التعبیر، رقم الحدیث ۷۰۴۲، ج ۴، ص ۴۲۲)

लिहाज़ा ! अगर कोई इस आ़दते बद में मुब्तला हो तो फ़ौरी तौ़र पर तौबा करे और आयिन्दा के लिये झूटे ख़्वाब घड़ कर सुनाने से बाज़ रहे। **अल्लाह** तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

पांचवीं क़िस्म हर सुनी सुनाई बात आगे बढ़ा देना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर सुनी सुनाई बात को बिला तह़क़ीक़ आगे बढ़ा देना ममनूअ़ है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान के झूटा होने के लिये येह बात काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात कर दे।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم الحدیث ۵، ص ۸)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

छटी क़िस्म ग़ीबत करना और बोहतान लगाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत से मुराद येह है कि अपने ज़िन्दा या मुर्दा मुसलमान भाई के पोशीदा उ़यूब को (जिन का दूसरों के सामने ज़ाहिर होना उसे ना पसन्द हो) उस की बुराई के त़ौर पर ज़िक्र किया जाए, और अगर वोह बात उस में मौजूद न हो तो उसे बोहतान कहते हैं। मसलन : "मुझे बे वुक़ूफ़ बना रहा था", "उस की निय्यत ख़राब है", "डिरामा बाज़ है" वग़ैरा

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 149)

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हें मा'लूम है ग़ीबत क्या चीज़ है?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस का बेहतर इ़ल्म है।" इरशाद फ़रमाया : "ग़ीबत येह है कि तुम अपने भाई के बारे में ऐसी बात कहो जो उसे बुरी लगे।" किसी ने अ़र्ज़ की : "अगर मेरे भाई में वोह बुराई मौजूद हो तो इस को भी क्या ग़ीबत कहा जाएगा?" इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"जो कुछ तुम कहते हो अगर उस में मौजूद हो जभी तो ग़ीबत है और अगर तुम ऐसी बात कहो जो उस में मौजूद न हो तो येह बोहतान है।"

(مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب تحریم الغیبۃ، رقم ۲۵۸۹، ص ۱۳۹۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत इस क़दर बुरा काम है कि इसे अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाने से तस्बीह दी गई है, चुनान्चे, कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई येह पसन्द रखेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, तो येह तुम्हें गवारा न होगा। (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! आज मुसलमानाने आ़लम की अक्सरिय्यत ज़बान की इस आफ़त में मुब्तला है। शायद ही कोई मजलिस इस गुनाह के इरतिकाब से ख़ाली होती हो, मह़ज़ वक़्त गुज़ारी की ख़ातिर किसी ग़ाइब शख़्स को हदफ़ बना कर उस की ख़ूब ग़ीबत की जाती है फिर अगर उस शख़्स को इस की ख़बर हो जाए तो वोह भी जवाबी कारवाई के तौ़र पर अपनी ग़ीबत करने वालों की ग़ीबत करता है और यूं गुनाहों का बाज़ार गर्म होने के साथ साथ घर गली और मह़ल्ला मैदाने कारज़ार की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं। सब से तश्वीशनाक पहलू येह है कि बा'ज़ औक़ात ग़ीबत करने के बा वुजूद इसे ग़ीबत तस्लीम करने से भी इन्कार कर दिया जाता है जिसे उ़लमाए किराम ने कुफ़्र क़रार दिया है चुनान्चे, सदरुश्शरीआ़ मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ الرَّحْمَة बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16 स. 646 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि "एक शख़्स ग़ीबत कर रहा है, उस से कहा गया कि ग़ीबत न करो, वोह कहने लगा : येह ग़ीबत नहीं मैं सच्चा हूं।" तो येह कुफ़्र है क्यूंकि उस

www.dawateislami.net

शख़्स ने एक ह़रामे क़त़ई को ह़लाल बताया..... इलख़। लेकिन याद रहे कि कहने वाला उसी सूरत में काफ़िर होगा जब उसे ग़ीबत के ह़रामे क़त़ई होने का इ़ल्म हो और वोह ग़ीबत की ता'रीफ़ भी जानता हो।

(माख़ूज़ अज़ रिसाला "ग़ीबत की तबाहकारियां" स. 15)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

ग़ीबत करने वाले को आख़िरत में अपनी ज़बान की बे एह़तियाती का वबाल भुगतना पड़ेगा, जैसा कि

(1) सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने मे'राज की रात में लोगों को इस ह़ाल में देखा कि वोह जहन्नम में अपने नाख़ुनों से अपने चेहरों को नोच रहे हैं, मैं ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "येह वोह लोग हैं जो दुन्या में लोगों की ग़ीबत और आबरू रेज़ी किया करते थे।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیبۃ، رقم ۴۸۷۸ ج ۴، ص ۳۵۳)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन एक शख़्स को उस का नामए आ'माल पढ़ने के लिये दिया जाएगा, वोह उसे देख कर कहेगा : "ऐ मेरे रब ! मेरी फुलां फुलां नेकियां कहां हैं जो मैं ने की थीं ?" रब तआ़ला फ़रमाएगा कि "लोगों की ग़ीबत करने की वज्ह से मैं ने तेरे नामए आ'माल से वोह नेकियां मिटा दी हैं।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم الحدیث ۳۰، ج ۳، ص ۳۳۲)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो दुन्या में अपने

www.dawateislami.net

भाई का गोश्त खाता है बरोज़े क़ियामत वोह गोश्त उस के पास लाया जाएगा और कहा जाएगा, इस मुर्दे के गोश्त को उसी त़रह़ खाओ जिस त़रह़ उस की ज़िन्दगी में उस का गोश्त खाते थे। जब वोह इस हुक्म की वज्ह से खाएगा तो परेशान हो जाएगा और चीख़ता रहेगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، رقم الحدیث ۱۳۱۲۹، ج ۸، ص ۱۷۳)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक को चाहिये कि वोह उन उख़रवी परेशानियों से बचने के लिये ग़ीबत से मुकम्मल परहेज़ करे और साबिक़ा ज़िन्दगी में की गई ग़ीबत की मुआ़फ़ी त़लब करे और अगर उस शख़्स को ग़ीबत की ख़बर हो चुकी हो जिस की ग़ीबत की थी तो उस से भी मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है। (ग़ीबत के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के किताब ''ग़ीबत की तबाहकारियां'' मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।'')

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सातवीं क़िस्म चुग़ली खाना

अ़ल्लामा नववी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं : ''लोगों में फ़साद डालने के लिये एक की बात दूसरे को बताना ''चुग़ली'' है। किसी ज़रूरते शरई के बिग़ैर चुग़ली करना ह़राम है मसलन जिसे बात पहुंचा रहा है न पहुंचाने में उसे नुक़्सान होगा तो बात बताना वाजिब है क्यूंकि अब येह चुग़ली नहीं ख़ैरख़्वाही होगी। (حدیقہ ندیہ، ج ۲، ص ۴۲۷)

अफ़्सोस ! आज हमारे मुआ़शरे में येह मरज़ भी आ़म है। बद क़िस्मती से बा'ज़ लोगों में येह मरज़ इतनी तरक़्क़ी पा चुका होता है कि लाख कोशिश के बा वुजूद इस का इ़लाज नहीं हो पाता। इस क़िस्म के

www.dawateislami.net

लोग जब तक अपनी लगाई हुई आग से किसी का नशेमन जलते हुए न देख लें उन्हें किसी करवट चैन नहीं आता और न ही येह एक मा'रिका सर करने के बा'द दूसरे मैदान की त़रफ़ बढ़ जाने में ताख़ीर करते हैं। ऐसों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि चुग़ल ख़ोरी की मज़म्मत में रह़मान عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन मुलाह़ज़ा करें और चुग़ल ख़ोरी के नतीजे में होने वाले नुक़्सानात से बचने के लिये अपनी आंखें बन्द होने से पहले कामिल तौबा की सआ़दत ह़ासिल कर लें। चुग़ल ख़ोरी की मज़म्मत बयान करते हुए रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला ज़लील बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।" (پ۲۹، القلم: ۱۰، ۱۱)

जब कि,.....(1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ग़ीबत और चुग़ली ईमान को इस त़रह़ क़त़्अ़ कर देते हैं जैसे चरवाहा दरख़्त को काट देता है।" (الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم الحدیث ۲۸، ج۳، ص۳۳۲)

(2) ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआ़ला के बद तरीन बन्दे वोह हैं जो लोगों में चुग़ली खाते फिरते हैं और दोस्तों के दरमियान जुदाई डालते हैं।" (مسند احمد، رقم ۲۷۶۷۰، ج۱۰، ص۴۴۲)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "मेरे नज़दीक तुम में सब से पसन्दीदा लोग वोह हैं जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक़ वाले नर्म

www.dawateislami.net

दिल, लोगों से महब्बत करने वाले और जिन से लोग महब्बत करते होंगे और तुम में मेरे नज़दीक सब से ना पसन्दीदा लोग वोह चुग़ल ख़ोर हैं जो दोस्तों के दरमियान तफ़रक़ा डालते और पाक दामन लोगों में ऐब ढूंडते होंगे।" (مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی حسن الخلق، رقم ۱۲۶۶۸، ج۸، ص۴۷)

(4) हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یکرہ من النمیمۃ، رقم الحدیث ۶۰۵۶، ج۴، ص۱۱۵)

(5) हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ग़ीबत करने वालों, चुग़ल ख़ोर और पाकबाज़ लोगों पर ऐब लगाने वालों का ह़श्र कुत्तों की सूरत में होगा।" (الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم الحدیث ۱۰، ج۳، ص۳۲۵)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आठवीं क़िस्म किसी पर तोहमत बांधना

बिला सुबूते शरई किसी मुसलमान पर इल्ज़ामे गुनाह जाइज़ नहीं बिल ख़ुसूस किसी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाना, जिस की शरई सज़ा येह है कि अगर किसी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने वाला अगर अपने दा'वे को शरअ़न साबित न कर सके तो उसे 80 कोड़े लगाए जाएं। **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِیْنَ جَلْدَةً وَّ لَاتَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो पारसा औ़रतों को ऐब लगाएं फिर

www.dawateislami.net

चार गवाह मुआ़इना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उन की कोई गवाही कभी न मानो और वोही फ़ासिक़ हैं।" (پ۱۸،النور:۴)

नोट : इस मस्अले की तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 9 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की हि़फ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

नवीं क़िस्म ला'नत भेजना

किसी को **अल्लाह** की रह़मत से दूर कहना और करना "ला'नत" कहलाती है। यक़ीन के साथ किसी पर भी ला'नत करना जाइज़ नहीं चाहे वोह काफ़िर हो या मोमिन, गुनहगार हो या फ़रमां बरदार क्यूंकि किसी के ख़ातिमे का ह़ाल कोई नहीं जानता।

(حدیقہ ندیہ، ج۲،ص۲۳۰)

फ़तावा रज़विय्या में है कि "ला'नत बहुत सख़्त चीज़ है, हर मुसलमान को इस से बचाया जाए बल्कि काफ़िर पर भी ला'नत जाइज़ नहीं जब तक उस का कुफ़्र पर मरना कुरआनो ह़दीस से साबित न हो।"

(जिल्द 10, निस्फ़ सानी, स. 255 बि तग़य्युरिन)

हमारे मुआ़शरे में बात बात पर ला'नत मलामत करने का मरज़ भी आ़म है और इ़ल्मे दीन से महरूमी के बाइ़स इस में कोई ह़रज भी नहीं समझा जाता ह़ालांकि किसी मोमिन को ला'नत करना उसे क़त्ल करने के मुतरादिफ़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह्ह़ाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी मोमिन पर ला'नत करना उसे क़त्ल करने की त़रह़ है।"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذر، رقم الحدیث ۶۶۵۲، ج۴،ص۲۸۹)

और किसी पर ला'नत करना मोमिन की शान के भी मनाफ़ी है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते

www.dawateislami.net

हैं कि मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन ला'न त़ा'न और फ़ोह्श काम नहीं करता।"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، رقم الحدیث ۱۹۸۴، ج ۳، ص ۳۹۳)

किसी को ला'न त़ा'न करने की आ़दत पालने वाले भाई इस ह़दीस पर ग़ौर करें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बन्दा जब ला'नत करता है वोह आस्मान की त़रफ़ जाती है तो वहां के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, फिर येह ज़मीन की त़रफ़ लौटती है तो ज़मीन के दरवाज़े भी बन्द कर दिये जाते हैं और येह दाएं बाएं कहीं से निकलने की कोशिश करती है, जब कोई रास्ता नहीं पाती तो जिस पर भेजी गई वोह अहल हो तो उस की त़रफ़ लौटती है वरना ला'नत भेजने वाले पर वापस आती है।" (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم الحدیث ۴۹۰۵، ج ۴، ص ۳۶۱)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

दसवीं क़िस्म गाली देना

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "किसी मुसलमान जाहिल को भी बे इज़्ने शरअ़ गाली देना ह़रामे क़त़ई है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 140)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ (गुनाह) है।" (مسلم، کتاب الایمان، رقم ۱۱۶، ص ۵۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसलमान को गाली देना ख़ुद को हलाकत में डालने के मुतरादिफ़ है।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم الحدیث ۳، ج ۳، ص ۳۱۱)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग्यारहवीं क़िस्म फ़ोह़्श कलामी करना

फ़ोह़्श कलामी से मुराद येह है कि उन बातों को वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में ज़िक्र कर दिया जाए जिन का सराह़तन इज़्हार बुरा समझा जाता हो मसलन जिमाअ़ की कैफ़िय्यात या पोशीदा अमराज़ को (बिला ह़ाजते शरई) बयान करना। (احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، ص۱۵۱)

मक्की मदनी सुल्त़ान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह तआ़ला फ़ोह़्श गोई और बद ज़बानी को पसन्द नहीं फ़रमाता।" (مسلم، رقم ۲۱۶۵، ص۱۱۹۳)

बद क़िस्मती से फ़ोह़्श कलामी के शौक़ीन भी हमारे मुआ़शरे में कसरत से पाए जाते हैं जो ह़ुसूले लज़्ज़त और दोस्तों की मह़फ़िलें गर्माने के लिये शहवत भरी गुफ़्तगू करने के आ़दी होते हैं। फ़ोह़्श गोई का सहारा ले कर दादो तह़्सीन समेटने वाले याद रखें कि इस का अन्जाम बहुत बुरा है। चुनान्चे,

★ शहनशाहे अबरार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि चार त़रह़ के जहन्नमी खोलते पानी और आग के दरमियान भागते फिरते और वैलो सुबूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे, उन में से एक ऐसा शख़्स भी होगा जिस के मुंह से ख़ून और पीप बहते होंगे। जहन्नमी कहेंगे : "इस बद बख़्त को क्या हुवा कि हमारी तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा किये देता है?" जवाब मिलेगा : "येह बद नसीब, ख़बीस और बुरी बात की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर लज़्ज़त उठाता था मसलन जिमाअ़ की बातों से।"

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب آفات اللسان، ج۹، ص۱۸۷)

www.dawateislami.net

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि शर्मो ह़या ईमान का ह़िस्सा है और ईमान वाला जन्नत में जाएगा और बे ह़याई, फ़ोह़्श गोई बुराई का ह़िस्सा है और बुराई वाला दोज़ख़ में जाएगा ''

(ترمذی، کتاب البر والصلۃ، رقم ۲۰۱۶، ج۳، ص۴۰۶)

★ ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''फ़ोह़्श गो पर जन्नत में दाख़िल होना ह़राम है।'' (اتحاف السادۃ للمتقین، کتاب آفات اللسان، ج۹، ص۱۸۷)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बारहवीं क़िस्म ता'नाज़नी करना

ता'नाज़नी कर के दूसरों का जिगर छलनी करना भी बा'ज़ लोगों का वतीरा होता है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और आपस में ता'ना न करो।'' (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

जब कि ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने अपने भाई को किसी गुनाह पर आ़र दिलाई मरेगा नहीं जब तक उस गुनाह में मुब्तला न हो।'' एक रिवायत में है कि ''उस गुनाह पर आ़र दिलाई जिस से तौबा कर चुका।''

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم الحدیث ۲۵۱۳، ج۴، ص۲۲۷)

और ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ से मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अपने भाई को आ़र न दिलाओ कि उसे छुटकारा दे कर तुम्हें मुब्तला कर दिया जाए।''

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم الحدیث ۲۵۱۴، ج۴، ص۲۲۷)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेरहवीं क़िस्म तक़्दीर में बह़्स करना

तक़्दीर में बह़्स करने की भी ह़दीसे पाक में मुमानअ़त की गई है चुनान्चे,

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि हम लोग तक़्दीर के मस्अले में बह़्स कर रहे थे कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए तो शिद्दते ग़ज़ब से आप का चेहरा सुर्ख़ हो गया कि गोया अनार के दाने आप के रुख़्सारे मुबारका पर निचोड़ दिये गए हों। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम को इसी का हुक्म दिया गया है ? क्या मैं तुम्हारी त़रफ़ इसी चीज़ के साथ भेजा गया हूं ? तुम से पहली क़ौमें क़ज़ा व क़दर के मस्अले में मुबाह़से के सबब हलाक हुईं, मैं तुम्हें क़सम देता हूं और मुकर्रर क़सम देता हूं आयिन्दा इस मस्अले में कभी बह़्स न करना।" (ترمذی، کتاب القدر، رقم ۲۱۴۰، ج ۴، ص ۵۱)

मस्अला :

क़ज़ा व क़दर के मसाइल आ़म लोग नहीं समझ सकते इस में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करना दीनो ईमान के तबाह होने का सबब है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जैसे जलीलुल क़द्र सह़ाबा भी इस मस्अले में बह़्स करने से मन्अ़ फ़रमाए गए तो फिर हम लोग किस गिनती में हैं ! इतना समझ लेना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने आदमी को पथ्थर और दीगर जमादात के मिस्ल बे ह़िसो ह़रकत पैदा नहीं किया बल्कि इस को एक क़िस्म का इख़्तियार दिया है कि एक काम चाहे करे न करे और इस के साथ अ़क़्ल भी दी है कि भले बुरे नफ़्अ़ व नुक़्सान को पहचान सके और हर क़िस्म के सामान

www.dawateislami.net

और अस्बाब मुहय्या कर दिये कि जब आदमी कोई काम करना चाहता है तो इसी क़िस्म के सामान मुहय्या हो जाते हैं और इसी वज्ह से उस पर मुआख़ज़ा है अपने को बिल्कुल मजबूर या बिल्कुल मुख़्तार समझना दोनों गुमराही हैं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, स. 26 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चौदहवीं क़िस्म बिग़ैर इल्म के फ़तवा देना

हमारे मुआ़शरे में ऐसे अफ़राद की भी कमी नहीं है जो इल्मे दीन से बे बहरा होने के बा वुजूद दीनी मसाइल में राए ज़नी को अपना ह़क़ तसव्वुर करते हैं और लोगों को ग़लत़ मसाइल बताने में ज़रा झिझक महसूस नहीं करते ह़ालांकि मुअ़ल्लिमे आ'ज़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बिग़ैर इल्म के फ़तवा दे, उस पर ज़मीनो आस्मान के फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं।" (کنز العمال، رقم ۲۹۰۱۴، ج ۱۰، ص ۸۴)

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जाहिल पर सख़्त ह़राम है कि फ़तवा दे।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ आख़िर, स. 275)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पन्दरहवीं क़िस्म मस्जिद में दुन्या की बातें करना

मस्जिद में दुन्या की बातें करना भी आज के जदीद मुआ़शरे में मा'यूब नहीं समझा जाता ह़ालांकि मदनी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआने पाक पढ़ने, ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करने, और भलाई की बात पूछने या बताने के सिवा हर बात मस्जिद में फ़ुज़ूल है ।" (کنز العمال، کتاب الصلوٰۃ، رقم ۲۰۸۳۶، ج ۷، ص ۲۷۳)

(1) हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ब त़रीक़े मुर्सल रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एक ज़माना ऐसा आएगा कि लोग मस्जिदों के अन्दर दुन्या की बातें करेंगे तो उस वक़्त तुम उन लोगों के पास न बैठना । ख़ुदाए तआ़ला को उन लोगों की कुछ परवा नहीं ।" (شعب الایمان، باب فی الصلوٰۃ، رقم ۲۹۶۲، ج ۳، ص ۸۷)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिसे मस्जिद में गुमशुदा चीज़ तलाश करते देखो तो दुआ़ करो कि वोह चीज़ उसे न मिले क्यूंकि मसाजिद इन कामों के लिये नहीं बनीं ।"

(مسلم، کتاب المساجد، باب انھی عن نشد الضالۃ فی المسجد وما یقولہ، رقم الحدیث ۵۶۸، ص ۲۸۴)

(3) हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही रिवायत है कि सुल्त़ाने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम किसी को मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त करते देखो तो कहो : **अल्लाह** तुझे इस तिजारत में नफ़्अ़ न दे और जब किसी को गुमशुदा चीज़ तलाश करते देखो तो कहो, **अल्लाह** करे तुझे येह चीज़ न मिले ।"

(ترمذی کتاب البیوع، باب النھی عن البیع فی المسجد، رقم الحدیث ۱۳۲۵، ج ۳، ص ۵۹)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

सोलहवीं क़िस्म गाने गाना

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने साज़ के साथ गाए जाने वाला मुरव्वजा गाने को ह़राम क़रार दिया है। (फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 10, स. 54)

बे शुमार ख़राबियों के इस मजमूए़ को मॉडर्न मुफ़क्किर रूह़ की गिज़ा क़रार देते हैं ह़ालांकि इस का शुमार लह्वो लइ़ब में होता है जिस की क़ुरआने मजीद में मज़म्मत बयान की गई है, चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और कुछ लोग खेल की बातें ख़रीदते हैं कि अल्लाह की राह से बहका दें बे समझे। (پ۲۱،لقمٰن:۶)

जब कि ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "गाना निफ़ाक़ को ऐसे उगाता है जैसे पानी घास उगाता है।"

(کنزالعمال،کتاب اللھو واللعب،رقم الحدیث۴۰۶۵۱،ج۱۵،ص۹۵)

और....ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब बन्दा गाता है अल्लाह उस पर दो शैत़ान मुसल्लत़ कर देता है जो उस के कन्धों पर बैठ कर उस के चुप होने तक अपनी एड़ियों से उस के सीने पर मारते रहते हैं।"

(تفسیرات احمدیہ،ص۶۰۱)

इस ह़दीसे पाक को पेशे नज़र रखा जाए तो गाने वालों की उछल कूद और बे हंगम ह़रकात व सकनात की वज्ह ब आसानी समझ में आ सकती है।

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सतरहवीं क़िस्म नौह़ा करना

नौह़ा से मुराद येह है कि मय्यित के औसाफ़ मुबालग़े के साथ बयान कर के आवाज़ से रोया जाए, इसे बैन भी कहते हैं और येह बिल इजमाअ़ ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, मस्अला नम्बर 17, स. 357)

इस की मज़म्मत करते हुए सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

(1) "जो गिरेबान फाड़े, चेहरा पीटे और जाहिलिय्यत की पुकार पुकारे वोह हम में से नहीं।"

(سنن الترمذی، کتاب الجنائز، رقم الحدیث ۱۰۰۱، ج۲، ص۳۰۳)

(2) "जो आंसू आंख और दिल से हो तो वोह अल्लाह की त़रफ़ से है और रह़मत है और जो हाथ और ज़बान से हो तो वोह शैत़ान की त़रफ़ से है।" (مشکوۃ، کتاب الجنائز، رقم ۱۷۴۸، ج۱، ص۴۸۶)

अगर किसी के घर कोई मय्यित हो जाए तो इ़ल्मे दीन से मह़रूम उस घर और आस पड़ोस की ख़वातीन नौह़ा करने को लाज़िम तसव्वुर करती हैं, अगर कोई इस्लामी बहन इस मकरूह काम में उन का साथ न दे तो उस पर त़ा'न व तशनीअ़ के तीर बरसा कर उस बेचारी की ख़ूब दिल आज़ारी की जाती है। ऐसी ख़वातीन याद रखें कि इस की उख़रवी सज़ा बहुत कड़ी है जैसा कि

ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नौह़ा करने वाली औ़रत अगर बिग़ैर तौबा किये मर जाए तो क़ियामत के दिन उसे गन्धक की क़मीस और ख़ारिश की चादर पहनाई जाएगी।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، رقم الحدیث ۹۳۴، ص۴۶۵)

www.dawateislami.net

मदीना :

रिक़्क़ते क़ल्बी की वज्ह से बिला आवाज़ रोने में कोई क़बाहत नहीं है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "याद रखो ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न आंसूओं से रोने पर अ़ज़ाब करता है न दिल के ग़म पर (फिर ज़बान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया) हां इस पर अ़ज़ाब या रह़म फ़रमाता है।" (صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب البکاء علی المیت، رقم ۹۲۴، ص ۴۲۰)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अट्ठारहवीं क़िस्म दूसरों के राज़ फ़ाश करना

ज़बान की एक आफ़त लोगों के राज़ फ़ाश करना भी है और येह एक त़रह़ की ख़ियानत है जो कि ममनूअ़ है क्यूंकि इस से उस शख़्स को तक्लीफ़ पहुंचती है जिस का राज़ फ़ाश किया जाए। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब दो शख़्स आपस में एक दूसरे को राज़दां बनाएं तो एक के लिये दूसरे का वोह राज़ फ़ाश करना जाइज़ नहीं जिस का फ़ाश होना पहले को ना गवार गुज़रे।" (شعب الایمان، رقم الحدیث ۱۱۱۹۱، ج ۷، ص ۵۲۰)

जब कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रह़मते कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एक शख़्स की बात दूसरे के पास अमानत है।"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی ان المجالس امانۃ، رقم الحدیث ۱۹۶۶، ج ۳، ص ۳۸۶)

और ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रोज़े क़ियामत **अल्लाह** के नज़दीक सब से बुरा वोह होगा जो अपनी बीवी से या जो बीवी अपने

www.dawateislami.net

शोहर से क़ज़ाए शहवत करे और उन में से कोई अपने हम सफ़र का राज़ फ़ाश कर दे।'' (صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم افشاء سر المرأۃ، رقم الحدیث ۱۴۳۷، ص ۷۵۳)

लेकिन तीन क़िस्म की बातों को ज़ाहिर करना जाइज़ है जैसा कि....

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मजालिस अमानत हैं सिवाए तीन क़िस्म की मजालिस के, (1) जिस मजलिस में किसी को ना ह़क़ क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया गया हो (2) ह़राम जिमाअ़ का मन्सूबा बना हो (3) ना ह़क़ माल लेने का मन्सूबा बना हो।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم الحدیث ۴۸۶۹، ج ۴، ص ۳۵۱)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन्नीसवीं क़िस्म बिला ह़ाजत सुवाल करना

बिला ह़ाजत किसी भी मुसलमान को सुवाल करने (या'नी भीक मांगने) की शरीअ़त की जानिब से इजाज़त नहीं है। भीक की मज़म्मत में कई अह़ादीस मरवी हैं चुनान्चे,

(1) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''आदमी हमेशा लोगों से भीक मांगता रहेगा यहां तक कि क़ियामत के दिन वोह इस ह़ालत में आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त की बोटी न होगी, निहायत बे आबरू हो कर आएगा।'' (بخاری، کتاب الزکوۃ، رقم ۱۴۷۴، ج ۱، ص ۴۹۹)

(2) ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि शफ़ीए़ महशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम में से जो

www.dawateislami.net

शख़्स अपनी रस्सी ले कर और लकड़ियों का एक गठ्ठा पीठ पर लाद कर लाए और उन को बेचे और अल्लाह तआ़ला भीक मांगने की ज़िल्लत से उस के चेहरे को बचाए तो येह बेहतर है इस बात से कि लोगों से भीक मांगे और वोह उस को दें या न दें। (بخاری، کتاب الزکوۃ، رقم ۱۴۷۱، ج۱، ص۴۹۷)

(3) ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "भीक मांगना एक क़िस्म की ख़राश है कि आदमी भीक मांग कर अपने मुंह को नोचता है तो जो चाहे अपने मुंह पर ख़राश को नुमायां करे और जो चाहे इस से अपना चेहरा महफ़ूज़ रखे।" हां अगर आदमी साहिबे सल्त़नत से अपना ह़क़ मांगे या ऐसे अम्र में सुवाल करे कि उस से चारए कार न हो तो जाइज़ है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکوۃ، باب ما تجوز فیہ المسألۃ، رقم الحدیث ۱۶۳۹، ج۲، ص۱۶۸)

(4) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स माल बढ़ाने के लिये लोगों से भीक मांगता है वोह गोया अंगारा मांगता है तो उस को इख़्तियार है कि बहुत मांगे या कम मांगे। (مسلم، کتاب الزکوۃ، رقم ۱۰۴۱، ص۵۱۸)

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना कब्शा अंमारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "मैं तीन बातों में क़सम उठाता हूं और तुम्हें एक काम की बात बताता हूं इसे याद कर लो (1) सदक़ा बन्दे के माल में कमी नहीं करता (2) जिस बन्दे पर जुल्म किया जाए और वोह इस पर सब्र करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाएगा (3) जिस बन्दे ने सुवाल का दरवाज़ा खोला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देगा।"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء مث الدنیا اربعۃ نفر، رقم ۲۳۳۲، ج۴، ص۱۴۵)

www.dawateislami.net

(6) ह़ज़रते ह़ब्शी बिन जुनादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अमीर और त़ाक़तवर के लिये सदक़ा ह़लाल नहीं। सदक़ा सिर्फ़ इन्तिहाई ग़रीब, अदाएगिये क़र्ज़ से नातुवां और उस शख़्स के लिये है जिस पर दियत या क़िसास लाज़िम हो जाए और जिस ने इस लिये लोगों से सुवाल किया ताकि माल में कसरत हो तो ऐसा सुवाल क़ियामत के दिन उस के चेहरे पर ज़ख़्म और जहन्नम का पथ्थर होगा जिसे येह खाएगा तो जो चाहे इस में कमी करे और जो चाहे ज़ियादती करे।" और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिद्दीक़े अक्बर, अबू ज़र ग़िफ़ारी और सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया : "तुम्हारा कोड़ा भी गिर जाए तो कभी किसी से सुवाल मत करना।"

(سنن الترمذی، کتاب الزکوۃ، باب ماجاء من لاتحل لہ الصدقۃ، رقم الحدیث ۶۵۳، ج ۲، ص ۱۴۰)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बीसवीं क़िस्म दो रुख़ी इख़्तियार करना

इसे दोग़ला पन भी कहा जाता है, इस से मुराद येह है कि इन्सान दो दुश्मनों के दरमियान लगाई बुझाई करे या'नी जिस के पास जाए उसी की ह़िमायत में बोले। (احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، ج ۳، ص ۱۹۵)

ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो दुन्या में दोग़ला पन इख़्तियार करे तो रोज़े क़ियामत उस की आग की दो ज़बानें होंगी।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب ذی الوجھین وذی اللسانین، رقم الحدیث ۴، ج ۳، ص ۳۷۱)

जब कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम रोज़े क़ियामत बद

www.dawateislami.net

तरीन शख़्स उसे पाओगे जो दो रुख़ा होगा कि एक की बातें दूसरे को और दूसरे की पहले को पहुंचाएगा।" (بخاری، کتاب المناقب، رقم ۳۴۹۴، ج۲، ص۴۷۳)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इक्कीसवीं क़िस्म नाजाइज़ सिफ़ारिश करना

इस से मुराद ऐसी सिफ़ारिश है जिस के ज़रीए़ किसी शरई सज़ा के निफ़ाज़ को रोकने की कोशिश की जाए जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस की सिफ़ारिश **अल्लाह** की ह़ुदूद पार कर जाए उस ने **अल्लाह** की मुख़ालफ़त की।"

(مستدرک، کتاب الحدود، باب من حالت شفاعتہ الخ، رقم الحدیث ۸۲۱۸، ج۵، ص۵۴۶)

रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَمَنْ یَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَیِّئَةً یَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस में से ह़िस्सा है।" (پ۵، النساء:۸۵)

ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक मख़्ज़ूमिया औ़रत ने चोरी की तो क़ुरैश सोचो बिचार करने लगे कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस की सिफ़ारिश कौन करे ? बिल आख़िर ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिख़ाब हुवा कि येह हुज़ूर के मह़बूब हैं येह बात कर सकते हैं। ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस औ़रत की सिफ़ारिश की तो सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम **अल्लाह** की ह़ुदूद में सिफ़ारिश करते हो ?" फिर खड़े हुए और ख़ुत़बा

www.dawateislami.net

दिया : "ऐ लोगो ! तुम से पिछले लोग इसी लिये हलाक हुए कि उन में साहिबे मन्सब चोरी करता तो उसे छोड़ दिया जाता और अगर ग़रीब चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम की जाती, ख़ुदा की क़सम ! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद भी चोरी करती तो मैं उस का हाथ काट देता।"

(مسلم، کتاب الحدود، باب قطع السارق الشریف وغیرہٖ، رقم الحدیث ۱۶۸۸، ص ۹۲۷)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बाईसवीं क़िस्म बुराइयों की तरग़ीब देना

लोगों को गुनाहों पर उभारना अपने सर पर गुनाहों का अम्बार लादने के मुतरादिफ़ है जैसा कि रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किसी को गुमराही की दा'वत दी उसे उस गुमराही की पैरवी करने वालों के बराबर गुनाह होगा और उन के गुनाहों में कमी न होगी। (صحیح مسلم، کتاب العلم، باب من سن حسنۃ الخ، ص ۱۴۳۸، رقم: ۲۶۷۴)

इलावा अज़ीं क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इसे मुनाफ़िक़ीन की निशानी क़रार दिया गया है चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है :

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ یَّاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें एक थेली के चट्टे बट्टे हैं बुराई का हुक्म दें और भलाई से मन्अ़ करें।"

(پ۱۰، التوبۃ: ۶۷)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

तेईसवीं क़िस्म सख़्त कलामी करना

बा'ज़ लोग सख़्त लहजे में गुफ़्तगू करने को बाइसे इफ़्तिख़ार तसव्वुर करते हैं हालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे ऐब क़रार दिया है और नर्मी की तरग़ीब दिलाई है। चुनान्चे,

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस चीज़ से नर्मी छीन ली जाती है उसे ऐबदार कर देती है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الرفق، رقم ۲۵۹۴، ص۱۳۹۸)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिसे नर्मी में से हिस्सा दिया गया उसे भलाई में से हिस्सा दिया गया और जो नर्मी के हिस्से से महरूम रहा वोह भलाई में अपने हिस्से से महरूम रहा।"

(ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب فی الرفق، رقم ۲۰۲۰، ج۳، ص۴۰۸)

अल्लाह तआला हमें इस हवाले से भी अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चौबीसवीं क़िस्म मुअ़ज़्ज़मे दीनी की गुस्ताख़ी करना

मुअ़ज़्ज़मे दीनी मसलन किसी आलिमे दीन या पीर साहिब की शान में नाज़ेबा कलिमात कहना बहुत बड़ी जुरअत है। इमामे अहले सुन्नत अश्शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

"अगर (कोई) आ़लिम को इस लिये बुरा कहता है कि वोह आ़लिम है जब तो सरीह़ काफ़िर है और अगर ब वज्हे इ़ल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत के बाइ़स बुरा कहता है, गाली देता है तह़क़ीर करता है तो (ऐसा करने वाला) सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और अगर बे सबब रंज रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब, ख़बीसुल बातिन है और उस के कुफ़्र का अन्देशा है।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 140)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पच्चीसवीं क़िस्म ख़ुत़्बे के दौरान बोलना

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो इमाम के ख़ुत़्बा देते वक़्त कलाम करे उस की मिसाल उस गधे की है जो बोझ उठाता है और जो बात करने वाले को चुप रहने का कहे उस का जुमुआ़ (कामिल) नहीं होगा।" (الترغیب والترہیب، کتاب الجمعۃ، الترہیب من الکلام والامام یخطب، رقم الحدیث ۳، ج ۱، ص ۲۹۲)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मदनी ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इमाम के ख़ुत़्बा देते वक़्त तुम्हारा किसी को कहना "चुप रहो" लग़्व है।"

(صحیح البخاری، کتاب الجمعۃ، باب الانصات یوم الجمعۃ والامام یخطب، رقم الحدیث ۹۳۴، ج ۱، ص ۳۲۱)

अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं : "ख़ुत़्बे में खाना पीना, कलाम करना अगर्चे سُبْحٰنَ اللہ कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना ह़राम है।" (درمختار مع ردالمحتار، ج ۳، ص ۳۵)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

छब्बीसवीं क़िस्म तिलावते क़ुरआन सुनते वक़्त गुफ़्तगू करना

क़ुरआने पाक में है कि

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़्म हो।'' (پ۹،الاعراف:۲۰۴)

और.....फ़तावा रज़विय्या (जिल्द दहुम, स. 167) में है : ''जब बुलन्द आवाज़ से क़ुरआने पाक पढ़ा जाए तो ह़ाज़िरीन पर सुनना फ़र्ज़ है जब कि वोह मजमअ़ सुनने की ग़रज़ से ह़ाज़िर हो, वरना एक का सुनना काफ़ी है। अगर्चे दूसरे लोग काम में हों।''

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सत्ताईसवीं क़िस्म क़ज़ाए ह़ाजत करते वक़्त बातें करना

क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त और बैतुल ख़ला में बातें करना मकरूहे तह़रीमी है, लिहाज़ा इस से भी बचा जाए। (حدیقہ ندیہ، ج۲،ص۳۱۱)

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मक्की मदनी सुल्त़ान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जब दो शख़्स क़ज़ाए ह़ाजत को जाएं तो पर्दा कर लें और बातें न करें क्यूंकि ऐसे मौक़अ़ पर बातें करना **अल्लाह** को सख़्त नापसन्द है।''

(تاریخ بغداد، رقم الحدیث۶۵۷۴، ج۱۲،ص۱۲۲)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

अड़ाईसवीं क़िस्म लोगों के बुरे नाम रखना

अस्ल नाम से हट कर किसी का ऐसा वैसा नाम (मसलन : लम्बू, ठिंगू, कालू वग़ैरा) रखना भी हमारे मुआ़शरे में बहुत मा'मूली तसव्वुर किया जाता है ह़ालांकि इस से सामने वाले को तक्लीफ़ पहुंचती है और येह ममनूअ़ है। हां ! अगर सामने वाले को वाक़िअ़तन अज़िय्यत न पहुंचे और इस में उस की तह़क़ीर भी न हो और वोह उसी नाम से मा'रूफ़ हो तो ह़रज नहीं लेकिन फिर भी अस्ल नाम से पुकारना ही मुनासिब है।

रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना।" (پ۲۶،الحجرات:۱۱)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन्तीसवीं क़िस्म खाने में से ऐब निकालना

खाने में ऐब निकालना मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है और अगर इस की वज्ह से खाना पकाने वाले या मेज़बान की दिल आज़ारी हो जाए तो ममनूअ़ है।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को ऐब नहीं लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते। (بخاری، کتاب الاطعمۃ، رقم ۵۴۰۹، ج۳، ص۵۳۱)

www.dawateislami.net

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : खाने में ऐ़ब निकालना अपने घर में भी न चाहिये, मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है । (सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमा लिया वरना नहीं। (रहा) पराए घर में ऐ़ब निकालना तो (इस में) मुसलमानों की दिल शिकनी है और कमाले हि़र्स व बे मुरुव्वती पर दलील है। "घी कम है या मज़े का नहीं" येह ऐ़ब निकालना है और अगर कोई शै इसे मुज़िर (नुक़्सान देती) है, उसे न खाने के लिये उ़ज़्र किया, उस का इज़्हार किया न (कि) बत़ौरे त़ा'न व ऐ़ब मसलन उस में मिर्च ज़ाइद है (और) इतनी मिर्च का येह आ़दी नहीं तो येह ऐ़ब निकालना नहीं और इतना भी (उस वक़्त है कि जब) बे तकल्लुफ़ी ख़ास की जगह हो और इस के सबब दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को और तक्लीफ़ न करनी पड़े मसलन दो क़िस्म का सालन है, एक में मिर्च ज़ाइद है और येह आ़दी नहीं तो उसे न खाए और वज्ह पूछी जाए तो बता दे। और अगर एक ही क़िस्म का खाना है, अब अगर (येह) नहीं खाता तो दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को इस के लिये कुछ और मंगाना पड़ेगा, उसे नदामत होगी और तंगदस्त है तो तक्लीफ़ होगी तो ऐसी ह़ालत में मुरुव्वत येह है कि सब्र करे और खाए और अपनी अज़िय्यत ज़ाहिर न करे। واللہ تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ आख़िर, स. 116)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तीसवीं क़िस्म बिला वज्हे शरई मुसलमान को डराना धमकाना

किसी मुसलमान को डराने या धमकी देने से उसे तक्लीफ़ पहुंचती है और येह ममनूअ़ है। सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसलमान को ना हक़ अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत पहुंचाई उस ने **अल्लाह** तआ़ला को अज़िय्यत दी।" (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، رقم ۳۰۹۲، ج ۲، ص ۳۹۹)

अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّیْطٰنُ یُخَوِّفُ اَوْلِیَآءَهٗ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "वोह तो शैत़ान ही है कि अपने दोस्तों से धमकाता है तो उन से न डरो और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।"

(پ۴، ال عمران: ۱۷۵)

ह़ज़रते आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसलमान को मत डराया करो कि मुसलमान को डराना ज़ुल्मे अ़ज़ीम है।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم ۴، ج ۳، ص ۳۱۸)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसलमान को बिला वज्ह डराया तो **अल्लाह** पर ह़क़ है कि उसे क़ियामत के दिन की हौलनाकियों से अम्न न दे।"

(طبرانی اوسط، رقم الحدیث ۲۳۵۰، ج ۲، ص ۲۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसलमान को ना ह़क़ घूर कर देखा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ियामत के दिन ख़ौफ़ में मुब्तला कर देगा।" (الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم ۷، ج ۳، ص ۳۱۹)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

इक्तीसवीं क़िस्म एक दूसरे के कान में बात करना (जब कि तीसरा मौजूद हो)

बिला ज़रूरत किसी की मौजूदगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर ख़ुफ़्या मश्वरा करना मकरूहे तह़रीमी है। इस की वज्ह येह है कि इस त़रह़ मश्वरा करने से तीसरे शख़्स को ईज़ा होगी और येह तश्वीश में मुब्तला होगा कि शायद येह लोग मेरी ग़ीबत कर रहे हैं या मुझ पर बोहतान लगा रहे हैं या मुझे इस क़ाबिल ही नहीं समझते या मुझे नुक़्सान पहुंचाना चाहते हैं वग़ैरा। (حدیقہ ندیہ، ج۲، ص۳۵۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तीन शख़्स एक जगह हों तो दो शख़्स तीसरे को छोड़ कर चुपके चुपके बातें न करें यहां तक कि मजलिस में बहुत से लोग न आ जाएं, येह इस वज्ह से है कि उस तीसरे को रंज पहुंचेगा।"

(بخاری، کتاب الاستئذان، باب اذا کانوا اکثر من ثلاثۃ الخ، رقم الحدیث ۶۲۹۰، ج۴، ص۱۸۵)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बत्तीसवीं क़िस्म अजनबिया से लज़्ज़त के साथ बातें करना

किसी अजनबी औ़रत से लज़्ज़त के साथ गुफ़्तगू करना या'नी उस की बातों या लह्जे...या...आवाज़ की नर्मी से लुत़्फ़ उठाना बाइ़से हलाकत है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ज़बान का ज़िना बात करना है।"

(بخاری، کتاب الاستئذان، باب زنا الجوارح دون الفرج، رقم الحدیث ۶۲۴۳، ج۴، ص۱۶۹)

www.dawateislami.net

मस्अला :

"तमाम महारिम से औरत को गुफ्तगू करना और उन्हें अपनी आवाज़ सुनवाना जाइज़ है और अगर कोई ह़ाजत हो और अन्देशए फ़ितना न हो और तन्हाई न हो तो पर्दे में रहते हुए बा'ज़ ना महरम से भी गुफ्तगू जाइज़ है।" (تسہیل من فتاوی رضویہ، ج ۱۰، نصف آخر، ص ۱۶۱)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेंतीसवीं क़िस्म गुनाह के काम पर राहनुमाई करना

गुनाह के काम पर किसी की राहनुमाई या इआ़नत करना ममनूअ़ है मसलन किसी को बताना कि फ़ुलां के घर में बहुत माल है अगर वोह चोरी कर लिया जाए तो क्या बात है ! या फ़ुलां सीनेमा में बड़ी ज़बरदस्त फ़िल्म दिखाई जा रही है चलो देख कर आते हैं तुम्हारा टिकट भी मैं भरूंगा.....

कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में रब तआ़ला फ़रमाता है : وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।" (پ۶، المآئدۃ: ۲)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चोंतीसवीं क़िस्म गुनाहों की इजाज़त देना

अपने मा तह़त लोगों को गुनाह की इजाज़त देना भी ज़बान की आफ़तों में से है। मसलन किसी मर्द का अपनी बीवी या बेटी या बेटे या

www.dawateislami.net

बहन वग़ैरहा को गुनाहों वाली जगह पर जाने की इजाज़त देना या किसी गुनाह के काम मसलन वी सी आर या केबल वग़ैरा पर फ़िल्म देखने की इजाज़त देना.....

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पेंतीसवीं क़िस्म किसी का मज़ाक़ उड़ाना

किसी के उ़यूब व नक़ाइस को इस त़रह़ ज़ाहिर करना कि लोग इस पर हंसें तमस्ख़ुर (मज़ाक़ उड़ाना) कहलाता है। इस के लिये कभी तो किसी के क़ौल या फ़े'ल की नक़्ल उतारी जाती है और कभी उस की त़रफ़ मख़्सूस अन्दाज़ में इशारे किये जाते हैं। येह इस लिये ममनूअ़ है कि इस में दूसरे मुसलमानों की तह़क़ीर और इहानत है,
रब तआ़ला फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों। (پ۲۶،الحجرات:۱۱)

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोगों से इस्तिह्ज़ा करने वालों के लिये रोज़े क़ियामत जन्नत का एक दरवाज़ा खोल कर कहा जाएगा "यहां आ जाओ" जब वोह परेशानी के आ़लम में दरवाज़े की त़रफ़ दौड़ कर आएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा येह अ़मल बार बार किया जाएगा यहां तक कि फिर उन में से एक के लिये दरवाज़ा खोला

www.dawateislami.net

जाएगा और उसे बुलाया जाएगा लेकिन वोह ना उम्मीद होने की वज्ह से नहीं आएगा।" (شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، رقم الحدیث ۶۷۵۷، ج۵، ص۳۱۰)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

छत्तीसवीं क़िस्म औ़रत का बिला वज्ह त़लाक़ मांगना

ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो औ़रत बिला ज़रूरते शरई शोहर से त़लाक़ मांगे उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है।"

(ابوداؤد، کتاب الطلاق، باب فی الخلع، رقم ۲۲۲۶ ج۲، ص۳۹۰)

अल्लाह तआ़ला हमारी इस्लामी बहनों को इस ह़वाले से अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सेंतीसवीं क़िस्म एक साथ तीन त़लाक़ देना

ह़ज़रते मह़मूद बिन लबीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर दी गई कि एक शख़्स ने अपनी बीवी को तीन त़लाक़ें इकठ्ठी दी हैं। येह सुनते ही हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़बनाक हो कर खड़े हो गए फिर फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला की किताब के साथ खेल किया जाता है ह़ालांकि मैं तुम्हारे अन्दर मौजूद हूं।" (نسائی، کتاب الطلاق، ج۳، ص۱۴۲)

इस से मा'लूम हुवा कि यकबारगी तीन त़लाक़ें देनी ह़राम हैं। मिरक़ात में इसी ह़दीस के तह़त है।

الحدیث یدل علی ان التطلیق بالثلث حرام لانه صلی الله تعالی علیه وسلم لا یصیر غضبان الا بمعصیة الخ

या'नी येह ह़दीस इस बात पर दलालत करती है कि तीन त़लाक़ें (एक

www.dawateislami.net

साथ) देना ह़राम है क्यूंकि सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुनाह के काम पर ही नाराज़ी का इज़हार फ़रमाते थे। (अन्वारुल ह़दीस, स. 263)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अड़तीसवीं क़िस्म शोहर और बीवी को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काना

ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रह़मते कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी शख़्स की बीवी को उस के ख़िलाफ़ भड़काए वोह हम में से नहीं है।"

(الترغیب والترہیب، کتاب النکاح، رقم ۱، ج ۳، ص ۵۹)

मुलाह़ज़ा हो कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ना पसन्दीदा क़रार दिया जाने वाला येह अ़मल शैत़ान को किस क़दर पसन्द है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "शैत़ान पानी पर अपना तख़्त बिछाता है, फिर अपने लश्कर भेजता है। उन लश्करों में इब्लीस के ज़ियादा क़रीब उस का दरजा होता है जो सब से ज़ियादा फ़ितना बाज़ होता है। एक लश्कर वापस आ कर बताता है कि मैं ने फ़ुलां फ़ितना बरपा किया तो शैत़ान कहता है : "तू ने कुछ भी नहीं किया।"

फिर एक और लश्कर आता है और कहता है : "मैं ने एक आदमी को उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई नहीं डाल दी।" येह सुन कर इब्लीस उसे अपने क़रीब कर लेता है और कहता है : "तू कितना अच्छा है!" और अपने साथ चिमटा लेता है। (الترغیب والترہیب، کتاب النکاح، رقم ۳، ج ۳، ص ۵۹)

www.dawateislami.net

उन्तालीसवीं क़िस्म इज़्हारे इबादत

अव्वल तो नफ़्सो शैत़ान इन्सान को इबादत की त़रफ़ राग़िब होने ही नहीं देते और अगर वोह उन को पछाड़ते हुए इबादत करने में कामयाब हो भी जाए तो उन की कोशिश होती है कि उस को सवाब से महरूम करवा दें लिहाज़ा ! येह उसे इस बात पर माइल करते हैं कि वोह अपनी नेकियों का ज़िक्र (बिला ह़ाजते शरई) लोगों से करे और यूं येह नफ़्सो शैत़ान अपने मज़मूम मक़्सद में कामयाब हो जाते हैं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उन्हों ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो शख़्स लोगों में अपने अ़मल का चर्चा करेगा तो ख़ुदा तआ़ला उस की (रियाकारी) लोगों में मश्हूर कर देगा और उस को ज़लीलो रुस्वा करेगा।" (مشکوۃ المصابیح، کتاب الرقاق، رقم ۵۳۱۹، ج ۳، ص ۱۳۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** तआ़ला अव्वलीन व आख़िरीन को क़ियामत के उस दिन में जम्अ़ फ़रमाएगा जिस में कोई शक नहीं है तो एक मुनादी येह निदा करेगा कि जिस शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी अ़मल में दूसरे को शरीक किया था तो वोह उस का सवाब भी ग़ैरुल्लाह से त़लब करे क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला शरीक से बे नियाज़ है।"

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، ص ۴۷۰، رقم ۴۲۰۳)

नफ़्से बदकार ने दिल पे येह क़ियामत तोड़ी
अ़मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

चालीसवीं क़िस्म झूटा वा'दा करना

क़ुरआने मजीद में है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो अपने क़ौल पूरे करो। (پ٦، المائدہ:١)

मक्की मदनी सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी मुसलमान से अ़ह्द शिकनी करे, उस पर अल्लाह तआ़ला, फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।" (بخاری، رقم الحدیث ١٨٧٠، ج١، ص٦١٦)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "चार अ़लामतें जिस शख़्स में होंगी वोह ख़ालिस मुनाफ़िक़ होगा और इन में से एक अ़लामत हुई तो उस शख़्स में निफ़ाक़ की एक अ़लामत पाई गई यहां तक कि उस को छोड़ दे, (1) जब अमानत दी जाए तो ख़ियानत करे, (2) जब बात करे तो झूट बोले, (3) जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे (4) जब झगड़ा करे तो गाली बके। (بخاری، ج١، ص١٧، رقم ٣٤)

मस्अला :

अगर किसी से कोई काम करने का वा'दा किया और वा'दा करते वक़्त निय्यत में फ़रेब न हो फिर बा'द में उस काम को करने में कोई ह़रज पाया जाए तो इस वज्ह से उस काम को न करना वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं कहलाएगा, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "वा'दा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की भी हो बल्कि वा'दा ख़िलाफ़ी येह है कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की न हो।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 89)

www.dawateislami.net

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ الرَّحْمَة लिखते हैं : "वा'दा किया मगर उस को पूरा करने में कोई शरई क़बाह़त थी इस वज्ह से पूरा नहीं किया तो इस को वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं कहा जाएगा और वा'दा ख़िलाफ़ी का जो गुनाह है इस सूरत में नहीं होगा अगर्चे वा'दा करते वक़्त उस ने इस्तिस्ना न किया हो कि यहां शरीअ़त की त़रफ़ से इस्तिस्ना मौजूद है इस को ज़बान से कहने की ज़रूरत नहीं मसलन वा'दा किया था कि "मैं फ़ुलां जगह पर आऊंगा और वहां बैठ कर तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा।" मगर जब वहां गया तो देखता है कि नाच रंग और शराब नोशी वग़ैरा में लोग मसरूफ़ हैं, (लिहाज़ा !) वहां से चला आया तो येह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं है, या उस का इन्तिज़ार करने का वा'दा किया और इन्तिज़ार कर रहा था कि नमाज़ का वक़्त आ गया, येह चला आया (तो येह) वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं हुवा।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 4, स. 709)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

इक्तालीसवीं क़िस्म एह़सान जताना

हमारे मुआ़शरे में अव्वल तो कोई किसी की मदद करने को तय्यार नहीं होता और अगर मदद कर भी दे तो उ़मूमन किसी न किसी मौक़अ़ पर एह़सान जता देता है मसलन आज मेरे सामने बोलते हो, मेरा एह़सान मानो कि मैं ने ही तुम्हें येह हुनर सिखाया है,.....आज मुझे मसाइल समझाते हो, मेरा शुक्रिय्या अदा करो कि तुम्हें वुज़ू करना भी मैं ने सिखाया है, वग़ैरा....और यूं अपना सवाब ज़ाएअ़ कर बैठता है।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो ! अपने सदक़े बातिल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।" (پ۳،البقرۃ:۲۶۴)

लिहाज़ा ! इन्सान को चाहिये कि किसी को सदक़ा देने या उस की मदद करने के बा'द हरगिज़ एह़सान न जताए।

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बयालीसवीं क़िस्म शिक्वा व शिकायत पर मुश्तमिल कलिमात बोलना

मसाइब से घबरा कर शिक्वा व शिकायत में मुब्तला हो जाने को फ़ी ज़माना बहुत मा'मूली तसव्वुर किया जाता है। सद हैफ़ ! इल्मे दीन से दूर हमारे मुसलमानों की अक्सरिय्यत इस मज़मूम आ़दत में मुब्तला है। **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ "और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।" (پ۱۳،ابراہیم:۷)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने जहन्नम में ज़ियादा ता'दाद औ़रतों की देखी तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस की क्या वज्ह है ?" तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उन के नाशुक्री करने की वज्ह से।" तो सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या औ़रतें ख़ुदा की नाशुक्री किया करती हैं ?" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि औ़रतें एह़सान की नाशुक्री करती हैं और अपने शोहरों की ना शुक्री करती हैं। इन औ़रतों की येह आ़दत है कि तुम ज़िन्दगी भर इन के साथ एह़सान करते रहो लेकिन अगर कभी कुछ भी कमी देखेंगी तो येही कह देंगी कि मैं ने कभी भी तुम्हारी त़रफ़ से कोई भलाई देखी ही नहीं।"

(بخاری، کتاب النکاح، باب کفران العشیر ..الخ، رقم ۵۱۹۹، ج۳، ص۴۶۳)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेंतालीसवीं क़िस्म किसी के उ़यूब उछालना

किसी का ऐ़ब मा'लूम हो जाने पर उसे किसी दूसरे पर ज़ाहिर करने की बजाए ख़ामोशी इख़्तियार करना बहुत कम लोगों को नसीब होता है। बद क़िस्मती से अक्सरिय्यत ऐसे लोगों की है कि जब तक हर जानने वाले पर उस ऐ़ब को बयान न कर लें उन्हें चैन नहीं आता।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने भाई की पर्दापोशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा और जो अपने भाई के राज़ खोलेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का राज़ ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि वोह अपने घर ही में रुस्वा हो जाएगा।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الحدود، باب الستر علی المومن، رقم ۲۵۴۶، ج۳، ص۲۱۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने किसी मोमिन को मुनाफ़िक़ से बचाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो क़ियामत के दिन उस के गोश्त को जहन्नम से बचाएगा और जिस ने किसी मुसलमान को रुस्वा करने के लिये कोई बात कही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम के पुल पर रोक लेगा यहां तक कि वोह अपने क़ौल की सज़ा भुगत ले।" (ابوداؤد، کتاب الادب، باب من رد عن مسلم غیبۃ، رقم ۴۸۸۳، ج۴، ص۳۵۵)

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

चवालीसवीं क़िस्म नुजूमी वग़ैरा से फ़ाल पूछना

हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स काहिन और नुजूमी के पास जा कर कुछ दरयाफ़्त करे उस की चालीस दिन की नमाज़ें क़बूल नहीं की जाएंगी।" (مسلم، رقم ۲۲۳۰، ص ۱۲۲۵)

जब कि हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि कुछ लोगों ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से काहिनों की बाबत (उन की बातें क़ाबिले ए'तिमाद होने या न होने के बारे में) पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बा'ज़ वक़्त वोह (या'नी काहिन वग़ैरा) ऐसी ख़बर देते हैं जो सच हो जाती हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वोह कलिमए हक़ है जिस को शैतान (फ़िरिश्तों से) उचक लेता है और अपने दोस्त काहिन के कान में इस तरह डाल देता है जिस तरह एक मुर्ग़ी दूसरी मुर्ग़ी के कान में आवाज़ पहुंचाती है फिर वोह काहिन उस कलिमए हक़ में सो से ज़ियादा झूटी बातें मिला देते हैं।

(مسلم، باب تحریم الکھانۃ، رقم ۲۲۲۸، ص ۱۲۲۴)

इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

काहिनों और ज्योतिशियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना, अगर बतौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं हक़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है, इसी को हदीस में फ़रमाया :

فقد کفر بما نزل علی محمد صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या'नी उस ने मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल होने वाली शै का इन्कार किया।

और अगर बतौरे ए'तिक़ाद व तयक़्कुन न हो मगर मेल व रग़बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है, और अगर बतौरे हज़्ल व इस्तिहज़ा हो तो अबस व मकरूह व हमाक़त है, हां अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी उसे आजिज़ करने के लिये) हो तो हरज नहीं।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ सानी, स. 71)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला हमें इस ह़वाले से भी अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(2) नफ़्अ़ बख़्श कलाम

इस कलाम के ज़रीए नफ़्अ़ कमाने में सुस्ती नहीं करनी चाहिये। सरवरे कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रह़म फ़रमाए जो कलाम करता है तो नफ़्अ़ ह़ासिल करता है या ख़ामोश रह कर सलामती ह़ासिल करता है।"

(شعب الایمان، رقم ۴۹۳۸ ج ۴، ص ۲۴۱)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छी बात के इ़लावा अपनी ज़बान क़ाबू में रखो क्यूंकि इस के ज़रीए शैत़ान, इन्सान पर ग़ालिब आ जाता है।" (الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم: ۲۹، ج ۳، ص ۳۴۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

नुक़्सान देह कलाम की त़रह़ नफ़्अ़ बख़्श कलाम की भी कई सूरतें हैं, बत़ौरे तरग़ीब नफ़्अ़ बख़्श कलाम की चन्द सूरतें और इस से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद की तफ़्सील मुलाह़ज़ा हो :

(1) तिलावते क़ुरआन करना

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "क़ुरआन पढ़ा करो क्यूंकि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेगा।" (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ القرآن، رقم ۲۵۲، ص ۴۰۳)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रोज़े और क़ुरआन क़ियामत के दिन बन्दे के लिये शफ़ाअ़त करेंगे रोज़ा अ़र्ज़ करेगा :

www.dawateislami.net

या रब عَزَّوَجَلَّ मैं ने इसे दिन में खाने पीने और ख़्वाहिशात से रोक दिया था लिहाज़ा मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा जब कि क़ुरआन कहेगा : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ मैं ने इसे रात को सोने से रोक दिया था लिहाज़ा मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा फिर उन दोनों की शफ़ाअ़त क़बूल कर ली जाएगी।" (مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن عاص، رقم ۶۶۳۷، ج۲، ص۵۸۶)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक आयत तवज्जोह के साथ सुनी उस के लिये एक नेकी इज़ाफ़े के साथ लिखी जाएगी और जिस ने उस की तिलावत की वोह आयत उस के लिये क़ियामत के दिन नूर बन जाएगी।"

(مسند احمد، مسند ابی ہریرہ، رقم ۸۵۰۲، ج۳، ص۲۴۵)

(4) ह़ज़रते मुआ़ज़ जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ुरआन को पढ़े और उस पर अ़मल करे तो क़ियामत के दिन उस के मां और बाप को ऐसा ताज पहनाया जाएगा कि उस की रोशनी दुन्या के सूरज की रोशनी से बढ़ कर होगी जब कि सूरज को इतना क़रीब फ़र्ज़ कर लिया जाए फिर तुम समझ सकते हो कि जब मां बाप का येह मर्तबा होगा तो उस शख़्स का क्या दरजा होगा जिस ने क़ुरआने करीम पर अ़मल किया। (مسند احمد، ج۵، رقم ۱۵۶۴۵، ص۳۱۴)

(5) ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स किताबुल्लाह में से एक ह़र्फ़ पढ़े तो उस को हर ह़र्फ़ के बदले में एक नेकी मिलेगी और हर नेकी दस नेकियों के बराबर होगी। मैं الم को एक ह़र्फ़ नहीं कहता बल्कि الف एक ह़र्फ़ है, لام एक ह़र्फ़ है और میم एक ह़र्फ़ है।"

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، رقم ۲۹۱۹، ج۴، ص۴۱۷)

www.dawateislami.net

नोट : कुरआन में कुल 3212670 हुरूफ़ हैं तो पूरे कुरआन की तिलावत से 3212670 नेकियां मिलेंगी। (अन्वारुल हदीस, स. 273)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान तिलावते कुरआन में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(2) ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।" (پ۱۳، الرعد:۲۸)

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।" (پ۲، البقرۃ:۱۵۲)

एक और मक़ाम पर है :

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।" (پ۲۸، الجمعۃ:۱۰)

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के उस गुमान के क़रीब हूं जो वोह मुझ से करता है और जब वोह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ होता हूं तो अगर वोह मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उसे तन्हा याद करता हूं और

www.dawateislami.net

अगर वोह मेरा ज़िक्र मजमअ़ में करता है तो मैं उस से बेहतर मजमअ़ में उस का ज़िक्र करता हूं अगर वोह एक बालिश्त मुझ से क़रीब होता है तो मैं एक हाथ उस के क़रीब हो जाता हूं और अगर वोह एक हाथ मेरे क़रीब आता है तो मैं उस से दो हाथ क़रीब हो जाता हूं और अगर वोह मेरे पास चलते हुए आता है तो मेरी रह़मत उस के पास दौड़ती हुई आती है।" (بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ ویحذرکم اللہ نفسہ، رقم ۷۴۰۵، ج۴، ص۵۴۱)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "फ़िरिश्ते, **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करने वालों को रास्तों में तलाश करते रहते हैं और जब उन्हें ज़िक्रे इलाही करने वाले लोग मिल जाते हैं, तो निदा करते हैं कि "आओ तुम्हारी मुराद पूरी हो गई, ज़िक्र करने वाले मिल गए हैं।" फिर फ़िरिश्ते उन ज़िक्र करने वालों को आस्मान तक अपने परों से ढांप लेते हैं। जब येह फ़िरिश्ते **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उन से दरयाफ़्त फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे क्या कर रहे थे ?" ह़ालांकि वोह फ़िरिश्तों से ज़ियादा जानता है। वोह अ़र्ज़ करते हैं : "या रब ! वोह तेरी तस्बीह़ व तह़मीद व तक्बीर और तेरी बुज़ुर्गी का तज़किरा कर रहे थे।"

फिर **अल्लाह** तआ़ला दरयाफ़्त फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने मुझे देखा है ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "तेरी ज़ात की क़सम उन्हों ने तुझे हरगिज़ नहीं देखा।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि "अगर वोह मुझे देख लेते तो क्या करते ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "फिर तो तेरी इ़बादत व तस्बीह़ व अ़ज़मत का बयान ज़ियादा करते।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "वोह क्या मांग रहे थे ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "या रब ! वोह जन्नत त़लब कर रहे थे।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने जन्नत को देखा है ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "नहीं।"

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : "अगर वोह उसे देख लेते तो ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "तो और ज़ियादा उस की ह़िर्स व त़लब करते और मज़ीद रग़बत रखते ।"

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : "वोह किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "या रब्बे करीम ! वोह जहन्नम से पनाह मांग रहे थे ।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "अगर वोह जहन्नम को देख लेते तो क्या करते ।" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "तो फिर उस से फ़रार ह़ासिल करने में और ज़ियादा कोशिश करते और बहुत ज़ियादा डरते ।" तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि "गवाह हो जाओ, मैं ने उन लोगों की मग़फ़िरत फ़रमा दी ।" उन में से एक फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : "या इलाही ! उन में एक ऐसा शख़्स भी था, जो ज़िक्र करने वालों में से नहीं था, बल्कि अपने किसी काम से आया था और उन में बैठ गया था ।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "ऐ फ़िरिश्तो ! जो ज़िक्र करने वालों के साथ बैठ जाए, वोह भी मह़रूम नहीं रहता ।"

(مسلم کتاب الذکر والدعاء، باب فضل مجالس الذکر، رقم ۲۶۸۹، ص ۱۴۴۴)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हारे आ'माल में से उन आ'माल की ख़बर न दूं कि जो आ'माल में से सब से बेहतर, तुम्हारे मालिक के नज़दीक सब से ज़ियादा पाकीज़ा, दरजात के लिह़ाज़ से बुलन्दो बाला और ख़र्च के ए'तिबार से ज़र व माल से भी बेहतर हैं ? और इस से भी कि तुम किसी दुश्मन का सामना करो और फिर वोह तुम्हारी गर्दनें काट दें और तुम उन की गर्दनें काट दो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर ख़बर दीजिये ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना ।" (ترمذی، کتاب الدعوات، باب فضل الذکر، رقم ۳۳۸۷، ج ۵، ص ۲۴۵)

www.dawateislami.net

(4) हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि "इस्लाम की बेहतरीन ख़स्लतें क्या हैं ?" फ़रमाया : "किसी से दोस्ती करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये और किसी से दुश्मनी करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये और तेरी ज़बान पर **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र जारी रहे ।"

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الایمان، الفصل الثالث، رقم ۴۸، ج ۱، ص ۵۷)

(5) हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते : "हर शै के लिये कोई न कोई सफ़ाई करने वाली शै होती है और दिलों की सफ़ाई ख़ुदा के ज़िक्र से होती है ।" (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر، رقم ۱۰، ج ۲، ص ۲۵۴)

(6) हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "जब कोई क़ौम जम्अ़ हो कर **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करती है, तो शैत़ान और दुन्या उस से हट जाते हैं । शैत़ान, दुन्या से कहता है : "क्या तू देख नहीं रही कि येह क्या कर रहे हैं ?" वोह जवाब देती है : "इन्हें छोड़ दे, क्यूंकि जब येह मुतफ़र्रिक़ होंगे, तो मैं इन की गर्दनें पकड़ पकड़ कर तेरे पास लाऊंगी ।" (مکاشفۃ القلوب، الباب السابع والاربعون فی فضل ذکر اللہ تعالٰی، ص ۱۷۸)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान ज़िक्रुल्लाह में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(3) दुरूदे पाक पढ़ना

अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।" (پ۲۲سورۃ الاحزاب آیت ۵۶)

उम्र में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब, ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने और अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए तो हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। (बहारे शरीअ़त, जिल्द 1, स. 533 मक्तबतुल मदीना)

सरकारे मदीना, फ़ैज़ गंजीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के बे शुमार फ़ज़ाइल अह़ादीसे मुबारका में वारिद हुए हैं, चन्द रिवायात पेशे ख़िदमत हैं,

(1) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"

(مسند ابی یعلی، رقم الحدیث ۲۹۰۱، ج۳، ص۹۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ा और कहा : اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।" (المعجم الاوسط، رقم الحدیث ۳۲۸۵، ج۲، ص۲۷۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।" (الجامع الصغیر، رقم الحدیث ۱۴۰۶، ج۲، ص۱۱۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(4) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है। कहता है : फुलां बिन फुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है।" (مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، رقم الحدیث ۱۷۲۹۱، ج ۱۰، ص ۲۵۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की सो हाजात पूरी फ़रमाएगा, उन में से तीस दुन्या की हैं और सत्तर आख़िरत की।"

(کنز العمال، کتاب الاذکار، رقم الحدیث ۲۲۲۹، ج ۱، ص ۲۵۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने येह कहा جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّا هُوَ اَهْلُهٗ तो सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक उस के लिये नेकियां लिखते रहेंगे।" (المعجم الکبیر، رقم الحدیث ۱۱۵۰۹، ج ۱۱، ص ۱۶۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।" (ترمذی، کتاب الوتر، ج ۲، ص ۲۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(8) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़मत भेजेगा।"

(تفسیر درمنثور، ج۶، ص۶۵۴)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।" (فردوس الاخبار، رقم الحدیث ۸۲۱۰، ج۲، ص۴۷۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।"

(مجمع الزوائد، رقم الحدیث ۱۷۲۹۸، ج۱۰، ص۲۵۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء ج۲، ص۳۲۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा

www.dawateislami.net

दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।" (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر، ج۲، ص۳۲۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान दुरूदे पाक पढ़ने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

(4) ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ना

सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र नूरे ईमान व सुरूरे जान है और आप का ज़िक्र बिऐनिही ज़िक्रे रह़मान عَزَّوَجَلَّ है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।" (پ۳۰، الم نشرح:۴)

ह़दीस शरीफ़ में है कि इस आयते करीमा के नुज़ूल के बा'द सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िरे बारगाह हुए और अ़र्ज़ की : "आप का रब फ़रमाता है क्या तुम जानते हो कि मैं ने कैसे बुलन्द किया तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र?" नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया, اَللّٰهُ اَعْلَمُ इरशाद हुवा : "ऐ मह़बूब मैं ने तुम्हें अपनी यादों में से एक याद किया कि जिस ने तुम्हारा ज़िक्र किया बेशक उस ने मेरा ज़िक्र किया।" (ماخوذ من فتاوٰی رضویہ، ج۱۰، نصف آخر، ص۱۴۵)

ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मिम्बर शरीफ़ पर खड़े हो कर ना'ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ा करते थे और सुनने वालों में हमारे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी शामिल होते थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते : "ऐ **अल्लाह**! रूहुल कुद्स के ज़रीए ह़स्सान की मदद फ़रमा।" ज़ौक़ में इज़ाफ़े के लिये सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का एक ना'तिया शे'र मुलाह़ज़ा हो, आप फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

وَاَحْسَنُ مِنْکَ لَمْ تَرَقَطُّ عَیْنِیْ وَاَجْمَلُ مِنْکَ لَمْ تَلِدِ النِّسَاءُ
خُلِقْتَ مُبَرَّاءً مِّنْ کُلِّ عَیْبٍ کَاَنَّکَ قَدْ خُلِقْتَ کَمَاتَشَاءُ

तर्जमा : 1) आप से बढ़ कर कोई ह़सीन कभी मेरी आंख ने देखा ही नहीं,

2) आप से बढ़ कर ह़सीनो जमील किसी औ़रत ने नहीं जना,

3) आप हर ऐ़ब से पाक पैदा किये गए हैं,

4) गोया कि आप को वैसा ही पैदा किया गया जैसा आप चाहते थे। (سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान ना'ते रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(5) शुक्रे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करना

अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

لَئِنْ شَکَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّکُمْ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा।" (پ۱۳، ابراھیم:۷)

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है। शुक्र की अस्ल येह है कि आदमी ने'मत का तसव्वुर और इस का इज़्हार करे और ह़क़ीक़ते शुक्र येह है कि मुनइ़म (या'नी ने'मत देने वाले) की ने'मत का उस की ता'ज़ीम के साथ ए'तिराफ़ करे और नफ़्स को उस का ख़ूगर बनाए।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला इस बात पर बहुत खुश होता है कि बन्दा हर निवाले और हर घूंट पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे।" (ترمذی، باب ماجاء فی الحمد علی الطعام، ص ۱۸۳۶)

और हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अफ़्ज़ल माल, ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और नेक मोमिना बीवी जो ईमान पर अपने शोहर की मददगार हो।"

(ترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورۃ التوبۃ، رقم ۳۱۰۵، ص ۶۵)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान शुक्र करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(6) इल्मे दीन सिखाना

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सिर्फ़ दो चीज़ों पर रश्क करना अच्छा है एक वोह शख़्स जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वोह उस को नेकी के रास्ते में ख़र्च करता हो और दूसरा वोह शख़्स जिसे अल्लाह तआ़ला ने दीन का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और वोह इस के मुताबिक़ फ़ैसले करता और दूसरों को येह इ़ल्म सिखाता हो।" (بخاری، کتاب العلم، رقم ۷۳، ج ۱ ص ۴۳)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान इ़ल्मे दीन सिखाने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(7) सालिहीन का ज़िक्रे ख़ैर करना

रिवायत में है : عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَۃُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (کشف الخفاء رقم ۱۷۷۰، ج ۲، ص ۶۵)

www.dawateislami.net

लिहाज़ा ! अपने अस्लाफ़ की ह़यातें मुक़द्दसा के रोशन अबवाब लोगों के सामने बयान करना ताकि वोह भी उन अकाबिरीन के नक़्शे क़दम पर चलें, ख़ैरो बरकत का बाइ़स है।

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान सालिह़ीन का ज़िक्र करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(8) नेकी की दा'वत देना

सूरए حٰمٓ السجدۃ में है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसलमान हूं।" (پ۲۴، السجدۃ:۳۳)

रह़मते कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नेकी की त़रफ़ राहनुमाई करने वाला भी नेकी करने वाले की त़रह़ है।"

(جامع ترمذی، رقم ۲۶۷۹، ج۴، ص۳۰۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए, उसे नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे तो उस की जज़ा क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं उस की हर बात पर एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।"

(مکاشفۃ القلوب، باب فی الامر والمعروف، ص۴۸)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान नेकी की दा'वत देने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

(9) खाने और पीने से पहले بِسۡمِ اللّٰہِ पढ़ना

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने कहा कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस खाने पर بِسۡمِ اللّٰہِ न पढ़ी जाए उस खाने को शैत़ान अपने लिये ह़लाल समझता है। (مسلم، رقم ۲۰۱۷، ص ۱۱۱۶)

और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऊंट की त़रह़ एक सांस में कोई चीज़ न पियो। बल्कि दो तीन मरतबा पियो और जब पियो بِسۡمِ اللّٰہِ कह लो और जब मुंह से हटाओ तो اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ कहो।

(ترمذی، کتاب الاشربۃ، رقم ۱۸۹۲، ج ۳، ص ۳۵۲)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान खाने और पीने से पहले بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(10) खाने या पीने के बा'द ह़म्दे इलाही बजा लाना

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे से यक़ीनन राज़ी होता है जो खाना खाता है तो इस पर उस की ह़म्द बजा लाता है और पानी पीता है तो इस पर भी उस की ह़म्दो सना करता है।

(الترغیب والترہیب، کتاب الطعام، رقم، ج ۳، ص ۱۰۷)

www.dawateislami.net

(11) किसी के ऐ़यूब की पर्दापोशी करना

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी मुसलमान की पर्दापोशी करे **अल्लाह** उस की दुन्या व आख़िरत में पर्दापोशी करेगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الحدود، باب الستر علی المسلمین، رقم الحدیث ۱۰۴۷۲، ج ۶، ص ۳۷۱)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो मुसलमान किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद न करे जहां उस की इ़ज़्ज़त पामाल की जा रही हो और उसे गालियां दी जा रही हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह रुस्वा करेगा जहां वोह अपनी मदद का ख़्वाहिश मन्द होगा और जो मुसलमान किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करे जहां उसे गालियां दी जा रही हों और उस की इ़ज़्ज़त पामाल की जा रही हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ऐसी जगह मदद फ़रमाएगा जहां वोह अपनी मदद का ख़्वाहिश मन्द होगा।"

(ابوداود، کتاب الادب، باب من رد عن مسلم غیبۃ، رقم ۴۸۸۴، ج ۴، ص ۳۵۵)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान इस्लामी भाइयों की पर्दापोशी में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(12) मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ करवाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَاخَیْرَ فِیْ کَثِیْرٍ مِّنْ نَّجْوٰھُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَیْنَ النَّاسِ وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِکَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِیْهِ اَجْرًا عَظِیْمًا

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन के अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुल्ह़ करने का और जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अ़न क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।" (پ۵،سورۃ النساء:۱۱۴)

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَاالْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوااللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुसलमान मुसलमान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करो और **अल्लाह** से डरो कि तुम पर रह़मत हो।"

(پ۲۶سورۃ الحجرات:۱۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें रोज़ा, नमाज़ और सदक़े के दरजे से अफ़्ज़ल अ़मल न बताऊं ?" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" इरशाद फ़रमाया : "वोह रूठे हुओं में सुल्ह़ करा देना है क्यूंकि रूठे हुओं में फ़साद डालना ख़ैर को काट देता है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، رقم۴۹۱۹، ج۴، ص۳۶۵)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब से अफ़्ज़ल सदक़ा रूठे हुए लोगों में सुल्ह़ करा देना है।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم۶، ج۳، ص۳۲۱)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मुआ़मला दुरुस्त फ़रमा देगा और उसे हर कलिमा बोलने पर एक ग़ुलाम आज़ाद

www.dawateislami.net

करने का सवाब अ़ता फ़रमाएगा और वोह जब लौटेगा तो अपने पिछले गुनाहों से मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर लौटेगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم ۹، ج ۳، ص ۳۲۱)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान मुसलमानों में सुल्ह़ करवाने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(13) ग़म ख़्वारी करना

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत (या'नी उस की ग़म ख़्वारी) करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत दुन्या भी नहीं हो सकती।'' (المعجم الاوسط، رقم ۹۲۹۲، ج ۶، ص ۴۲۹)

(2) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने किसी मुसीबत ज़दा की ता'ज़ियत की तो उसे मुसीबत ज़दा के बराबर अज्र मिलेगा।''

(الترغیب والترہیب، رقم ۶، ج ۴، ص ۱۷۹)

(3) ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की इ़यादत को गया तो वापस होने तक हमेशा जन्नत के फल चुनने में रहा।'' (بخاری، رقم الحدیث ۲۵۶۸، ص ۱۳۸۹)

(4) ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो मुसलमान किसी मुसलमान की

www.dawateislami.net

इ़यादत के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ होगा।" (سنن الترمذی، رقم الحدیث ۹۷۱، ج۲، ص۲۹۰)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान किसी ग़मज़दा की ग़म ख़्वारी करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(14) किसी की इ़ज़्ज़त बचाना

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने दुन्या में अपने भाई की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की तो रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो जहन्नम से उस की ह़िफ़ाज़त करेगा।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب وغیرہ، الترہیب من الغیبۃ، رقم الحدیث ۳۹، ج۳، ص۳۳۴)

और ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने अपने भाई की इ़ज़्ज़त का दिफ़ाअ़ किया **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत उस से जहन्नम का अ़ज़ाब दूर कर देगा और फिर हुज़ूर ने आयते मुबारका तिलावत की : **وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ** **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।" (پ۲۱، الروم: ۴۷)

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم الحدیث ۳۷، ج۳، ص۳۳۴)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान इस्लामी भाई की इ़ज़्ज़त का दिफ़ाअ़ करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

(15) सच बोलना

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّاللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًاعَظِيْمًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और सच्चे और सच्चियां और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां उन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।" (پ۲۲،سورۃ الاحزاب:۳۵)

(1) ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "सच्चाई को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि येह नेकी के साथ है और येह दोनों जन्नत में हैं और झूट से बचते रहो क्यूंकि येह गुनाह के साथ है और येह दोनों जहन्नम में हैं।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، باب الکذب، رقم ۵۷۰۴، ج۷، ص۴۹۴)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सच इन्सान को भलाई की त़रफ़ ले जाता और भलाई जन्नत की त़रफ़ ले जाती है इन्सान

www.dawateislami.net

सच बोलता रहता है यहां तक कि **अल्लाह** के नज़दीक सच्चा लिखा जाता है और झूट इन्सान को बुराई की त़रफ़ ले जाता और बुराई जहन्नम की त़रफ़ ले जाती है, इन्सान झूट बोलता रहता है यहां तक कि **अल्लाह** के नज़दीक झूटा लिखा जाता है।" (بخاری، کتاب الادب، رقم الحدیث ۶۰۹۴، ج۴، ص۱۲۵)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान सच बोलने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(16) जाइज़ सिफ़ारिश करना

ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब मदनी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में कोई साइल या ज़रूरत मन्द ह़ाज़िर होता तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते : "(ह़ाजत रवाई में) उस की सिफ़ारिश करो अज्र पाओगे, **अल्लाह** तआ़ला अपने रसूल के ज़रीए़ जो चाहता है फ़ैसला करता है।"

(صحیح بخاری، کتاب الادب، رقم ۶۰۲۷، ج۴، ص۱۰۷)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सिफ़ारिश कर के अज्र पाओ, तुम में से किसी की ह़ाजत देख कर मैं उसे ज़ेह्न नशीन कर लेता हूं कि कब तुम उसे ह़ल करवा कर अज्र पाओगे ?"

(ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی الشفاعۃ رقم ۵۱۳۲، ج۴، ص۴۳۱)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान जाइज़ सिफ़ारिश करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(17) अज़ान देना

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अज़ान की इन्तिहा तक

www.dawateislami.net

मुअज़्ज़िन की मग़फ़िरत कर दी जाती है और उस के लिये हर ख़ुश्को तर चीज़ इस्तिग़फ़ार करती है।" (مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمر بن خطاب، رقم ۶۲۱۰، ج ۲، ص ۵۰۰)

(2) ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "सवाब के लिये अज़ान देने वाला उस शहीद की मानिन्द है जो ख़ून में लिथड़ा हुवा हो और जब मरेगा तो क़ब्र में उस के जिस्म में कीड़े नहीं पड़ेंगे।" (الترغیب والترہیب، ج ۱، ص ۱۱۲)

(3) सुल्ताने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने ईमान की बिना पर हुसूले सवाब के लिये पांचों नमाज़ों की अज़ान कही उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।"

(کنز العمال، رقم ۲۰۹۰۲، ص ۲۸۷)

अल्लाह तआला हमें अपनी ज़बान अज़ान देने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(18) अज़ान व इक़ामत का जवाब देना

(1) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब मुअज़्ज़िन اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे तो तुम में से कोई اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहे तो वोह शख़्स اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ कहे तो वोह शख़्स اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ कहे तो वोह शख़्स لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ कहे तो वोह शख़्स لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहे, फिर जब मुअज़्ज़िन اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे तो वोह शख़्स

www.dawateislami.net

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ کहे और जब मुअज़्ज़िन لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहे और येह शख़्स दिल से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहे तो जन्नत में दाख़िल होगा।''

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل قول المؤذن الخ، رقم ۳۸۵، ص ۲۰۳)

(2) एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ ख़वातीन के गुरौह ! जब तुम बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अज़ान और इक़ामत सुनो तो जैसे येह कहे तुम भी उसी त़रह़ कह लिया करो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर कलिमे के बदले एक लाख नेकियां लिखेगा और एक हज़ार दरजात बुलन्द फ़रमाएगा और एक हज़ार गुनाह मिटाएगा।'' येह सुन कर अ़र्ज़ की : ''येह फ़ज़ीलत तो औ़रतों के लिये है मर्दों के लिये क्या है ?'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मर्दों के लिये इस से दुगना सवाब है।''

(کنز العمال، رقم ۲۱۰۰۶، ج ۷، ص ۲۸۷)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक साहिब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजूदगी में फ़रमाया : ''क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है !'' इस पर लोग मुतअ़ज्जिब हुए क्यूंकि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे, एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के घर गए और उन की बेवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये। उन्हों ने जवाब दिया : ''और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे।'' (ملخص من ابن عساکر، ج ۴۰، ص ۴۱۲)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान अज़ान व इक़ामत का जवाब देने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(19) अज़ान के बा'द दुआ़ मांगना

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अज़ान सुनने के बा'द येह दुआ़ पढ़ेगा क़ियामत के दिन उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त ह़लाल होगी,

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّامَّۃ وَالصَّلٰوۃِ الْقَائِمَۃِ آتِ مُحَمَّداً ن

الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْداً ن الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ

तर्जमा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ उस कामिल दा'वत और क़ाइम की जाने वाली नमाज़ के रब मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा और उन्हें उस मक़ामे मह़मूद पर पहुंचा जिस का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है।" (صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء عند النداء، رقم ۶۱۴، ج۱ص۲۲۴)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान अज़ान के बा'द इस दुआ़ के मांगने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(20) दुआ़ मांगना

(1) हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं जो तुम्हें दुश्मनों से नजात दिलाए और तुम्हारे रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दे? अपने दिन और रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगा करो क्यूंकि दुआ़ मोमिन का हथियार है।"

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، رقم ۱۷۱۹۹، ج۱۰، ص۲۲۱)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दुआ मोमिन का हथियार, दीन का सुतून और ज़मीनो आस्मान का नूर है।"

(مستدرک، کتاب الدعاء والتکبر والذکر، رقم ۱۸۵۵، ج ۲، ص ۱۶۲)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दुआ इबादत का मग़्ज़ है।" (ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، رقم ۳۳۸۲، ج ۵، ص ۲۴۳)

(4) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एह़तियात़ तक़्दीर से बे नियाज़ नहीं करती और दुआ नाज़िल शुदा और ग़ैर नाज़िल शुदा आफ़ात से नफ़्अ़ देती है और जब कोई आफ़त नाज़िल होती है तो उस का सामना दुआ से होता है और दोनों क़ियामत तक लड़ती रहती हैं। (مستدرک للحاکم، رقم ۱۸۵۶، ج ۲، ص ۱۶۲)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान दुआ मांगने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(21) नर्म गुफ़्तगू करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें उस शख़्स के बारे में ख़बर दूं जिस पर जहन्नम ह़राम है ! जहन्नम नर्म ख़ू नर्म दिल और आसान ख़ू शख़्स पर ह़राम है।"

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۴۹۶، ج ۴، ص ۲۲۰)

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं सय्यिदुल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बरोज़े महशर तुम में से मेरे सब से ज़ियादा महबूब और तुम में से मेरी मजलिस में सब से ज़ियादा क़रीब वोह लोग होंगे जो तुम में अच्छे अख़्लाक़ वाले और नर्म ख़ू हों, वोह लोगों से उल्फ़त रखते हों और लोग उन से महब्बत करते हों। और तुम में मेरे लिये सब से ज़ियादा क़ाबिले नफ़रत और क़ियामत के दिन मेरी मजलिस में मुझ से सब से ज़ियादा दूर मुंह भर कर बातें करने वाले, बातें बना कर लोगों को मरग़ूब करने वाले और तकब्बुर करने वाले होंगे।" (سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، ج۳، رقم ۲۰۲۵، ص۴۱۰)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान नर्म गुफ़्तगू करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(22) छींक का जवाब देना

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब किसी को छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहे और उस का भाई या साथ वाला یَرْحَمُکَ اللّٰہُ कहे। जब یَرْحَمُکَ اللّٰہُ कह ले तो छींकने वाला जवाब में येह कहे یَھْدِیْکُمُ اللّٰہُ وَیُصْلِحُ بَالَکُمْ

(بخاری، کتاب الادب، رقم ۶۲۲۴، ج۴، ص۱۶۳)

मस्अला :

अगर छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहे तो सुनने वाले पर फ़ौरन इस त़रह़ जवाब देना (या'नी یَرْحَمُکَ اللّٰہُ कहना) वाजिब है कि वोह सुन ले।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 616)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान छींक का जवाब देने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

(23) अपने मुसलमान भाई के लिये दुआ करना

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो मुसलमान बन्दा अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस के लिये दुआ मांगता है तो उस का मुवक्किल फ़िरिश्ता कहता है कि तेरे लिये भी इस की मिस्ल है।" (مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم ۲۷۳۲، ج۱، ص۱۴۶۲)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान इस्लामी भाई के लिये दुआ़ए ख़ैर करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(24) एक दूसरे को सलाम करना

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

وَاِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।" (پ۵، النسآء:۸۶)

(1) हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊं कि जब तुम उस पर अ़मल करो तो तुम्हारे दरमियान महब्बत बढ़े और वोह येह है कि आपस में सलाम को रवाज दो।"

(مسلم، کتاب الایمان، رقم ۵۴، ص۴۷)

(2) हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ बेटे ! जब तुम घर में दाख़िल हो तो

www.dawateislami.net

घरवालों को सलाम करो क्यूंकि तुम्हारा सलाम तेरे लिये और तेरे घरवालों के लिये बरकत का सबब होगा।" (ترمذی، کتاب الاستئذان، رقم ۲۷۱۵، ج ۴، ص ۳۲۴)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सलाम को आम करो सलामती पा लोगे।"

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب ذکر اثبات السلام، رقم ۴۹۱، ج ۱، ص ۳۵۷)

मस्अला :

जो लोग क़ुरआन शरीफ़ या वा'ज़ सुनने सुनाने में मश्ग़ूल हों या पढ़ने पढ़ाने में लगे हों उन्हें सलाम न किया जाए।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 18, स. 609)

मस्अला :

ख़त में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है इस की दो सूरतें हैं, एक तो येह कि ज़बान से जवाब दे और दूसरा येह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे लेकिन चूंकि जवाबे सलाम देना फ़ौरन वाजिब है और ख़त का जवाब देने में कुछ न कुछ ताख़ीर हो ही जाती है लिहाज़ा फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे। आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ जब ख़त पढ़ा करते तो ख़त में जो السلام علیکم लिखा होता, उस का जवाब ज़बान से दे कर बा'द का मज़मून पढ़ते।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 25, स. 610)

मस्अला :

किसी ने कहा कि फ़ुलां को मेरा सलाम कह देना और उस ने वा'दा कर लिया तो सलाम पहुंचाना वाजिब है अगर नहीं पहुंचाएगा तो गुनहगार होगा। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 24, स. 610)

मस्अला :

किसी ने (किसी को) सलाम भेजा तो वोह इस त़रह़ जवाब दे

www.dawateislami.net

कि पहले पहुंचाने वाले को फिर उस को जिस ने सलाम भेजा है या'नी यूं कहे, علیک وعلیہ السلام (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 24, स. 610)

मस्अला :

सलाम करना सुन्नत और सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है, बिला उ़ज़्र ताख़ीर गुनाह है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, मस्अला नम्बर 2, 6, स. 607-608)

मस्अला :

सलाम करने वाले को चाहिये कि सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत करे कि उस शख़्स की जान उस का माल उस की इ़ज़्ज़त उस की आबरू सब कुछ मेरी हिफ़ाज़त में है और मैं उन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, स. 607)

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी ज़बान सलाम करने में इस्ति'माल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(3) बा'ज़ सूरतों में नफ़्अ़ बख़्श और बा'ज़ में नुक़्सान देह कलाम

इस त़रह़ का कलाम वोही करे जो उस की बारीकियों को समझता हो वगरना ख़ामोश रहने में ही आ़फ़िय्यत है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब तुम कोई बात करने लगो तो पहले उस पर ग़ौर कर लो, अगर तुम्हें कोई फ़ाएदा नज़र आए तो कह डालो और अगर तुम शशो पन्ज में पड़ जाओ तो ख़ामोश रहो यहां तक कि तुम पर उस की इफ़ादियत खुल जाए।

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۵)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि "जब मोमिन बात करना चाहता है तो देखता है, अगर कोई फ़ाएदा महसूस हो तो बात करता है वरना ख़ामोश रहता है।"

(احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، ج۳، ص۱۴۲)

www.dawateislami.net

इस की तफ़्सील के लिये सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की मायानाज़ तस्नीफ़ इह़याउल उ़लूम (जिल्द सिवुम) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

(4) फ़ुज़ूल कलाम

इस से मुराद वोह कलाम है जिस से कोई दुन्यवी या उख़रवी फ़ाएदा ह़ासिल न हो। ऐसे कलाम में मश्ग़ूल होने से एह़तिराज़ ज़रूरी है क्यूंकि इस गुफ़्तगू में सर्फ़ होने वाले वक़्त को नफ़्अ़ बख़्श कलाम में ख़र्च किया जा सकता था और नफ़्अ़ से मह़रूमी भी एक त़रह़ का नुक़्सान ही है। लिहाज़ा ! इन्सान को चाहिये कि या तो अच्छा कलाम करे वरना ख़ामोश रहे, जैसा कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी शख़्स का बेकार बातों को छोड़ देना हुस्ने इस्लाम में से है।"

(سنن الترمذی، کتاب الزھد، رقم الحدیث ۲۳۲۴، ج ۴، ص ۱۴۲)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं तुम्हें फ़ुज़ूल कलाम से डराता हूं, इन्सान के लिये इतनी ही बात काफ़ी है जो उस की ह़ाजत के मुत़ाबिक़ हो।"

(احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، ج ۳، ص ۱۴۲)

और इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़कीम लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "हम आप का जो मक़ाम देख रहे हैं, आप इस पर किस त़रह़ पहुंचे ?" उन्हों ने फ़रमाया : "सच्ची बात करने, अमानत अदा करने और बेकार गुफ़्तगू छोड़ देने से।"

(المؤطا للامام مالک، کتاب الکلام، باب ماجاء فی الصدق والکذب، رقم ۱۹۱۱، ج ۲، ص ۴۶۷)

www.dawateislami.net

फ़ुज़ूल गुफ़्तगू की चन्द मिसालें

(1) "येह गाड़ी कितने में ली ?"

याद रहे कि येह सुवाल उस वक़्त फ़ुज़ूल कहलाएगा जब इस सुवाल के पीछे कोई वाज़ेह़ मक़्सद न हो चुनान्चे, अगर कोई इस लिये पूछे कि वोह भी गाड़ी ख़रीदने की ख़्वाहिश रखता है और अन्दाज़ा करना चाहे कि आया मेरी क़ुव्वते ख़रीद इतनी है या नहीं कि मैं येह गाड़ी ख़रीद सकूं तो अब येह सुवाल फ़ुज़ूल नहीं कहलाएगा। واللہ تعالیٰ اعلم

(2) "आज बहुत गर्मी है।"

लेकिन अगर कोई इस निय्यत से येह अल्फ़ाज़ किनायतन बोले कि मेज़बान ठन्डा पानी पिला दे या पंखा चला दे और इसे सुवाल भी न करना पड़े तो येह सुवाल फ़ुज़ूल नहीं कहलाएगा। जैसा कि मन्क़ूल है कि मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن को जब प्यास लगती तो फ़रमाते : "मुझे प्यास लगी है।" ख़िदमत गार मुआ़मला समझ कर आप की बारगाह में पानी ह़ाज़िर कर देते और आप को सुवाल भी न करना पड़ता।

(3) "न जाने येह ट्रैफ़िक क्यूं जाम हो जाता है !"

(4) "न जाने येह सड़कें कब मुकम्मल होंगी ?"

(5) "न जाने येह ट्रेन कब मन्ज़िल पर पहुंचेगी ?"

फ़ुज़ूल गुफ़्तगू के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के बयान "फ़ुज़ूल गुफ़्तगू की मिसालें" का केसेट समाअ़त फ़रमाएं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

कलाम की मज़कूरा बाला तक़्सीम और इस की तफ़्सील से येह नतीजा सामने आया कि क़िल्लते कलाम में ही आ़फ़िय्यत है क्यूंकि

www.dawateislami.net

कलामे कसीर की सूरत में ज़बान के ना फ़रमानी में मुब्तला होने के इमकानात बहुत बढ़ जाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस का कलाम ज़ियादा होता है उस की ख़ताएं भी ज़ियादा होती हैं।" (الترغیب والترہیب، کتاب الادب، رقم الحدیث ۵۱، ج ۳، ص ۳۴۵)

ख़ामोशी के फ़ज़ाइल

ख़ामोश रहने की आ़दत अपनाने (या'नी कुफ़्ले मदीना लगाने) की वज्ह से गुनाहों से ह़िफ़ाज़त के साथ हमें दर्जे ज़ैल बरकतें भी ह़ासिल होंगी,

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू दरदा ! क्या मैं तुझे दो ऐसे अ़मल न बताऊं जिन की मशक़्क़त तो ख़फ़ीफ़ है मगर उन का अज्र अ़ज़ीम है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ उन जैसे किसी अ़मल के साथ मुलाक़ात नहीं की गई वोह दो अ़मल त़वील ख़ामोशी और ह़ुस्ने अख़्लाक़ हैं।"

(مجمع الزوائد، باب ماجاء فی حسن الخلق، رقم: ۱۲۶۷۲، ج ۸، ص ۴۸)

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है वोह अच्छी बात करे या ख़ामोश रहे।"

(ترمذی، کتاب البر والصلۃ، رقم: ۱۹۷۴، ج ۳، ص ۳۸۹)

★ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो ख़ामोश रहा उस ने नजात पाई।" (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم: ۲۵۰۹، ج ۴، ص ۲۲۵)

★ सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे सलामती अ़ज़ीज़ हो उसे चाहिये कि ख़ामोशी इख़्तियार करे।"

(شعب الایمان، رقم ۴۷۹۳، ج ۴، ص ۲۴۱)

www.dawateislami.net

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बन्दा उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त नहीं पा सकता जब तक अपनी ज़बान को रोके न रखे ।" (المعجم الاوسط، رقم الحدیث ۶۵۶۳، ج۵، ص۵۵)

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जो अपना ज़ाइद कलाम बचा कर रखे और ज़ाइद माल ख़र्च कर दे ।" (المعجم الکبیر، مسند رکب المصری، رقم: ۴۶۱۶، ج۵، ص۷۲)

★ ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि तन्हाई बुरे हम नशीन से बेहतर है, अच्छा हम नशीन तन्हाई से बेहतर है, भलाई का सिखाना ख़ामोशी से बेहतर है और बुराई की ता'लीम से ख़ामोशी बेहतर है ।"

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الادب، رقم ۴۸۶۴، ج۳، ص۴۵)

★ ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "अगर गुफ़्तगू चांदी हो तो ख़ामोशी सोना है ।" (احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، ج۳، ص۱۳۶)

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ख़ामोश रहने से इन्सान के रो'ब में इज़ाफ़ा होता है ।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब अ़क़्ल कामिल हो जाती है तो कलाम में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है ।" (المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۶)

★ ह़ज़रते सय्यिदुना वह़ब बिन वर्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़िक्मत के दस ह़िस्से होते हैं जिस में से नव ह़िस्से ख़ामोशी में और दसवां गोशा नशीनी में पोशीदा है ।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۶)

www.dawateislami.net

ख़ामोश रहने की आ़दत कैसे बनाएं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ख़ामोश रहने की आ़दत बनाने के लिये नीचे दी गई गुज़ारिशात पर अ़मल करना बेह़द मुफ़ीद होगा :

(1) लिख कर गुफ़्तगू करने की कोशिश करें क्यूंकि इस में नफ़्स के लिये मशक़्क़त है और नफ़्स मशक़्क़त से बहुत घबराता है। चुनान्चे, हमारी गुफ़्तगू मह्ज़ ज़रूरत तक मह़दूद रहेगी । ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं : "अगर लोगों को लिख कर गुफ़्तगू करने का मुकल्लफ़ बनाया जाता तो येह बहुत कम गुफ़्तगू करते।" (مجموعہ رسائل ابن ابی الدنیا)

इस सिलसिले में एक मदनी पेड और क़लम हर वक़्त अपनी जेब में रखिये और क़िल्लते कलाम की आ़दत बनाने के लिये रोज़ाना कुछ न कुछ बात चीत लिख कर कीजिये।

(2) इशारे से गुफ़्तगू करना भी ज़बान को कसरते कलाम का आ़दी होने से बचाने के लिये बेह़द मुफ़ीद है।

(3) अगर फ़ुज़ूल गोई की आ़दत से जल्दी जान छुड़ाना चाहें तो रोज़ाना कुछ देर के लिये मुंह में पथ्थर रख लीजिये कि येह सुन्नते सिद्दीक़ी भी है चुनान्चे, मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुंह में पथ्थर लिये रहते थे। (اتحاف السادۃ المتقین، کتاب آفات اللسان، ج۹، ص۱۴۲)

लेकिन ख़याल रहे कि पथ्थर बेज़वी अन्दाज़ में अच्छी त़रह़ घिसाई किया हुवा हो और इस का साइज़ इतना बड़ा हो कि ह़ल्क़ से नीचे न उतर सके।

(4) अगर कभी ज़बान से फ़ुज़ूल बात निकल जाए तो इस पर नादिम हो कर दुरूदे पाक पढ़िये और नफ़्अ़ से मह़रूमी का इज़ाला करने

www.dawateislami.net

की कोशिश करें। दुरूदे पाक की बरकत से फ़ुज़ूल गोई से नजात मिल ही जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ज़रूरी गुज़ारिश

ख़ामोशी के तमाम तर फ़ज़ाइल व फ़वाइद के बा वुजूद बा'ज़ मक़ामात ऐसे हैं जहां बोलना ज़रूरी है और चुप रहना नुक़्सान देह है, मसलन कुरआने पाक पढ़ना सीखने के लिये, नमाज़ में (इस की तफ़्सील जानने के लिये "नमाज़ के अह़काम" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं), तक्बीराते तशरीक़ कहने के वक़्त, छींक का जवाब देने के लिये, सलाम का जवाब देने के लिये और किसी के घर में दाख़िल होने के लिये इजाज़त लेते वक़्त बोलना ज़रूरी है। واللہ تعالیٰ اعلم

मदीना :

इन मसाइल की तफ़्सील जानने के लिये सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की तालीफ़ "बहारे शरीअ़त" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

ज़बान की हिफ़ाज़त के वाक़िआ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ख़ामोशी की आ़दत अपनाने में इस्तिक़ामत के लिये बत़ौरे तरग़ीब इन वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

(1) एक शख़्स बारगाहे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बहुत ज़ियादा बोल रहा था तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तेरी ज़बान पर कितने पर्दे हैं ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "दो होंट और दांतों के दरमियान छुपी हुई है।" फ़रमाया : "तेरी ज़बान को रोकने के लिये क्या येह चीज़ें कम हैं ?" (اتحاف السادۃ المتقین، کتاب آفات اللسان، ج۹، ص۱۶۳)

www.dawateislami.net

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "मुझे कोई मुख़्तसर नसीह़त फ़रमाइये।" सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम अपनी नमाज़ के लिये खड़े हो तो रुख़्सत होने वाले की सी नमाज़ पढ़ो (या'नी आख़िरी नमाज़ समझ कर पढ़ो), कोई ऐसी बात न करो, जिस के बारे में बा'द में मा'ज़िरत करनी पड़े और लोगों के हाथों में मौजूद अश्या से मुकम्मल तौ़र पर मायूस हो जाओ (या'नी किसी से माल मिलने की उम्मीद न रखो)।" (مشکوۃ المصابیح، کتاب الرقاق رقم:۵۲۲۶، ج۳، ص۱۱۶)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام जब मछली के पेट से बाहर आए तो त़वील अ़र्सा तक ख़ामोश रहे। किसी ने पूछा : "आप कुछ बोलते क्यूं नहीं ?" इरशाद फ़रमाया : "इसी बोलने ने तो मुझे मछली के पेट तक पहुंचाया था।" (المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए तो देखा कि आप अपनी ज़बान को पकड़ कर फ़रमा रहे हैं : "येही वोह चीज़ है जिस ने मुझे मुसीबतों में गिरिफ़्तार कर रखा है।"

(تاریخ الخلفاء، ص۱۰۰)

(5) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा सफ़ा पर खड़े हो कर तल्बिया पढ़ रहे थे और फ़रमा रहे थे : "ऐ ज़बान ! अच्छी बात कहो फ़ाएदा होगा और बुरी बात से ख़ामोशी इख़्तियार करो सलामत रहोगी इस से पहले कि तुम्हें नदामत उठानी पड़े।" (احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، ج۳، ص۱۳۵)

(6) ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन सग़ीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना रिबाहुल क़ैसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े

www.dawateislami.net

अस्र के बा'द हमारे हां तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "अपने वालिदे मोहतरम को बाहर भेजिये।" मैं ने अर्ज़ की : "वोह तो सो रहे हैं।" तो आप येह कहते हुए पलट गए कि "येह सोने का कौन सा वक़्त है?" मैं भी उन के पीछे हो लिया। मैं ने देखा कि आप अपना मुहासबा करते हुए फ़रमा रहे हैं : "अबुल फ़ुज़ूल ! तुम ने येह क्यूं कहा कि येह सोने का कौन सा वक़्त है ? आख़िर तुझे येह फ़ुज़ूल बात कहने की क्या ज़रूरत थी ? अब तुम्हें सज़ा भुगतना होगी, मैं साल भर तुझे तक्ये पर सर नहीं रखने दूंगा।" मैं ने देखा कि येह कहते हुए आप की आंखों से सैलाबे अश्क रवां था। (کیمیائے سعادت ج۲،ص۸۹۳)

(7) किसी बुज़ुर्ग से पूछा गया कि "हज़रते सय्यिदुना अहनफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप लोगों के सरदार कैसे बने हालांकि न तो वोह उम्र में सब से बड़े हैं और न ही मालो दौलत में ?" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "उन्हें येह सरदारी अपनी ज़बान पर हुकूमत करने (क़ाबू पाने) की वज्ह से नसीब हुई है।" (المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

(8) हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन सिनान ताबेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बुलन्द मकान के पास से गुज़रे तो उस के मालिक से दरयाफ़्त किया : "येह मकान बनाए तुम्हें कितना अर्सा गुज़रा है?" येह सुवाल करने के बा'द आप दिल में सख़्त नादिम हुए और अपने नफ़्स से मुख़ातब हो कर फ़रमाने लगे : "ऐ मग़रूर नफ़्स ! तू बेकार व बे मक़्सद सुवालात में क़ीमती वक़्त को ज़ाएअ करता है।" फिर उस फ़ुज़ूल सुवाल के कफ़्फ़ारे में आप ने एक साल के रोज़े रखे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 72)

(9) मन्क़ूल है कि एक मरतबा चार मुमालिक के बादशाह किसी जगह जम्अ हुए तो ईरान के बादशाह ने कहा : "मैं न बोल कर

www.dawateislami.net

कभी नहीं पछताया लेकिन बोलने की वज्ह से बारहा शरमिन्दगी का सामना करना पड़ा।" रूम के बादशाह ने कहा : "अपनी अन कही बात की तरदीद मेरे लिये बहुत आसान थी जब कि कही हुई बात की तरदीद मुझे बेहद दुश्वार महसूस हुई।" चीन के बादशाह ने कहा : "जब तक मैं ख़ामोश रहा मैं अपनी बात का मालिक था लेकिन जब वोह बात कह बैठा तो वोह मेरी मालिका बन गई।" हिन्द के बादशाह ने कहा : "मुझे तो बोलने वाले पर हैरत है कि वोह ऐसी बात कहता ही क्यूं है? कि जो मुंह से निकल जाए तो नुक़्सान दे और अगर न निकले तो कुछ नफ़्अ़ न दे।" (المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

(10) एक मरतबा बादशाह बहराम किसी दरख़्त के नीचे बैठा हुवा था कि उसे किसी परिन्दे के बोलने की आवाज़ सुनाई दी। उस ने परिन्दे की त़रफ़ तीर फेंका जो उसे जा लगा और वोह हलाक हो गया। बहराम ने कहा : "ज़बान की हिफ़ाज़त इन्सान और परिन्दे दोनों के लिये मुफ़ीद है कि अगर येह न बोलता तो इस की जान बच जाती।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث عشر، ج۱، ص۱۴۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

येह तमाम वाक़िआ़त ज़बान के सिलसिले में एह़तियात़ पसन्दी के आईनादार हैं। हमें भी अपने अकाबिरीन के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हिफ़ाज़ते ज़बान के लिये अ़मली कोशिश शुरूअ़ कर देनी चाहिये, **अल्लाह** तआ़ला हमारा ह़ामी व नासिर हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★

www.dawateislami.net

शर्मगाह की हिफ़ाज़त

शर्मगाह की हिफ़ाज़त का मत़लब येह है कि इन्सान इस के नाजाइज़ इस्ति'माल से बचे और अपने बदन के फ़ित़री तक़ाज़े या'नी शहवत को पूरा करने के लिये वोही त़रीक़े अपनाए जिन्हें शरई त़ौर पर जाइज़ क़रार दिया गया हो। बत़ौरे तरग़ीब इस की हिफ़ाज़त के फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा हों।

शर्मगाह की हिफ़ाज़त के फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह तआ़ला ने फ़लाह़ को पहुंचने वाले (या'नी कामयाबी को पा लेने वाले) मोमिनीन का तज़किरा करते हुए क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं।" (پ۱۸، المؤمنون ۵، ۶، ۷)

सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी तरग़ीबे उम्मत के लिये शर्मगाह की हिफ़ाज़त के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ क़ुरैश के जवानो ! अपनी शर्मगाहों

www.dawateislami.net

की हिफ़ाज़त करो, ज़िना मत करो, जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की उस के लिये जन्नत है।" (المستدرک، کتاب الحدود، رقم ۸۱۲۷، ج ۵، ص ۵۱۲)

और हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औरत जब पांचों नमाज़ें अदा करे, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और अपने शोहर की इताअ़त करे तो जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाएगी।"

(الاحسان بترتیب ابن حبان، مسند ابو ہریرہ، رقم ۴۱۵۱، ج ۶، ص ۱۸۴)

क़ज़ाए शहवत के हलाल ज़राएअ़

प्यारे इस्लामी भाइयो !

शरई तौर पर दो क़िस्म की औरतों से अपनी ख़्वाहिश को पूरा करना जाइज़ है। (1) ज़ौजा और (2) कनीज़े शरई

कुरआने मजीद में है :

اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَ ۝ मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं।" (پ۱۸، المومنون: ۶)

फ़ी ज़माना कनीज़े शरई मयस्सर न होने की बिना पर सिर्फ़ ज़ौजा से ही मत़लूबा मक़्सद हासिल करना मुमकिन है। इसी त़रीक़े की जानिब मुतवज्जेह करने के लिये रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई मक़ामात पर तरग़ीबी कलाम इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "निकाह़ मेरी सुन्नत से है पस जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे वोह मुझ से नहीं। लिहाज़ा निकाह़ करो, क्यूंकि मैं तुम्हारी कसरत की बिना पर दीगर

www.dawateislami.net

उम्मतों पर फ़ख़्र करूंगा। जो कुदरत रखता हो वोह निकाह़ करे और जो कुदरत न पाए तो रोज़े रखा करे क्यूंकि रोज़ा शहवत को तोड़ता है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب ماجاء فی فضل النکاح، رقم ۱۸۴۶، ج ۲، ص ۴۰۶)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया : ''ऐ नौजवानो ! तुम में से जो शख़्स घर बसाने की इस्तित़ाअ़त रखता हो, वोह निकाह़ करे क्यूंकि येह निगाहों को ज़ियादा झुकाने और शर्मगाह की ज़ियादा ह़िफ़ाज़त करने वाला है और जो निकाह़ की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता, तो रोज़े रखे, क्यूंकि रोज़ों से शहवत टूटती है।''

(بخاری، کتاب النکاح، باب من لم یستطع الباءۃ فلیصم، رقم ۵۰۶۰، ج ۳، ص ۴۲۲)

निकाह़ का शरई हुक्म

याद रहे कि निकाह़ हमेशा सुन्नत नहीं, बल्कि कभी फ़र्ज़, कभी वाजिब, कभी मकरूह और बा'ज़ अवक़ात तो ह़राम भी होता है। इस की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है.....

फ़र्ज़ :

अगर येह यक़ीन हो कि निकाह़ न करने की सूरत में ज़िना में मुब्तला हो जाएगा तो निकाह़ करना फ़र्ज़ है। ऐसी सूरते ह़ाल में निकाह़ न करने पर गुनाहगार होगा।

वाजिब :

अगर मह्र व नफ़क़ा देने पर कुदरत हो और ग़लबए शहवत के सबब ज़िना या बद निगाही या मुश्तज़नी में मुब्तला होने का अन्देशा हो तो इस सूरत में निकाह़ वाजिब है अगर नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा।

सुन्नते मुअक्कदा :

अगर मह्र, नान व नफ़क़ा देने और इज़्दिवाजी ह़ुक़ूक़ पूरे करने पर क़ादिर हो और शहवत का बहुत ज़ियादा ग़लबा न हो तो निकाह़

www.dawateislami.net

करना सुन्नते मुअक्कदा है। ऐसी ह़ालत में निकाह़ न करने पर अड़े रहना गुनाह है। अगर ह़राम से बचना...या...इत्तिबाए़ सुन्नत...या...औलाद का ह़ुसूल पेशे नज़र हो तो सवाब भी पाएगा और अगर मह़ज़ ह़ुसूले लज़्ज़त या क़ज़ाए शहवत हो तो सवाब नहीं मिलेगा, निकाह़ बहर ह़ाल हो जाएगा।

मकरूह :

अगर येह अन्देशा हो कि निकाह़ करने की सूरत में नान व नफ़क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब निकाह़ करना मकरूह है।

ह़राम :

अगर येह यक़ीन हो कि निकाह़ करने की सूरत में नान व नफ़क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब निकाह़ करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। (ऐसी सूरत में शहवत तोड़ने के लिये रोज़े रखने की तरकीब बनाए)।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, किताबुन्निकाह़, ह़िस्सा 7, स. 559)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

येह भी ज़ेह्न में रहे कि मर्द पर लाज़िम है कि अपनी ज़ौजा से क़ज़ाए शहवत करने में भी शरीअ़त की क़ाइम कर्दा ह़ुदूद की पासदारी करे। लिहाज़ा ! अगर उस ने शरई ह़ुदूद को क़ाइम न रखा तो वोह गुनाहगार होगा। शरई ह़ुदूद को तोड़ने की कई सूरतें हैं। मसलन

(1) ह़ालते ह़ैज़ में सोह़बत करना :

क़ुरआने ह़कीम में इस की मुमानअ़त की गई है चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِى الْمَحِيْضِ ۙ

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और तुम से पूछते हैं हैज़ का हुक्म, तुम फ़रमाओ कि वोह नापाकी है, तो औ़रतों से अलग रहो, हैज़ के दिनों (में) ।" (پ۲،البقرۃ:۲۲۲)

सदरुश्शरीआ़ ह़कीम मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ الرَّحْمَة लिखते हैं : "इस (या'नी हैज़ व निफ़ास की) ह़ालत में नाफ़ से घुटने तक औ़रत के बदन से मर्द का अपने किसी उ़ज़्व से छूना जाइज़ नहीं जब कि कपड़ा वग़ैरा ह़ाइल न हो, शहवत से हो या बिला शहवत और अगर ऐसा (कपड़ा वग़ैरा) ह़ाइल हो कि बदन की गर्मी मह़सूस न होगी तो ह़रज नहीं ।" (बहारे शरीअ़त, मस्अला नम्बर 31, ह़िस्सा 2, स. 118)

मज़ीद लिखते हैं : "नाफ़ से ऊपर और घुटने से नीचे छूने या किसी त़रह़ का नफ़्अ़ लेने में कोई ह़रज नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, मस्अला नम्बर 32, ह़िस्सा, 2 स. 118)

(2) पिछले मक़ाम में वत़ी करना :

रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स अपनी ज़ौजा से उस की दुबुर में वत़ी करे, मलऊ़न है ।"

(ابوداؤد۔کتاب النکاح،باب فی جامع النکاح،رقم ۲۱۶۲،ج۲،ص۳۶۲)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला उस मर्द पर नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा जो मर्द के साथ जिमाअ़ करे या औ़रत के पिछले मक़ाम में जिमाअ़ करे ।"

(جامع ترمذی،کتاب الرضاع،باب ماجاء فی کراھیۃ اتیان النساء فی ادبارھن،رقم ۱۱۶۸،ج۲،ص۳۸۸)

(3) बरहना ह़ालत में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ करना :

फ़तावा रज़विय्या में है : "ब ह़ालते बरहंगी क़िब्ला को मुंह या पीठ करना मकरूहे तह़रीमी है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 140)

www.dawateislami.net

क़ज़ाए शहवत के ममनूअ़ ज़राएअ़

प्यारे इस्लामी भाइयो !

ज़ौजा और कनीज़े शरई के इलावा क़ज़ाए शहवत की मुख़्तलिफ़ सूरतें मसलन ज़िना, लिवात़त, जानवरों से बद फ़े'ली और मुश्तज़नी वग़ैरहा सब की सब ह़राम व नाजाइज़ हैं। इन नाजाइज़ व ह़राम उमूर की तफ़्सील मुलाह़ज़ा हो.....

(1) **ज़िना :**

येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस नापाक फ़े'ल की मुमानअ़त करते हुए रब तआ़ला ने कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया : **لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَ سَآءَ سَبِيْلًا ۝**

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बदकारी के पास न जाओ, बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत ही बुरी राह। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۲)

ता'लीमाते कुरआनिया की रू से बे ह़याई क़रार पाने वाला येह काम शैत़ान को किस क़दर मह़बूब है इस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाइये,

मन्क़ूल है कि शैत़ान अपने लश्कर ज़मीन में फैला देता है और उन्हें कहता है : "तुम में जो किसी मुसलमान को गुमराह करेगा, मैं उस के सर पर एक ताज पहनाऊंगा।" चुनान्चे, उन में जो ज़ियादा फ़ितना बाज़ होता है, वोह मर्तबे के लिह़ाज़ से शैत़ान से उतना ही नज़दीक होता है। जब वोह लौटते हैं तो उन में एक कहता है : "मैं ने फुलां को उस वक़्त तक न छोड़ा, जब तक उस ने अपनी बीवी को त़लाक़ न दे दी।" शैत़ान उसे जवाब देता है : "तू ने कोई बड़ा काम नहीं किया, क़रीब है कि वोह शख़्स किसी दूसरी से शादी कर ले।"

www.dawateislami.net

फिर दूसरा आता है और कहता है : "मैं फुलां के साथ उस वक़्त तक रहा, जब तक उस के और उस के भाई के दरमियान जुदाई न करवा दी।" शैत़ान उसे भी यूं ही कहता है कि "तू ने कोई बड़ा काम नहीं किया, अ़न क़रीब वोह उस से सुल्ह़ कर लेगा।" फिर एक और आता है और कहता है : "मैं फुलां के साथ रहा ह़त्ता कि उस ने ज़िना कर लिया.....।"

येह सुन कर शैत़ान कहता है : "हां तू ने काम किया है।" फिर उसे ख़ुद से क़रीब कर लेता है और ताज उस के सर पर रख देता है।

(کتاب الکبائر، صفحہ ۵۸)

ज़िना की शरई सज़ा

नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर वक़्ती लज़्ज़त की ख़ातिर ज़िना का इरतिकाब करने वाले मर्द या औ़रत अगर ग़ैर शादी शुदा हों तो उन की शरई सज़ा येह है कि उन्हें किसी नर्मी के बिग़ैर अ़लानिय्या त़ौर पर 100 कोड़े मारे जाएंगे, **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِیْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَّ
لَاتَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ
وَلْیَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ 0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े लगाओ और तुम्हें उन पर तरस न आए **अल्लाह** के दीन में अगर तुम ईमान लाते हो **अल्लाह** और पिछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गुरौह ह़ाज़िर हो।" (پ۱۸، النور:۲)

और अगर कोई शादीशुदा मर्द या औ़रत इस फ़े'ल में मुब्तला हो जाएं तो बिल इजमाअ़ उसे संगसार कर दिया जाएगा। अल बह़रुर्राइक़ में है : "अगर ज़िना करने वाला शादीशुदा हो तो उसे किसी खुली जगह में पथ्थर मारे जाएं ह़त्ता कि मर जाए।" (البحر الرائق، کتاب الحدود، ج۵، ص۱۳)

www.dawateislami.net

ज़िना की उख़रवी सज़ा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा बाला सज़ाओं का तअ़ल्लुक़ दुन्यावी ज़िन्दगी से है, अगर ऐसा शख़्स बिग़ैर तौबा के मर गया तो उसे इन्तिहाई दर्दनाक अ़ज़ाबात का सामना करना पड़ेगा जैसा कि

(1) ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ाने के बा'द हमारी जानिब मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "आज रात मैं ने देखा कि मेरे पास दो शख़्स आए और मुझे ज़मीने मुक़द्दस की त़रफ़ ले गए। हम एक तन्नूर की मिस्ल गढ़े के पास पहुंचे, जिस का ऊपर का ह़िस्सा तंग और नीचे से कुशादा था। उस में आग भड़क रही थी और उस आग में कुछ मर्द और औ़रतें बरह्ना हैं। जब आग का शो'ला बुलन्द होता है तो वोह लोग ऊपर आ जाते हैं और जब शो'ले कम हो जाते हैं तो शो'ले के साथ वोह भी अन्दर चले जाते हैं। मैं ने पूछा : "येह क्या है ?" उन दोनों ने जवाब दिया : "येह लोग ज़िना करने वाले हैं।"

(ملخصاً، بخاری، کتاب الجنائز، رقم ۱۳۸۶، ج۱، ص۴۶۷)

(2) अ़ल्लामा शम्सुद्दीन ज़ह्बी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ नक़्ल फ़रमाते हैं कि ज़बूर शरीफ़ में है। बेशक ज़िना करने वालों को उन की शर्मगाहों के ज़रीए आग में लटका दिया जाएगा और उन्हें लोहे के कोड़ों से मारा जाएगा। जब वोह मार के सबब फ़रियाद करेंगे तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते कहेंगे : "येह आवाज़ उस वक़्त कहां थी जब तुम हंसते थे, ख़ुश होते थे और इतराते थे, न अल्लाह तआ़ला से डरते थे और न उस से ह़या करते थे।" (کتاب الکبائر، صفحہ ۵۵)

(3) ह़ज़रते मक्ह़ूल दिमश्क़ी ताबेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "दोज़ख़ियों को शदीद बदबू महसूस होगी तो वोह कहेंगे : "हम ने इस

www.dawateislami.net

से गन्दी बदबू कभी महसूस नहीं की।" तो उन्हें बताया जाएगा कि "येह ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू है।" (کتاب الکبائر، صفحہ ۵۷)

(4) मन्क़ूल है कि "जहन्नम में एक वादी है जिस में सांप और बिच्छू हैं। हर बिच्छू, ख़च्चर के बराबर मोटा है। उन में से हर एक के सत्तर डंक हैं और हर डंक में एक ज़हर की थेली है। येह ज़ानी को डंक मारेंगे और अपना ज़हर उस के बदन में छोड़ देंगे, ज़ानी उस के दर्द की तक्लीफ़ को हज़ार साल तक महसूस करेगा। फिर उस का गोश्त ज़र्द पड़ जाएगा और उस की शर्मगाह से पीप और ज़र्द पानी बहने लगेगा।"

(کتاب الکبائر، صفحہ ۵۹)

(5) किताबुल कबाइर में है कि "जिस ने किसी ऐसी औ़रत को शहवत के साथ छुवा जो उस के लिये ह़लाल न थी तो वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस का हाथ उस की गर्दन के साथ बन्धा होगा। अगर उस ने उस औ़रत का बोसा लिया होगा तो उस के होंटों को आग की क़ैंचियों से काटा जाएगा। अगर उस के साथ ज़िना किया होगा तो उस की रान बरोज़े क़ियामत उस के ख़िलाफ़ गवाही देगी और कहेगी, "मैं ह़राम काम के लिये सुवार हुई थी।" येह सुन कर **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स की जानिब निगाहे ग़ज़ब से देखेगा तो उस के चेहरे का गोश्त झड़ जाएगा। येह शख़्स ज़िना का इन्कार करते हुए कहेगा : "मैं ने तो ज़िना नहीं किया।" मगर उस की ज़बान उस के ख़िलाफ़ गवाही देगी : "मैं ने इस के साथ कलाम किया था जो ह़लाल न थी।" उस के हाथ कहेंगे : "हम ह़राम के लिये बढ़े थे।" उस की आंखें कहेंगी : "हम ने ह़राम को देखा था।" उस के पैर कहेंगे : "हम ह़राम की जानिब चले थे।" उस की शर्मगाह कहेगी : "मैं ने ज़िना

www.dawateislami.net

किया था।" आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों में से एक कहेगा : "मैं ने सुना था।" दूसरा कहेगा : "और मैं ने लिखा था।"

अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा : "मैं इस के काम पर मुत्तलअ़ था और मैं ने इस का पर्दा रखा था।" फिर फ़रमाएगा : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इसे पकड़ लो और मेरा अ़ज़ाब इसे चखाओ। बेशक उस पर मेरा अ़ज़ाब शदीद होता है, जो मुझ से शर्मो ह़या में कमी करता है।"

(کتاب الکبائر، صفحہ ۵۹)

(2) लिवात़त :

बे शुमार दुन्यावी व उख़रवी आफ़ात का सबब बनने वाले इस मज़मूम फ़े'ल की क़बाह़त कुरआने करीम और अह़ादीसे करीमा से साबित है, चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ۝

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और लूत़ को भेजा जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या वोह बे ह़याई करते हो जो तुम से पहले जहां में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास शहवत से जाते हो औ़रतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए।" (پ۸، اعراف: ۸۰، ۸۱)

क़ौमे लूत़ (عَلَیْہِ السَّلَام) पर इसी की वज्ह से अ़ज़ाब नाज़िल हुवा था, जिस का बयान कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इन अल्फ़ाज़ से किया गया है :

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ مَّنْضُوْدٍ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया और उस पर कंकर के पत्थर लगातार बरसाए।" (ھود: ۸۲)

www.dawateislami.net

इस की मज़म्मत में अहादीसे मुक़द्दसा :

(1) हज़रते अम्र बिन अबी अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करे, वोह मलऊ़न है।"

(ترمذی، کتاب الحدود، باب ماجاء فی حد اللوطی، رقم ۱۴۶۱ ج ۳، ص ۱۳۷)

(2) हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "चार क़िस्म के लोग ऐसे हैं, जो सुब्ह **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब में और शाम उस की नाराज़ी में करते हैं।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह मर्द जो औ़रतों से मुशाबहत इख़्तियार करते हैं और वोह औ़रतें जो मर्दों से मुशाबहत इख़्तियार करती हैं और जानवरों और मर्दों से बद फ़े'ली करने वाले।" (کنز العمال، کتاب المواعظ، رقم ۴۳۹۷۵، ج ۱۶، ص ۳۱)

(3) हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अ़न क़रीब इस उम्मत में एक ऐसा गुरौह होगा जो लूत़िया कहलाएगा।" येह तीन क़िस्म के होंगे।

(1) जो अम्रदों की सूरतें देखेंगे और उन से बात चीत करेंगे,

(2) जो उन से हाथ मिलाएंगे और गले भी मिलेंगे,

(3) जो उन से बद फ़े'ली करेंगे।

इन सभी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है मगर जो तौबा कर लेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला उन की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा और वोह ला'नत से बचे रहेंगे।" (کنز العمال، کتاب الحدود، رقم ۱۳۱۲۹ ج ۵، ص ۱۳۵)

इस की शरई सज़ा :

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम जिस शख़्स को क़ौमे लूत़ का अ़मल करते पाओ तो करने और करवाने वाले दोनों को क़त्ल कर दो।" (مستدرک، کتاب الحدود، رقم ۸۱۱۳، ج ۵، ص ۵۰۸)

और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन के लिये फ़रमाया करते थे : "या'नी बस्ती में कोई ऊंची दीवार देखी जाए और लूत़ी को उस के नीचे डाल दिया जाए, फिर उस के साथ पत्थरों वाला मुआ़मला किया जाए जैसा क़ौमे लूत़ के साथ किया गया था।"

ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की जानिब एक ख़त़ लिख कर भेजा कि मैं ने यहां एक ऐसा शख़्स पाया है, जो ब ख़ुशी दूसरों को अपनी ज़ात पर क़ुदरत देता है।" ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस सिलसिले में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मश्वरा त़लब फ़रमाया। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "बेशक येह एक ऐसा गुनाह है, जिसे फ़क़त़ एक उम्मत या'नी क़ौमे लूत़ ने किया है और बेशक अल्लाह तआ़ला ने हमें बता दिया कि उस ने उस क़ौम के साथ क्या किया ! चुनान्चे, मेरा ख़याल है कि उस शख़्स को जला दिया जाए।"

पस ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को लिखा कि उसे आग में जला दिया जाए। आप ने ह़स्बे ह़ुक्म उसे आग में जलवा दिया।" (کتاب الکبائر، ص ۶۶)

मदीना :

ज़िना और लिवात़त की बयान कर्दा शरई सज़ाएं नाफ़िज़ करना ह़ाकिमे इस्लाम का काम है, अ़वाम को चाहिये कि अगर येह साबित हो जाए कि फ़ुलां ने ज़िना या लिवात़त जैसा क़बीह़ फ़े'ल किया है तो उस से उस वक़्त तक समाजी तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर लें जब तक वोह कामिल तौबा न कर ले।

www.dawateislami.net

फ़ाइल व मफ़ऊ़ल की उख़रवी सज़ा :

(1) ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है : "जिस ने किसी को ख़ुद पर ब ख़ुशी क़ुदरत दी, ह़त्ता कि दूसरे ने उस से मुंह काला किया तो **अल्लाह** तआ़ला उसे औ़रतों की सी शहवत में मुब्तला फ़रमा देगा और क़ियामत तक उस की क़ब्र में शैत़ान को उस के क़रीब रखेगा।

(کتاب الکبائر، ص٦٦)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना वक़ीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो शख़्स क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करते हुए मरेगा तो बा'दे तदफ़ीन उसे क़ौमे लूत़ के क़ब्रिस्तान में मुन्तक़िल कर दिया जाएगा और उस का ह़श्र उन्ही के साथ होगा। (کنز العمال، کتاب الحدود، رقم ١٣١٢٧، ج٥، ص١٣٥)

(3) मरवी है कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام दौराने सफ़र एक आग के पास से गुज़रे, जो एक मर्द पर जल रही थी। आप ने उस आग को बुझाने के लिये उस पर पानी डाला। अचानक उस आग ने एक लड़के की सूरत इख़्तियार कर ली और वोह मर्द आग बन गया। आप को इस से बहुत तअ़ज्जुब हुवा और आप ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब ! इन दोनों को इन के दुन्यावी ह़ाल पर लौटा दे ताकि मैं इन से इन के बारे में पूछ सकूं।"

चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने उन दोनों को ज़िन्दा फ़रमा दिया। आप ने देखा कि वोह एक मर्द और एक लड़का था। आप ने उन से फ़रमाया : "तुम दोनों का क्या मुआ़मला है ?" मर्द ने जवाब दिया, "ऐ रूह़ल्लाह ! मैं दुन्या में इस लड़के की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गया था, शहवत ने मुझे उभारा कि मैं इस से बुरा काम करूं फिर जब मैं और येह लड़का मर गए, तो येह आग बन गया, जो मुझे जलाता है और मैं

www.dawateislami.net

भी आग बन कर इसे जलाता हूं। पस हमारा येह अ़ज़ाब क़ियामत तक जारी रहेगा।" (کتاب الکبائر،ص ۲۶)

(3) जानवर से बद फ़े'ली :

येह फ़े'ल भी शरीअ़त को सख़्त नापसन्द है जैसा कि ह़ज़रते अ़म्र बिन अबी अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जो किसी जानवर से बद फ़े'ली करे, वोह मलऊ़न है।" (مستدرک، کتاب الحدود، رقم ۸۱۱۷، ج۵، ص۵۰۹)

इस के बारे में सख़्त सज़ा बयान की गई है चुनान्चे, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम जिस शख़्स को किसी जानवर से बद फ़े'ली करता पाओ तो फ़ाइल व मफ़ऊ़ल दोनों को क़त्ल कर डालो।" ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : "इस में जानवर का क्या क़ुसूर है ?" आप ने फ़रमाया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बारे में कोई बात तो नहीं सुनी लेकिन मेरा गुमान है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे नापसन्द फ़रमाया कि ऐसे जानवर का गोश्त खाया जाए या उस से नफ़अ़ उठाया जाए कि जिस के साथ येह अ़मल किया गया हो।" (ترمذی۔کتاب الحدود، باب ماجاء فیمن یقع علی البھیمۃ، رقم ۱۴۶۰، ج۳، ص۱۳۶)

(4) मुश्तज़नी :

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने हाथ से निकाह़ करने वाला मलऊ़न है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, स. 80)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن अपने हाथ से ग़ुस्ल वाजिब करने के बारे में लिखते हैं : "येह फ़े'ल नापाक, ह़राम और नाजाइज़ है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ अव्वल, स. 8)

www.dawateislami.net

अपने हाथ से ग़ुस्ल वाजिब करने के बारे में भी कई वईदें बयान की गई हैं। मसलन

(1) अ़ल्लामा शमसुद्दीन ज़ह्बी عَلَيْهِ الرَّحْمَة नक़्ल करते हैं कि रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि "सात लोग ऐसे हैं कि जिन पर अल्लाह तआ़ला ने ला'नत फ़रमाई है और बरोज़े क़ियामत उन की जानिब निगाहे रह़मत न फ़रमाएगा। और उन से फ़रमाएगा कि जहन्नम में दाख़िल होने वालों के साथ दाख़िल हो जाओ, ब शर्ते कि येह तौबा न करें।

(1) बद फ़े'ली करने वाला।

(2) करवाने वाला।

(3) जानवर से बुरा काम करने वाला।

(4) मां और बेटी से निकाह़ करने वाला।

(5) अपने हाथ से ग़ुस्ल वाजिब करने वाला। (کتاب الکبائر، ص۶۳)

(2) अ़ल्लामा मह़मूद आलूसी عَلَيْهِ الرَّحْمَة तफ़्सीर रूहुल मआ़नी में लिखते हैं: "ह़ज़रते अ़त़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة से मरवी है: "मैं ने सुना है कि बरोज़े क़ियामत एक क़ौम को इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उन के हाथ ह़ामिला होंगे, मेरे ख़याल में येह वोह होंगे जो अपने हाथ से ग़ुस्ल वाजिब किया करते थे।"

मज़ीद लिखते हैं: "ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि "अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसी क़ौम को अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाया जो अपनी शर्मगाहों का ग़लत़ इस्ति'माल किया करते थे।" (روح المعانی، المؤمنون: ۳، الجزء الثامن عشر، ج۹، ص۱۶)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इस सिलसिले में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की दर्दो सोज़ से मा'मूर एक तह़रीर पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती है, चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं :

"आह ! गुनाहों के सैलाब की हलाकत सामानियां, येह फ़ह़्हाशी और उ़रयानी का तूफ़ान, मख़्लूत़ ता'लीमी निज़ाम, मुख़्तलिफ़ शो'बाहाए ज़िन्दगी में मर्दों और औ़रतों का इख़्तिलात़, T.V और V.C.R पर फ़िल्में डिरामे और शहवत अफ़्ज़ा मनाज़िर, रसाइल व जराइद के SEX APPEAL मज़ामीन वग़ैरा ने मिल जुल कर आज के नौजवान को बावला बना डाला है। अ़रबी मक़ूला है اَلشَّبَابُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْجُنُوْنِ या'नी जवानी दीवानगी ही का एक शो'बा है, आज के नौजवान पर शैत़ान ने अपना घेरा तंग कर दिया है, ख़्वाह बज़ाहिर नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी ही क्यूं न हो, अपनी शहवत की तस्कीन के लिये मारा मारा फिर रहा है, मुआ़शरा अपने ग़लत़ रस्मो रवाज के बाइ़स बेचारे की शादी में बहुत बड़ी दीवार बन चुका है, इम्तिह़ान, सख़्त इम्तिह़ान है, मगर इम्तिह़ान से घबराना मर्दों का शैवा नहीं। सब्र कर के अज्र लूटना चाहिये कि शहवत जितनी ज़ियादा तंग करे सब्र करने पर सवाब भी उतना ही ज़ियादा मिलेगा। अगर शहवत से मग़्लूब हो कर उस की तस्कीन के लिये नाजाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार किये तो दोनों जहां का नुक़्सान और जहन्नम का सामान है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "शहवत की घड़ी भर पैरवी त़वील ग़म का बाइ़स होती है।" येह लिखते हुए कलेजा कांपता और ह़या से क़लम थर्राता है मगर मेरी इन मा'रूज़ात को बे ह़याई पर मब्नी नहीं कहा जा सकता बल्कि येह तो ऐन दर्से ह़या है। "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है" येह ईमान रखने के बा

www.dawateislami.net

वुजूद जो लोग अपने ज़ो'मे फ़ासिद में "छुप कर" बे हयाई का काम करते हैं उन के लिये हया का पैग़ाम है। आह ! गन्दी ज़ेहनिय्यत के हामिल कई नौजवान (लड़के और लड़कियां) शादी की राहें मस्दूद पा कर अपने ही हाथों अपनी जवानी बरबाद करना शुरूअ़ कर देते हैं। इब्तिदाअन अगर्चे लुत्फ़ आता हो, मगर जब आंख खुलती है तो बहुत देर हो चुकी होती है। याद रहे ! येह फ़े'ल हराम व गुनाहे कबीरा है और हदीसे पाक में ऐसा करने वाले को मलऊ़न कहा गया है। और उस के लिये जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब का इस्तिहक़ाक़ है, आख़िरत भी दाव पर लगी और दुन्या में भी इस के सख़्त तरीन नुक़्सानात हैं, इस ग़ैर फ़ित्री अ़मल से सिह़्ह़त भी तबाहो बरबाद हो कर रह जाती है।

एक बार येह "फ़े'ल" कर लेने के बा'द फिर करने को जी चाहता है अगर مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ चन्द बार कर लिया तो वरम आ जाता है और उ़ज़्व की नर्मो नाज़ुक रगें रगड़ खा कर दब कर सुस्त हो जातीं और पठ्ठे बेह़द ह़स्सास हो जाते हैं और बिल आख़िर नौबत यहां तक पहुंचती है कि ज़रा बद निगाही हुई, बल्कि ज़ेहन में तसव्वुर क़ाइम हुवा और मनी ख़ारिज, बल्कि कपड़े से रगड़ खा कर ही मनी ज़ाएअ़। "मनी" उस ख़ून से बनती है जो तमाम जिस्म को ग़िज़ा पहुंचाने के बा'द बच जाता है। जब येह कसरत के साथ ख़ारिज होने लगेगी तो ख़ून बदन को ग़िज़ा कैसे फ़राहम करेगा ? नतीजतन जिस्म का सारा निज़ाम दरहम बरहम।

इस फ़े'ले बद की 26 जिस्मानी आफ़तें

(1) दिल कमज़ोर (2) मे'दा (3) जिगर और (4) गुर्दे ख़राब (5) नज़र कमज़ोर (6) कानों में शाएं शाएं की आवाज़ें आना (7) चिड़ चिड़ा पन (8) सुब्ह़ उठे तो बदन सुस्त (9) जोड़ जोड़ में दर्द और आंखें चिपकी हुईं (10) "मनी" पतली पड़ जाने की सूरत में थोड़ी

www.dawateislami.net

थोड़ी रुतूबत बहती रहना, नाली में रुतूबत पड़ी रहना और सड़ना, फिर इस सबब से बा'ज़ अवक़ात ज़ख़्म हो जाना और इस में पीप पड़ जाना (11) शुरूअ़ में पेशाब में मा'मूली जलन (12) फिर मवाद निकलना (13) फिर जलन में इज़ाफ़ा (14) यहां तक कि पुराना सूज़ाक हो कर ज़िन्दगी को ऐसा तल्ख़ कर देता है कि आदमी मौत की आरज़ू करने लगता है (15) "मनी" का पतली होने के सबब बिला किसी ख़याल के पेशाब से पहले या बा'द पेशाब में मिल कर निकल जाना इसी को "जिरयान" कहते हैं जो शदीद तरीन अमराज़ की जड़ है (16) उ़ज़्व में टेढ़ा पन (17) ढीला पन (18) जड़ कमज़ोर (19) शादी के क़ाबिल न रहना (20) अगर जिमाअ़ में कामयाब हो भी गया तो औलाद की उम्मीद नहीं (21) कमर में दर्द (22) चेहरा ज़र्द (23) आंखों में गढ़े (24) शक्ल वहशियाना (25) तपेदिक़ (या'नी पुराना बुख़ार) (26) पागल पन।

पागल हो जाने का एक सबब

एक इत्तिलाअ़ के मुताबिक़ जब एक हज़ार तपेदिक़ (या'नी पुराना बुख़ार) के मरीज़ों के अस्बाब पर ग़ौर किया गया तो येह बात सामने आई कि 414 मुश्तज़नी के सबब, 186 कसरते जिमाअ़ के बाइस और बक़िय्या दीगर वुजूहात की बिना पर मुब्तलाए तपेदिक़ हुए थे। 124 पागलों का इम्तिहान करने पर मा'लूम हुवा कि उन में से 24 (या'नी तक़रीबन हर पांचवां फ़र्द) अपने हाथ से मनी ख़ारिज करने की बिना पर पागल हुवा था।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(मुलख़्ख़सन मिन "अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां")

www.dawateislami.net

इन गुनाहों से बचने के लिये हिफ़ाज़ती तदाबीर

इस नाज़ुक तरीन दौर में कि जब टी वी, वी सी आर, डिश एन्टीना, इन्टरनेट और केबल के ज़रीए मुसलसल दा'वते गुनाह दी जा रही हो और निगाह व क़ल्ब की पाकीज़गी को शहवत आमेज़ गुफ़्तगू और मनाज़िर के ज़रीए ग़लाज़त में तब्दील किया जा रहा हो, अपने आप को गुनाह में मुब्तला होने से बचाना बेहद दुश्वार काम है। ता हम अगर इन्सान मज़बूत इरादा करे और दामने उम्मीद थाम कर नीचे दी गई गुज़ारिशात पर अमल करे तो गुनाहों से बचना इस के लिये बेहद आसान हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(1) निगाह की हिफ़ाज़त

इन तमाम गुनाहों से बचने का बेहतरीन तरीक़ा येह है कि घर हो या बाज़ार, दफ़्तर हो या फ़ेक्ट्री हर मक़ाम पर अपनी निगाह की हिफ़ाज़त की जाए और फ़िल्में, डिरामे वग़ैरा देखने से बचा जाए क्यूंकि "जब नज़र बहकती है, तो दिल बहकता है और जब दिल बहकता, तो सतर बहक जाता है।"

अल्लाह तआला फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है और

www.dawateislami.net

मुसलमान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें।" (پ۱۸،النور:۳۰،۳۱)

और अगर कभी बिलफ़र्ज़ अचानक किसी औ़रत पर निगाह पड़ जाए तो ऐसे शख़्स को चाहिये कि अपनी निगाह फ़ौरन झुका ले। ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसलमान औ़रत के महासिन की त़रफ़ देखे फिर अपनी निगाह झुका ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाएगा जिस की ह़लावत वोह अपने क़ल्ब में पाएगा।" (مسند احمد بن حنبل،مسند ابوامامۃ،رقم۲۲۳۴۱،ج۸،ص۲۹۹)

फिर अगर मज़कूरा शख़्स शादीशुदा हो तो फ़ौरन अपनी ज़ौजा के पास आए ताकि नज़र के मुज़िर असरात से महफ़ूज़ रह सके। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "औ़रत शैत़ान की शक्ल में आती जाती है तो जब तुम में से कोई शख़्स किसी औ़रत को देखे, तो अपनी अहलिय्या के पास जाए, येह अ़मल उस के दिल में पैदा होने वाले वस्वसों को दूर कर देगा।" (ابوداؤد،کتاب النکاح،باب مایؤمر بہ من غض البصر رقم۲۱۵۱،ج۲،ص۳۵۸)

किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ से पूछा : "मैं अपनी आंख को बद निगाही से नहीं बचा पाता, मैं किस त़रह़ इस की हिफ़ाज़त करूं ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "तुम इस बात का यक़ीन कर लो कि जब तुम किसी को बुरी नज़र से देख रहे होते हो तो ह़क़ तआ़ला तुम्हें कहीं ज़ियादा देख रहा होता है।"

(کیمیائے سعادت،ج۲،ص۸۸۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना मजमअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा ऊपर की त़रफ़ देखा तो एक छत पर मौजूद किसी औ़रत पर नज़र पड़ गई। आप

www.dawateislami.net

ने फ़ौरन निगाह झुका ली और इस क़दर पशेमान हुए कि अ़ह्द कर लिया कि "आयिन्दा कभी ऊपर न देखूंगा।" (کیمیائے سعادت ج۲،ص۸۹۳)

(2) निकाह़ करना

अगर शरई रुकावट न हो तो फ़ौरन निकाह़ कर ले, अगर रस्मो रवाज वग़ैरा आड़े आएं तो घरवालों को किसी हिक्मत से राज़ी करने की कोशिश करे। फिर भी नाकाम रहे तो रोज़ों का हुक्म है।

(3) अजनबी औ़रतों से मेल जोल न रखे

इस क़िस्म की नोकरी या कारोबार से इजतिनाब करें जिस में अजनबी औ़रतों से आमना सामना होता रहे। घर में भी भाभी हो या मुमानी या चची या कज़िन्ज़ वग़ैरा या'नी जिन से पर्दा फ़र्ज़ है उन से हरगिज़ हरगिज़ बे तकल्लुफ़ी इख़्तियार न करें कि येह आग में हाथ डालने के मुतरादिफ़ है।

ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अपने बा'द कोई ऐसा फ़ितना नहीं छोड़ा, जो औ़रतों के फ़ितने से ज़ियादा मर्दों को नुक़्सान पहुंचाने वाला हो।" (بخاری، کتاب النکاح، باب ما یتقی من شؤم المرأۃ، رقم ۵۰۹۶، ج۳، ص۴۳۱)

(4) अजनबी औ़रत के साथ तन्हाई न होने दे

किसी ना महरम औ़रत के साथ हरगिज़ तन्हाई में न रहे क्यूंकि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि "तुम में से कोई किसी (ना महरम) औ़रत के साथ हरगिज़ तन्हाई इख़्तियार न करे, क्यूंकि इन दोनों के साथ तीसरा शैत़ान होता है।"

(مسند امام احمد، مسند العشرۃ المبشرۃ بالجنۃ)

www.dawateislami.net

इमामे अहले सुन्नत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अजनबी औ़रत से ख़ल्वत ह़राम है और उस से गुफ़्तगू करना मकरूह है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, निस्फ़ आख़िर, स. 7)

औ़रत से गुफ़्तगू करने के बारे में पूछे गए सुवाल के जवाब में कुछ इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया : "तमाम मह़ारिम से औ़रत को गुफ़्तगू करना और उन्हें अपनी आवाज़ सुनवाना जाइज़ है और अगर कोई ह़ाजत हो और अन्देशए फ़ितना न हो और तन्हाई न हो तो पर्दे में रहते हुए बा'ज़ ना मह़रम से भी गुफ़्तगू जाइज़ है।"

(تسہیلا من فتاوی رضویہ، ج۱۰، نصف آخر، ص۱۶۱)

(5) अम्रदों के क़ुर्ब से बचे

ह़ज़रते ह़सन बिन ज़क्वान عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाया करते थे : "मालदारों की औलाद के साथ उठना बैठना न रखो क्यूंकि उन की सूरतें, कंवारी औ़रतों की सूरतों की मिस्ल होती हैं, चुनान्चे, वोह ब ए'तिबारे फ़ितना औ़रतों से ज़ियादा शदीद हैं।" (کتاب الکبائر، ص۶۴)

एक मरतबा ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ह़म्माम में दाख़िल हुए तो आप की नज़र वहां मौजूद एक ख़ूब सूरत लड़के पर पड़ी, आप ने लोगों से फ़रमाया : "इसे मेरे पास से दूर कर दो, इसे बाहर निकाल दो, क्यूंकि मैं औ़रत के साथ एक और ख़ूब सूरत लड़के के साथ सतरह शैत़ान गुमान करता हूं।" (کتاب الکبائر، ص۶۴)

इस सिलसिले में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का तह़रीर कर्दा रिसाला "**अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां**" पढ़ना बेह़द मुफ़ीद है। इस रिसाले में शहवत पर क़ाबू पाने के लिये वज़ाइफ़ भी दिये गए हैं।

www.dawateislami.net

शर्मगाह की हिफ़ाज़त के वाक़िआ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इन वाक़िआ़त को पढ़िये और मुलाहज़ा फ़रमाइये कि अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वालों को कैसे कैसे इन्आ़मात से नवाज़ा गया,.....

(1) बनी इसराईल का एक शख़्स निहायत इबादत गुज़ार था। वोह रात में **अल्लाह** तआ़ला की इबादत में मसरूफ़ रहता और दिन में घूम फिर कर कुछ अश्या लोगों को बेचा करता। और अक्सर अपने नफ़्स का मुहासबा करते हुए कहता : "ऐ नफ़्स ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर।" एक दिन वोह ह़स्बे मा'मूल अपने घर से रोज़ी कमाने के लिये निकला और चलते चलते एक अमीर के दरवाज़े के क़रीब पहुंचा और अपनी अश्या बेचने के लिये सदा लगाई। अमीर की बीवी ने जब उस ह़सीन शख़्स को अपने दरवाज़े के क़रीब देखा तो उस पर आ़शिक़ हो गई और उसे बहाने से महल के अन्दर बुला लिया फिर उस से कहने लगी : "ऐ ताजिर ! मेरा दिल तुम्हारी त़रफ़ माइल हो चुका है, मेरे पास बहुत माल है और ज़र्क़ बर्क़ लिबास हैं, तुम येह काम छोड़ दो मैं तुझे रेशमी लिबास और बहुत सा माल दूंगी।"

येह पेशकश सुन कर उस का नफ़्स उस औ़रत की त़रफ़ माइल होने लगा लेकिन उस ने अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ कहा : "ऐ नफ़्स ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर।" और उस औ़रत को जवाब दिया, "मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है।" वोह औ़रत कहने लगी : "तुम मेरी ख़्वाहिश पूरी किये बिग़ैर यहां से नहीं जा सकते।" उस शख़्स ने फिर कहा : "ऐ नफ़्स ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर।" और नजात की तरकीब सोचने लगा। बिल आख़िर उस ने औ़रत से कहा : "मुझे मोहलत दो

www.dawateislami.net

कि मैं वुज़ू कर के दो रक्अ़तें अदा कर लूं।" इजाज़त मिलने पर उस ने वुज़ू किया और छत पर चला गया। जहां उस ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और फिर छत से नीचे झांका तो उस की ऊंचाई बीस गज़ थी। उस ने बेबसी से आस्मान की त़रफ़ देखा और यूं अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं त़वील अ़र्से से तेरी इ़बादत में मश्ग़ूल हूं, मुझे इस आफ़त से नजात अ़त़ा फ़रमा।" येह कह कर वोह छत से कूद गया।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया : "जाओ मेरे बन्दे को ज़मीन तक पहुंचने से पहले संभाल लो, उस ने मेरे इ़ताब के ख़ौफ़ से छलांग लगाई है।" ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने निहायत तेज़ी से आ कर उस शख़्स को यूं थाम लिया जैसे कोई मां अपने बच्चे को पकड़ती है और ज़मीन पर किसी परिन्दे की त़रह़ बिठा दिया। (درۃ الناصحین، ص۳۱۳)

(2) बनी इसराईल का एक शख़्स गुनाह से बचने की कोशिश न करता था एक मरतबा एक मजबूर औ़रत उस के पास आई तो उस ने उसे साठ दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह उस के साथ ज़िना करने पर राज़ी हो जाए। जब वोह उस औ़रत पर ह़ावी होने लगा तो वोह औ़रत कांपने लगी और रो पड़ी। उस ने औ़रत से पूछा : "क्यूं रो रही हो ?" औ़रत ने जवाब दिया : "मैं ने येह काम कभी नहीं किया और आज एक ज़रूरत ने मुझे येह काम करने पर मजबूर कर दिया है।" उस ने पूछा : "क्या येह तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से कर रही हो तो मैं तुझ से ज़ियादा डरने का ह़क़दार हूं, जा मैं ने जो कुछ तुझे दिया है वोह तेरा है, ख़ुदा की क़सम ! आज के बा'द मैं कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न करूंगा।" फिर उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो गया। सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा हुवा था कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किफ़्ल की मग़फ़िरत फ़रमा दी।" (ترمذی کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۵۰۴، ج۴، ص۲۲۳)

www.dawateislami.net

(3) एक शख़्स किसी औ़रत पर फ़रेफ़्ता हो गया। जब वोह औ़रत किसी काम से क़ाफ़िले के साथ सफ़र पर रवाना हुई तो येह आदमी भी उस के पीछे पीछे चल दिया। जब जंगल में पहुंच कर सब लोग सो गए तो उस आदमी ने उस औ़रत से अपना ह़ाले दिल बयान किया। औ़रत ने उस से पूछा : "क्या सब लोग सो गए हैं?" येह दिल ही दिल में बहुत ख़ुश हुवा की शायद येह औ़रत भी मेरी त़रफ़ माइल हो गई है चुनान्चे, वोह उठा और क़ाफ़िले के गिर्द घूम कर जाइज़ा लिया तो सब लोग सो रहे थे। वापस आ कर उस ने औ़रत को बताया कि, "हां ! सब लोग सो गए हैं।" येह सुन कर वोह औ़रत कहने लगी : "अल्लाह तआ़ला के बारे में तुम क्या कहते हो, क्या वोह भी इस वक़्त सो रहा है?" मर्द ने जवाब दिया : "अल्लाह तआ़ला न सोता है, न उसे नींद आती है और न उसे ऊंघ आती है।" औ़रत ने कहा : "जो न कभी सोया और न सोएगा, और वोह हमें भी देख रहा है अगर्चे लोग नहीं देख रहे तो हमें उस से ज़ियादा डरना चाहिये।" येह बात सुन कर उस आदमी ने रब तआ़ला के ख़ौफ़ के सबब उस औ़रत को छोड़ दिया और गुनाह के इरादे से बाज़ आ गया।

जब उस शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह तआ़ला ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया?" तो उस ने जवाब दिया : "अल्लाह तआ़ला ने मुझे तर्के गुनाह और अपने ख़ौफ़ के सबब बख़्श दिया।"

(مکاشفۃ القلوب، الباب الثانی فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ص ۱۱)

(4) बनी इस्राईल में एक इ़यालदार शख़्स निहायत इ़बादत गुज़ार था। उस पर एक वक़्त ऐसा आया कि वोह अपने अहलो इ़याल समेत फ़ाक़े में मुब्तला हो गया। एक दिन उस ने मजबूर हो कर अपनी बीवी को बच्चों के लिये कुछ लाने के लिये बाहर भेजा। उस की बीवी

www.dawateislami.net

एक ताजिर के दरवाज़े पर पहुंची और उस से सुवाल किया ताकि बच्चों को खाना खिलाए। उस ताजिर ने कहा : "ठीक है मैं तुम्हारी मदद करूंगा लेकिन इस शर्त पर कि तुम अपना आप मेरे ह़वाले कर दो।" येह जवाब सुन कर वोह औ़रत ख़ामोशी से घर वापस आ गई। घर पहुंच कर उस ने देखा कि बच्चे भूक की शिद्दत से चिल्ला रहे हैं और कह रहे हैं : "ऐ अम्मी जान ! हम भूक से मरे जा रहे हैं, हमें खाने को कुछ दीजिये।" बच्चों की येह ह़ालत देख कर वोह मजबूरन दोबारा उस ताजिर के पास गई और उसे अपनी मजबूरी बताई। उस ताजिर ने पूछा : "क्या तुम्हें मेरा मुत़ालबा मन्ज़ूर है ?" उस औ़रत ने कहा : "हां !"

जब वोह दोनों तन्हाई में पहुंचे और मर्द ने अपना मक़्सद पूरा करना चाहा तो वोह औ़रत थर थर कांपने लगी, क़रीब था कि उस के जिस्म के जोड़ अलग हो जाएं। उस की येह ह़ालत देख कर ताजिर ने दरयाफ़्त किया : "येह तुझे क्या हुवा ?" औ़रत ने जवाब दिया : "मुझे अपने रब तआ़ला का ख़ौफ़ है।" येह सुन कर ताजिर ने कहा : "तुम फ़क़्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में भी **अल्लाह** तआ़ला से डरती हो, मुझे तो इस से भी ज़ियादा डरना चाहिये।" चुनान्चे, वोह गुनाह के इरादे से बाज़ आ गया और उस औ़रत की ज़रूरत पूरी कर दी। वोह औ़रत बहुत सारा माल ले कर अपने बच्चों के पास आई और वोह ख़ुश हो गए।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह़्य भेजी कि "फ़ुलां इब्ने फ़ुलां को बता दें कि मैं ने उस के तमाम गुनाह बख़्श दिये हैं।" ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام येह पैग़ाम ले कर उस आदमी के पास पहुंचे और उस से पूछा : "शायद तू ने कोई ऐसी नेकी की है जो तुझे या तेरे रब को मा'लूम है।" उस शख़्स ने सारा वाक़िआ़ आप को बता दिया तो आप ने उसे बताया कि, "**अल्लाह** तआ़ला ने तेरे तमाम गुनाहों की मग़्फ़िरत कर दी है।" (مکاشفۃ القلوب، الباب الثانی فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ص ۱۱)

www.dawateislami.net

(5) बनी इसराईल का एक आ़बिद अपने इ़बादत ख़ाने में इ़बादत किया करता था। गुमराहों का गुरौह एक त़वाइफ़ के पास पहुंचा और उस से कहा कि "तुम किसी न किसी त़रह़ इस आ़बिद को बहका दो।" चुनान्चे, वोह फ़ाह़िशा एक अंधेरी रात में जब कि बारिश बरस रही थी, उस आ़बिद के पास आई और उस को पुकारा। आ़बिद ने झांक कर देखा तो औ़रत ने कहा कि "ऐ अल्लाह के बन्दे ! मुझे अपने पास पनाह दे।" लेकिन आ़बिद ने उस की परवाह न की और नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया। वोह त़वाइफ़ उसे बारिश और अंधेरी रात याद दिला कर पनाह त़लब करती रही ह़त्ता कि आ़बिद ने रह़म खा कर उसे अन्दर बुला लिया। वोह आ़बिद से कुछ फ़ासिले पर जा कर लेट गई और उसे अपनी त़रफ़ माइल करने की कोशिश शुरूअ़ कर दी। यहां तक कि आ़बिद का दिल भी उस की त़रफ़ माइल हो गया।

लेकिन उसी लम्ह़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ ने उस के दिल में जोश मारा, आ़बिद ने ख़ुद को मुख़ात़ब कर के कहा : "वल्लाह ! ऐसा नहीं हो सकता यहां तक कि तू देख ले कि आग पर कितना सब्र कर सकता है।" फिर वोह चराग़ के पास गया और अपनी एक उंगली उस के शो'ले में रख दी, ह़त्ता कि वोह जल कर कोइला हो गई। फिर उस ने नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने की कोशिश की लेकिन उस के नफ़्स ने दोबारा फ़ाह़िशा की त़रफ़ बढ़ने का मश्वरा दिया। वोह चराग़ के पास गया और अपनी दूसरी उंगली भी जला डाली, फिर उस का नफ़्स इसी त़रह़ ख़्वाहिश करता रहा और वोह अपनी उंगलियां जलाता रहा, ह़त्ता कि उस ने अपनी सारी उंगलियां जला डालीं, औ़रत येह सारा मन्ज़र देख रही थी, चुनान्चे, ख़ौफ़ व दहशत के बाइ़स उस ने एक चीख़ मारी और मर गई। (ذم الھوی، ص۱۹۹)

(6) ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह ह़ुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि एक क़स्साब अपने पड़ोसी की लौंडी पर आ़शिक़ था। एक

www.dawateislami.net

दिन वोह लौंडी किसी काम से दूसरे गाऊं को जा रही थी, क़स्साब ने मौक़अ़ ग़नीमत जान कर उस का पीछा किया और कुछ दूर जा कर उसे पकड़ लिया। तब कनीज़ ने कहा कि "ऐ नौजवान ! मेरा दिल भी तेरी त़रफ़ माइल है लेकिन मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरती हूं।" जब उस क़स्साब ने येह सुना तो बोला : "जब तू **अल्लाह** तआ़ला से डरती है तो क्या मैं उस ज़ाते पाक से न डरूं ?" येह कह कर उस ने तौबा कर ली और वहां से पलट पड़ा। रास्ते में प्यास के मारे दम लबों पर आ गया। इत्तिफ़ाक़न उस की मुलाक़ात एक शख़्स से हो गई जो कि किसी नबी का क़ासिद था। उस मर्दे क़ासिद ने पूछा : ऐ जवान क्या ह़ाल है ?" क़स्साब ने जवाब दिया : "प्यास से निढाल हूं।" क़ासिद ने कहा कि "आओ हम दोनों मिल कर ख़ुदा से दुआ़ करें ताकि **अल्लाह** तआ़ला अब्र के फ़िरिश्ते को भेज दे और वोह शह्र पहुंचने तक हम पर अपना साया किये रखे।" नौजवान ने कहा कि "मैं ने तो ख़ुदा की कोई क़ाबिले ज़िक्र इ़बादत भी नहीं की है, मैं किस त़रह़ दुआ़ करूं ? तुम दुआ़ करो मैं आमीन कहूंगा।" उस शख़्स ने दुआ़ की, बादल का एक टुकड़ा उन के सरों पर साया फ़िगन हो गया।

जब येह दोनों रास्ता त़ै करते हुए एक दूसरे से जुदा हुए तो वोह बादल क़स्साब के सर पर आ गया और क़ासिद धूप में हो गया। क़ासिद ने कहा : "ऐ जवान ! तू ने तो कहा था कि तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुछ भी इ़बादत नहीं की, फिर येह बादल तेरे सर पर किस त़रह़ साया फ़िगन हो गया ? तू मुझे अपना ह़ाल सुना।" नौजवान ने कहा : "और तो मुझे कुछ मा'लूम नहीं लेकिन एक कनीज़ से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बात सुन कर मैं ने तौबा ज़रूर की थी।" क़ासिद बोला : "तू ने सच कहा, **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर में जो मर्तबा व दरजा ताइब (तौबा करने वाले) का है वोह किसी दूसरे का नहीं है।" (کتاب التوابین، ص۷۵)

www.dawateislami.net

आख़िरी गुज़ारिश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमें चाहिये कि न सिर्फ़ इन दो आ'ज़ा को बल्कि अपने पूरे जिस्म को इरतिकाबे गुनाह से महफ़ूज़ रखने के लिये बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करें और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से मदनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना या'नी अपने मुह़ासबे के ज़रीए कार्ड पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के मदनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा होगा।

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के लिये आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शह्र ब शह्र गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर के अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकट्ठा कीजिये। अपनी रोज़ मर्रा की दुन्यावी मसरूफ़िय्यात तर्क कर के अपने दोस्तों की सोह़बत छोड़ कर जब हम इन क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे तो इन क़ाफ़िलों में सफ़र के दौरान हमें अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी पर दियानत दाराना ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश दिल में पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इरतिकाब पर नदामत महसूस होगी, इन गुनाहों की मिलने वाली सज़ाओं का तसव्वुर कर के रौंगटे खड़े हो जाएंगे, दूसरी त़रफ़ अपनी नातुवानी व बेकसी का एह़सास दामनगीर होगा और अगर

www.dawateislami.net

दिल ज़िन्दा हुवा तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक कर रुख़्सारों पर बहने लगेंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन क़ाफ़िलों में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह्शे कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह ज़बान से दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ और ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, दुन्या की मह़ब्बत से डूबा हुवा दिल आख़िरत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

इस के इ़लावा अपने अपने शह़रों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटें।

الحمدلله رب العٰلمين

تمت بالخير

★★★★★

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

۱-ترجمہ کنزالایمان -

۲- تفسیر ات احمدیہ، مکتبہ حقانیہ، پشاور

۳- تفسیر روح المعانی، مکتبہ حقانیہ، ملتان

۴-سنن النسائی، دار الجیل، بیروت

۵-صحیح البخاری، دار الکتب العلمیۃ، بیروت

۶-صحیح مسلم، دار ابن حزم، بیروت

۷-جامع الترمذی، دار الفکر، بیروت

۸-سنن ابی دائود، دار احیاء التراث العربی، بیروت

۹- سنن ابن ماجہ، دار المعرفۃ، بیروت -

۱۰- تاریخ بغداد، دار الکتب العلمیہ، بیروت

۱۱- المسند للامام احمد بن حنبل، دار الفکر، بیروت -

۱۲- المؤطا للامام مالک، دار المعرفۃ، بیروت -

۱۳-شعب الایمان، دارک الکتب العلمیۃ، بیروت

۱۴- الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، دار الکتب العلمیۃ، بیروت -

۱۵-مشکوۃ المصابیح، دار الفکر، بیروت

۱۶-الجامع الصغیر، دار الکتب العلمیۃ، بیروت -

۱۷- المستدرک، دار المعرفۃ، بیروت -

۱۸ مسند ابی یعلی، دار الکتب العلمیۃ، بیروت

۱۹-کنز العمال، دار الکتب العلمیۃ، بیروت

۲۰- مجمع الزوائد، دار الفکر، بیروت -

www.dawateislami.net

۲۱-الترغیب والترھیب ، دار الکتب العلمیة ،بیروت-

۲۲-فردوس الاخبار ، دار الفکر ، بیروت -

۲۳فتح الباری، دار الکتب ، بیروت

۲۴-فیض القدیر شرح جامع الصغیر ، دار الکتب العلمیة ،بیروت -

۲۵-المعجم الاوسط ، دار الفکر ، عمان-

۲۶-المعجم الکبیر ،دار احیاء التراث العربی ، بیروت-

۲۷-البحر الرائق - مکتبہ رشیدیہ ، کوئٹہ-

۲۸درمختار مع الرد المحتار ،دار المعرفة ، بیروت-

۲۹-فتاوی الرضویة ، رضا فائونڈیشن ، جامعہ نظامیہ لاھور -

۳۰- بہار شریعت ، مکتبہ رضویہ ، کراچی-

۳۱-احیاء العلوم الدین ، دار صادر ،بیروت

۳۲-اتحاف السادة المتقین، دار الکتب العلمیة ، بیروت -

۳۳-مکاشفة القلوب ، دار الکتب العلمیة ،بیروت-

۳۴-کیمیاء سعادت ، انتشارات گنجینہ ، تہران-

۳۵-المستطرف فی کل فن مستظرف ، دار الفکر ، بیروت -

۳۶-ذم الھوی ، مکتبہ الکتاب والسنة ، پشاور

۳۷-کتاب الکبائر ، اشاعت اسلام ، پشاور

۳۸صدیقة الندیة، دار العامرہ ، مصر-

۳۹-درة الناصحین ، دار الفکر ، بیروت -

۴۰-غیبت کی تباہ کاریاں ، مکتبة المدینہ ،کراچی-

۴۱-امرد پسندی کی تباہ کاریاں ، مکتبة المدینہ ،کراچی-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (उर्दू कुतुब)

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (زَادُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़तो त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

(अ़रबी कुतुब)

17, 18, 19, 20,

21.....جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)

(कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़ह़ात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74) 24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

www.dawateislami.net

25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़हात : 93)
26..... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِي (कुल सफ़हात : 46)
27..... تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़हात : 77)
28..... اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़हात : 70)
29..... اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़हात : 60)
30..... जहुल मुमतार जिल्द 6, 7 (कुल सफ़हात : 722, 723)

शो' बए तराजिमे कुतुब

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़हात : 896)
02.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرِفِيْ حُكْمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر) (कुल सफ़हात : 112)
03.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा.....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْشِ فِي الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 28)
04.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़हात : 142)
05.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظُ فِي الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़हात : 54)
06.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِيْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़हात : 743)
07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَامِ اَعْظَمْ عَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़हात : 46)
08.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرُ عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 853)
09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرُ عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 1012)
10.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرِ عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़हात : 144)
11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدُ وَقِصَرُ الْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)
12.....राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِيقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़हात : 102)
13.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम हिस्सए अव्वल) (कुल सफ़हात : 412)
14.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम, हिस्सए दुवुम)(कुल सफ़हात : 413)
15.....इह्याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़हात : 641)
16....हिकायतें और नसीहतें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़हात : 649)
17....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़हात : 122)
18....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَل) (कुल सफ़हात : 122)
19....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 102)
20....आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع) (कुल सफ़हात : 300)

www.dawateislami.net

21....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़हात : 63)

22....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़हात : 36)

23....बेटे को नसीहत (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़हात : 64)

24....اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر (कुल सफ़हात : 148)

25....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़हात : 98)

26....इस्लाहे आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِيْقَةُالنَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़हात : 866)

27....आशिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِی طَلَبِ الْحَدِيْث) (कुल सफ़हात : 105)

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احیاء علوم الدین) (कुल सफ़हात : 1124)

29..... अल्लाह वालों की बातें जिल्द 2 (कुल सफ़हात : 630)

30..... क़ूतुल क़ुलूब जिल्द अव्वल (कुल सफ़हात : 826)

शो'बए दर्सी क़ुतुब

01....مراح الارواح مع حاشیةضیاء الاصباح (कुल सफ़हात : 241)

02....الاربعین النوویة فی الأحادیث النبویة (कुल सफ़हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح دیوان الحماسه (कुल सफ़हात : 325)

04....اصول الشاشی مع احسن الحواشی (कुल सफ़हात : 299)

05....نورالایضاح مع حاشیةالنورالضیاء (कुल सफ़हात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشیةجمع الفرائد (कुल सफ़हात : 384)

07....الفرح الکامل علی شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 158)

08....عنایة النحو فی شرح هدایة النحو (कुल सफ़हात : 280)

09....صرف بهائی مع حاشیة صرف بنائی (कुल सफ़हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़हात : 241)

11....مقدمةالشیخ مع التحفةالمرضیة (कुल सफ़हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفکر (कुल सफ़हात : 175)

13....نحو میرمع حاشیة نحو منیر (कुल सफ़हात : 203)

14....تلخیص اصول الشاشی (कुल सफ़हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़हात : 288)

16....نصاب اصولِ حدیث (कुल सफ़हात : 95)

17....نصاب التجوید (कुल सफ़हात : 79)

www.dawateislami.net

18....المحادثة العربية (कुल सफ़हात : 101) 19....تعريفاتِ نحوية (कुल सफ़हात : 45)

20....خاصيات ابواب (कुल सफ़हात : 141) 21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343) 23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)

24....انوار الحديث (कुल सफ़हात : 466) 25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)

26....تفسير الجلالين مع حاشية انوار الحرمين (कुल सफ़हात : 364)

शो'बए तख़रीज

01....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़हात : 1360)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1304)

04....बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)

05....अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)

06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 244)

07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात 312)

08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142) 09....अच्छे माह़ोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)

10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679) 11....इल्मुल कुरआन (कुल सफ़हात : 244)

12....सवानेह़े करबला (कुल सफ़हात : 192) 13....अरबईने हनफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)

14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64) 15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)

16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170) 17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

18 ता 24....फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से) 25.... ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)

26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249) 27....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़हात : 207)

28....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़हात : 346) 29....अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़हात : 78)

30....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़हात : 875) 31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़हात : 133)

32....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ (कुल सफ़हात : 59)

33....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)

34....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)

35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)

36...फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआ़ए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़हात : 20)

www.dawateislami.net

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

01....सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)

02....मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)

03....इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, हिस्सा दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)

04....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)

05....दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

06....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)

07....कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)

08....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

09....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत (कुल सफ़हात : 48)

10....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)

11....पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)

12....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)

13....दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

14....गुमशुदा दूल्हा (कुल सफ़हात : 33)

15....मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)

16....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)

17....मैं ह़यादार कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

18....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)

19....मुख़ालफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)

20....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)

21....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (1) (कुल सफ़हात : 49)

22....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (2) (कुल सफ़हात : 48)

23....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़हात : 86)

www.dawateislami.net

24...तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त 4) (कुल सफ़हात : 49)
25....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त 5) (कुल सफ़हात : 102)
26...हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त 6) (कुल सफ़हात : 47)
27....मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
28....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
29....अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
30....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32) 31....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
32....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32) 33....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
34....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
35....सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
36....क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
37....फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
38....ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़हात : 32) 39....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
40....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
41....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
42....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
43....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
44....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32) 45....आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
46....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32) 47....बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
48....इग़्वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32) 49....मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
50....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
51....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
52....ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
53....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
54...मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ? (कुल सफ़हात : 32)
55....चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133047

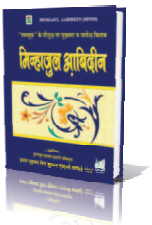

MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net